

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1992

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1992

Contents

28 February 1992 Vol. 5 No. 1

31 March 1992 Vol. 5 No. 2

31 May 1992 Vol. 5 No. 3

30 June 1992 Vol. 5 No. 4

31 August 1992 Vol. 5 No. 5

30 September 1992 Vol. 5 No. 6

30 November 1992 Vol. 5 No. 7

31 December 1992 Vol. 5 No. 8

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

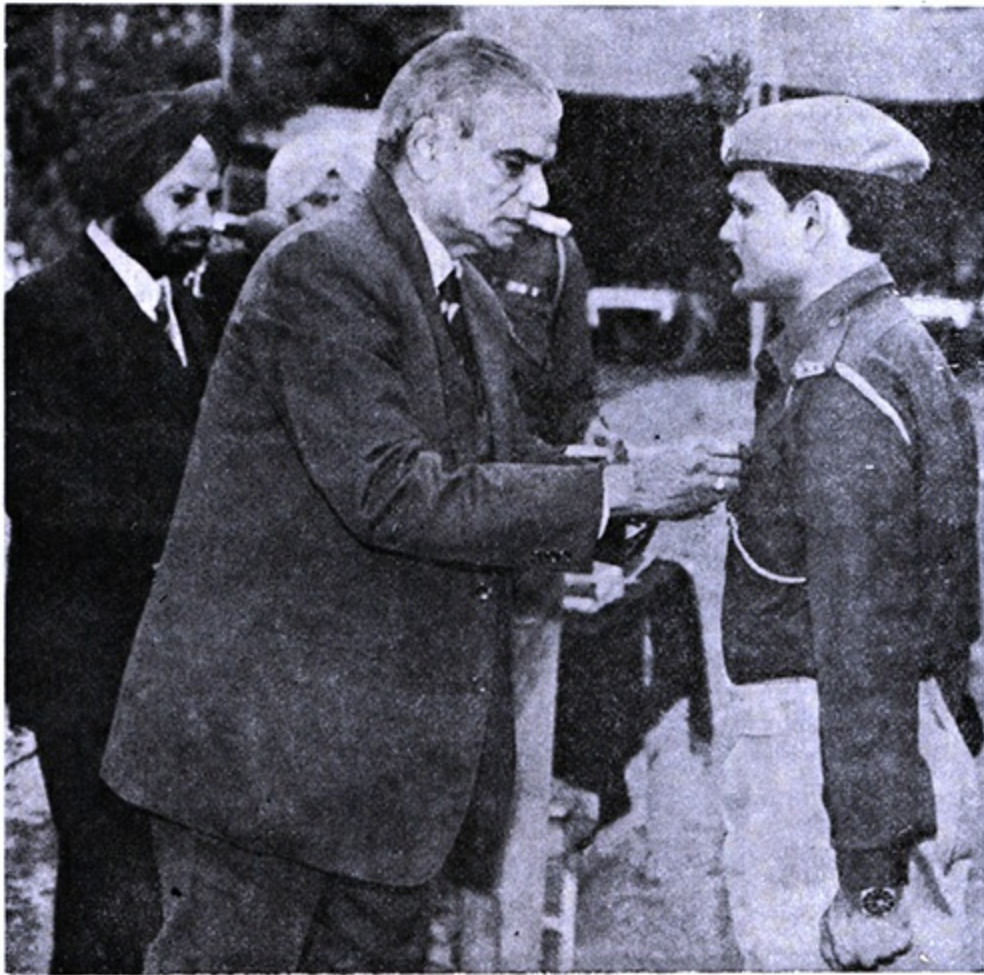
खंड—V

अंक—1

मूल्य—1.95 रुपये

29 फरवरी, 1992

10 फाल्गुन, शक संवत् 1913



नायक ड्राइवर के० वी० चंद्रन को प्रधानमंत्री का जीवन रक्षा पदक प्रदान करते हुए महानिदेशक डा० सुब्रह्मण्यन ।

छाया—डी० एन० तिवारी

सम्पादकीय

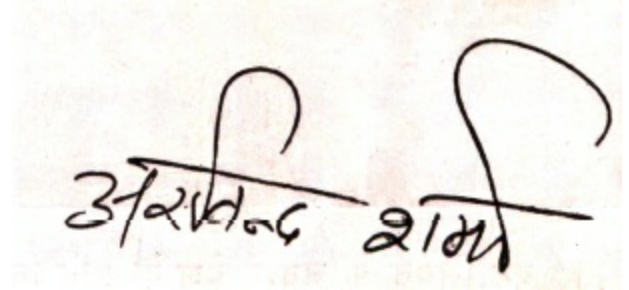
पंजाब में लोकतांत्रिक सरकार की शांतिपूर्ण ढंग से स्थापना सुरक्षा बलों की एक बहुत बड़ी सफलता है। आतंकवादग्रस्त पंजाब में चुनावों के दौरान शांतिपूर्ण मतदान को ले कर जितनी अधिक आशंकाए व्यक्त की जा रही थीं, सुरक्षा बलों की मुस्तैदी ने उन्हें निर्मूल साबित कर दिया। सुरक्षा बलों के जवानों की सजग, चौकस और मुस्तैद उपस्थिति ने जहां आतंकवादियों को मतदान केन्द्रों से दूर रखकर शांतिपूर्ण मतदान के लिए आधार तैयार किया, वहीं मतदाताओं के मन से भी वह आतंकवादियों का भय निकालने में सफल रहे। आतंकवादियों की निरंतर धमकियों के बावजूद मतदाता अपने अपने घरों से बाहर निकले और एक लोकतांत्रिक सरकार के लिए अपना मत दिया, निस्संदेह यह सुरक्षा बलों की एक बड़ी उपलब्धि है। पंजाब में सुरक्षा बलों की इस सफलता के हम बराबर के भागीदार हैं।

संविधान के दायरे के अन्तर्गत लोकतांत्रिक ढंग से निकाला गया किसी भी समस्या का समाधान सर्वमान्य हो सकता है। पंजाब की लोकतांत्रिक सरकार पंजाब के भटके युवकों को राह पर लाने और पंजाब को फिर वही पुराना खुशहाल, लहलहाता, गिद्धों और भंगड़ों के सुरों से गूंजता माहौल प्रदान करने में सफल होगी, ऐसी हमारी कामना है। पंजाब की हरियाली में लहू के लाल छिंटे मार रहा आतंकवाद जड़ से समाप्त हो, खेतों खलिहानों में सद्भाव के गीत फूटें, पंजाब की नई सरकार से देश की यही अपेक्षा हैं। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमारे जवान हर पल, हर क्षण कोई भी बलिदान देने को तैयार हैं। अपनी जिम्मेदारी से हम पूरी तरह अवगत हैं।

एक और जिम्मेदारी पिछले दिनों सरकार ने के. रि. पु. बल पर डाली है। देश के कुछ हिस्सों में पिछले कुछ वर्षों से साम्प्रदायिकता के सांप ने बड़ी तेजी से अपना फन फैलाया है। इसका विष समाज की प्राणदायिनी धमनियों को दूषित कर रहा है। सद्भाव-जोकि किसी भी समाज के शांतिपूर्ण अस्तित्व का पहला अंग है, इससे प्रभावित हो रहा है। प्रायः साम्प्रदायिक दंगों के समय यह देखा गया है कि इन से निबटने के लिए तैनात सुरक्षा बल कुछ विशेष परिस्थितियों में स्वयं को असहाय पाते हैं। क्योंकि इन में अपराधी कहीं उनके सामने नहीं होता, अपितु भावावेश में भटकी आक्रोश में उमड़ती निर्दोष जनता उनके सामने खड़ी होती है। या फिर तूफान के गुजर जाने के बाद अपनी बरबादियों के ढेर पर बेबश बैठी मानवता किसी राहत और बचाव के फरिश्ते की आस में सुरक्षा बलों की ओर निहारती है। ऐसी ही कुछ परिस्थितियों में समुचित सुविधाओं एवं प्रशिक्षण के अभाव में सुरक्षाकर्मी स्वयं को असहाय पाते हैं।

इन्हीं सब तथ्यों को दृष्टि में रखकर सरकार ने के० रि० पु० बल के तत्वाधान में रेपिड एक्शन फोर्स की स्थापना की है। यह फोर्स मुख्यतः साम्प्रदायिक तनाव की स्थितियों के दौरान तैनात होगी तथा उस दौरान पैदा होने वाली समस्त परिस्थितियों

से निबटने का इसे समुचित प्राशेक्षण दिया जाएगा । यह बल एक सुरक्षा बल होने के साथ साथ बचाव और राहत कार्यों में भी परांगत होगा । रेपिड एक्शन फोर्स सही मायनों में अपनी तैनाती के दौरान अशांत माहौल में 'शांतिदूत' साबित होगा, इसकी हमें पूरी आशा है ।

A handwritten signature in black ink on a light-colored background. The signature is written in Devanagari script and appears to be 'अ. न. शर्मा' (A. N. Sharma).

(अ० ना० शर्मा)

नए महानिदेशक श्री डी० पी० एन० सिंह



श्री डी. पी. एन. सिंह



महानिदेशक पद भार संभालते हुए श्री डी. पी. एन. सिंह

श्री देवेत्री प्रसाद नारायण सिंह ने के. रि. पु. बल के महानिदेशक पद का अतिरिक्त पदभार 31 जनवरी, 1992 को संभाल लिया। भारतीय पुलिस सेवा के 1957 बैच तथा राजस्थान काडर के श्री सिंह मुजफ्फरपुर, बिहार के रहने वाले हैं।

विगत के उन के मुख्य पदधारों में सहायक पुलिस अधीक्षक कोटा, जयपुर के बैरथ जिले के खंड विकास अधिकारी, राजस्थान आर्म्ड कांस्टेबलरी की आठवीं बटालियन के उप-कमांडेंट, बांसवारा जिले के पुलिस अधीक्षक, राजस्थान के राज्यपाल के ए. डी. सी., एस. पी., एंटी क्रप्शन डिपार्टमेंट, झालावाड के एस. पी., किशनगढ़ पुलिस ट्रेनिंग स्कूल के प्रिंसिपल तथा पांच साल तक सी. बी. आई. का कार्यकाल शामिल हैं। प्रतिनियुक्ति से वापस आने पर आप राजस्थान रोड़वेज के सतर्कता एवं सुरक्षा विभाग में उप-महानिरीक्षक उदयपुर, पुलिस मुख्यालय तथा एंटी क्रप्शन विभाग में भी रहे। आप सीमा सुरक्षा बल में महानिरीक्षक परिचालन भी रहे। 1988 में आप राजस्थान में महानिदेशक (कारावास) पद पर वापस लौटे। वर्तमान में आप 16 फरवरी, 1991 से ब्यूरो आफ पुलिस रिसर्च एन्ड डेवलपमेंट में महानिदेशक पद पर नियुक्त हैं।

श्री सिंह की मुख्य रुचियां खेल तथा सुगम संगीत हैं। स्कूल स्तर पर श्री सिंह हाकी तथा मुक्केबाजी के खिलाड़ी रहे हैं। आपको विशिष्ट सेवाओं के लिए 1978 में तथा 1985 में सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदकों से सम्मानित किया जा चुका है।

दो कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

भारत के राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटारमन ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 4 बटालियन के कमांडेंट आर. के. सिंह एवं 49 बटालियन के कांस्टेबल बशीर अहमद को शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है।

इन कार्मिकों को यह सम्मान पंजाब में आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए दिखाई गई उत्कृष्ट वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्य परायणता के लिए दिया गया है।

8 सितम्बर, 1989 को खूंखार आतंकवादी सुखमिंदर सिंह के बारे में सूचना मिलने पर चार बटालियन के कमांडेंट श्री आर. के. सिंह ने अपने दल के साथ फिरोजपुर जिले के झंडूवाला गांव में एक फार्म हाऊस को घेर लिया और यहां पर पर उनके निर्देशन में लगभग 6 घंटे तक चली मुठभेड़ में आठ आतंकवादी मारे गए, जिन में आतंकवादी सुखमिंदर सिंह भी शामिल था जिसके सिर पर 40,000 रुपये का इनाम था। साथ ही साथ इस मुठभेड़ में भारी मात्रा में शस्त्र और गोला बारूद बरामद दिया गया।

एक अन्य मुठभेड़ में 14 जून, 1988 को 49 बटालियन के कांस्टेबल बशीर अहमद ने अपनी जान की परवाह न करते हुए उस समय एक आतंकवादी को मार गिराया जब कि वह स्वर्ण मंदिर परिसर में भारी भीड़ के बीच बल के एक अन्य जवान पर अपनी तलवार से वार करने जा रहा था। इस मुठभेड़ में एक और आतंकवादी भी मारा गया।

डा० सुब्रह्मण्यन को बल से विदाई



डा० सुब्रह्मण्यन को फूल भेंट करते हुए अपर महानिदेशक श्री सी० एस० द्विवेदी
पद्म श्री डा. एस. सुब्रह्मण्यन 31 जनवरी, 1992 को महा निदेशक पद से सेवा
निवृत्त हो गए।

इस मौके पर उन्हें गार्ड आफ ऑनर दिया गया। बल के अधिकारियों एवं जवानों
ने उन्हें भावभीनी विदाई दी।

1958 बैच के आंध्र प्रदेश काडर के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी पद्म श्री
डा० एस० सुब्रह्मण्यन अपने लम्बे सेवाकाल में, नागरिक पुलिस अकादमी में कई
महत्वपूर्ण पदों पर रहे। प्रधान मंत्री की सुरक्षा से संबंधित स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप के
वह संस्थापक निदेशक भी रहे। वह राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के महानिदेशक भी थे।
उन्होंने जर्मनी, बोन में भारतीय दूतावास में एक राजनयिक दायित्व का वहन भी
किया। एक जाने माने शिक्षाविद् डा० सुब्रह्मण्यन को गणतंत्र दिवस 1986 के अवसर
पर पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

26 कार्मिकों को गणतंत्र दिवस सम्मान

भारत के राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटारमन ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर केन्द्रीय
रिजर्व पुलिस बल के 26 कार्मिकों को पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। बल के
तीन कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए तथा 23 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के
लिए पदक प्रदान किया गया है।

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

विशेष सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्राप्त करने वाले कामैक—आंतारेक सुरक्षा अकादमी (माउंट आबू) के उप निदेशक के. एस. माथुर, ग्रुप केन्द्र—2 अजमेर के अपर उप महानिरीक्षक बी. डी. सहगल तथा 65 बटालियन के डिप्टी कमांडेंट ओंकार सिंह ।

सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

सराहनीय सेवाओं के लिए पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं—कमांडेंट नरेन्द्रपाल (105 बटा.) आर. जगदीश चन्द्रन (डी. आई. जी. हैदराबाद के स्टाफ अधिकारी) के. एस. राधाकृष्णन नायर (सहायक निदेशक दक्षिणी सेक्टर) एस. एस. भगल (24 बटालियन), जे. एस. ढिल्लन सहायक निदेशक, परिचालन, पंजाब), बी. परसू रमन (सहायक निदेशक, एस. एस. बी.), आर. एस. डी. डोगरा (एक बटा.) और पी. एस. चौधरी (102), द्वितीय कमान अधिकारी डी. सी. पाठक (38 बटा.), डिप्टी कमांडेंट मदन सिंह डोगरा (ग्रुप केन्द्र बनतालाब), सहायक कमांडेंट अमीलाल यादव (78 बटा.) डिप्टी कमांडेंट सूरतसिंह (5 सिगनल बटा.), सूबेदार मेजर दरवान सिंह बिष्ट (पटना रेंज), पी. के. पटनायक (स्पेशल सेक्टर), इन्स्पेक्टर जी. सी. शर्मा (9 बटा.) सब इन्स्पेक्टर गोपीराम (26 बटा.) मोहन लाल (6 बटा.), पी.डी. खंडूरी (12 बटालियन), नत्थू राम (28 बटालियन). पी. अब्दुल रजाक, (86 बटा.), हैड कांस्टेबल/बढ़ई प्रीतम सिंह (31 बटा.) हैड कांस्टेबल/आर्मरर दूध नाथ (84 बटा.) तथा वाटर कैरियर रामदेव (8 बटा.) ।

बहादुर का सम्मान और खिलाड़ियों को पुरस्कार



बल के कुछ महत्वपूर्ण खिलाड़ियों के साथ महानिदेशक डा० एस० सुब्रह्मण्यन

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा० एस० सुब्रह्मण्यन ने 28 जनवरी, 1992 को नई दिल्ली स्थित 25 बटालियन स्थल पर आयोजित एक आकर्षक समारोह में 70 बटालियन के नायक ड्राइवर के. वी. चन्द्रन को प्रधान मंत्री का जीवन रक्षा पदक प्रदान किया। महानिदेशक महोदय ने इस अवसर पर गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने वाली बल की टुकड़ियों तथा प्रमुख खिलाड़ियों को सम्मानित भी किया।

नायक ड्राइवर चन्द्रन 5 अक्टूबर, 1990 को जब कि वह राष्ट्रीय सुरक्षा गारद में प्रतियुक्ति पर थे, तब उन्होंने एन. एस. जी. के तत्कालीन महानिरीक्षक श्री आर. के. वढेरा तथा उनके रिश्तेदारों को उस समय अकेले बचा लिया, जब कि पंचशील पार्क, नई दिल्ली के एक नर्सिंग होम में एक विस्फोट हो गया। यहां श्री वढेरा का इलाज चल रहा था तथा नायक ड्राइवर चन्द्रन वहां उन्हें कुछ जरूरी डाक देने गए थे।

महानिदेशक महोदय ने के. रि. पु. बल की तैराकी टीम को 10,000 रुपये तथा वाटरपोलो टीम को 6,000 रुपए का पुरुस्कार 1991 के अखिल भारतीय पुलिस खेलों में अपनी-अपनी चैम्पियन शिप बनाए रखने के लिए दिया। यह पुरुस्कार बल की तैराकी टीम के मैनेजर कम कोच सहायक कमांडेंट वी. वी. पोनाप्पन ने ग्रहण किये। टीम पुरुस्कारों के अतिरिक्त इन प्रतिस्पर्द्धाओं में व्यक्तिगत प्रदर्शन के लिए इंस्पेक्टर प्रेमजीत सिंह को 2,500 रुपये, इंस्पेक्टर एस. राधाकृष्णन को 1,500 तथा सहायक कमांडेंट खजान सिंह को 1000 रुपये प्रदान किए गए।

बल की शूटिंग टीम को भी आल इंडिया पुलिस ड्यूटी मीट-1991 में उस के प्रदर्शन के लिए तमिल नाडु के मुख्य मंत्री द्वारा प्रदान किए गए 5,000 रुपये महानिदेशक महोदय ने भेंट किए। बल की शूटिंग टीम के मैनेजर कम कोच

कमांडेंट टी. एस. ढिल्लन ने टीम को और से यह सम्मान ग्रहण किया ।

डा० सुब्रह्मण्यन ने 43 वें गणतंत्र दिवस की परेड में भाग लेने वाली बल की टुकड़ियों के सदस्यों को प्रशंसा पत्र भी भेंट किए ।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बन जोखिम निधि से माह जनवरी, 1992 में मृत्यु के 25 मामलों में 8,75,000 रुपए देने स्वीकृति किए गए । इनमें प्रति मामला 10,000 रुपए की कल्याण निधि एवं सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है ।

इसी प्रकार अक्षमता के पाँच मामलों में 75,000 रुपए देने स्वीकृति किए गए ।

गणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकड़ियां



गणतंत्र दिवस परेड के अवसर पर राजपथ से गुजरती हुयी बल की महिला टुकड़ी ।

भारी रूप से व्यस्त होने के बावजूद के. रि. पु. बल की तीन टुकड़ियों ने इस बार की गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया । परेड में बल की पहली टुकड़ी महिला टुकड़ी थी, जिस का नेतृत्व सहायक कमांडेंट एनी अब्राहम ने किया । इस टुकड़ी में कुल 144 महिला अधीनस्थ अधिकारी, अवर अधिकारी तथा कांस्टेबल शामिल थीं । इस टुकड़ी के पीछे 105 सदस्यों वाला बल का बैंड था। जिसका नेतृत्व इन्स्पेक्टर पी. एस. थापा कर रहे थे । श्री थापा गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने वाले सबसे पुराने बैंड कमांडरों में से एक हैं ।

बैंड के पीछे बल की 144 सदस्यों वाली पुरुष टुकड़ी थी, जिसका नेतृत्व सहायक

कमांडेंट एम. के. दूबे कर रहे थे। इस टुकड़ी के सभी जवानों का औसत कद 6 फुट था।

अंगोला कमीजों तथा खाकी पैंटों में सज्जित महिला तथा पुरुष टुकड़ी के सभी जवानों के हाथों में सेल्फ लोडिंग रायफलें थीं। जबकि इन टुकड़ियों के कमांडर अपने हाथों में चमचमाती हुयी तलवारें थामे थे। पुरुष जवानों की गहरे नीले रंग की पगड़ियों पर आसमानी रंग का तुर्रा लहरा रहा था, जिस पर सुनहरी रंग की झालर दर्शकों का मन मोह रही थी। जबकि महिला टुकड़ी की सदस्य गहरे नीले रंग की कलगी वाली आसमानी रंग की बैरेट कैप पहने थीं।

परेड के दौरान के. रि. पु. बल का बैंड सलामी मंच के आगे से “सारे जहाँ से अच्छा” की धुन बजाता हुआ गुजरा। महिला टुकड़ी की कमांडर 165 से. मी. कद की स्नातकोत्तर युवा अधिकारी एनी अब्राहम खेलों में विशेष रूचि रखती हैं तथा 1985 में वह अंतर विश्वविद्यालय स्तर पर बास्केटबाल प्रतियोगिताओं में अपने महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं, साथ ही 1986 में वह सीनियर नेशनल क्रिकेट टूर्नामेंट में मध्य प्रदेश का भी प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं।

बल की बैंड टुकड़ी के कमांडर पी. एस. थापा गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने की अपनी रजत जयंती पूरी कर चुके हैं। सेना से सेवा निवृत्त होने के बाद उन्होंने के. रि. पु. बल बैंड की कमान संभाली तथा तभी से वह बल के बैंड के स्तर को बहुत ऊंचा उठाए हुए हैं।

पुरुष टुकड़ी के कमांडर मनोज कुमार दुबे प्राणीशास्त्र में स्नातकोत्तर हैं और वर्तमान में पट्टी अमृतसर स्थित 41वीं बटालियन में नियुक्त हैं। श्री दुबे के नेतृत्व में बल की इस टुकड़ी को इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में पुलिस बलों में सर्वश्रेष्ठ टुकड़ी घोषित किया गया।

आश्रिताओं को अनुदान



अनुदान प्राप्त करने वाली आश्रिताओं के साथ महानिदेशक डा० सुब्रह्मण्यन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा० सुब्रह्मण्यन ने 7 जनवरी, 1992 को नई दिल्ली, रविंद्र रंगशाला स्थित के०रि०पु० बल की 40वीं बटालियन स्थल पर आयोजित एक भावभीने समारोह में कर्तव्य पर मारे गए बल के तीन कार्मिकों की आश्रिताओं को अनुदान राशि के चेक भेंट किए।

71 बटालियन के इन्सपेक्टर राम स्वरूप 22 अप्रैल, 1991 को पंजाब के फरीदकोट जिले में आतंकवादियों का सामना करते हुए शहीद हुए। पंजाब सरकार ने उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इसवंती देवी को दो लाख रुपए की अनुदान राशि प्रदान की है।

75 बटालियन के सिपाही ड्राइवर परवीन भाई 7 अगस्त, 1991 को पंजाब में तरनतारन जिले के राधा स्वामी डेरा पर अपनी टुकड़ी साथ के पेट्रोलिंग ड्यूटी पर थे, जबकि उनकी जीप आतंकवादियों द्वारा बिछाई गई सुरंग के कारण टुकड़े-टुकड़े हो गई, और इस हादसे में कांस्टेबल परवीन भाई समेत जीप में सवार सभी लोग मारे गए। पंजाब सरकार ने कांस्टेबल परवीन भाई की धर्मपत्नी श्रीमती भगवती देवी को दो लाख रुपए की यह अनुदान राशि भेंट की है।

13 बटालियन के सिपाही राजकुमार 15 अक्टूबर 1990 को अपनी कम्पनी की एक टुकड़ी के साथ श्रीनगर के डल लेक क्षेत्र में गश्त ड्यूटी पर थे, जबकि उनकी टुकड़ी पर आतंकवादियों ने हमला किया। इस मुठभेड़ में सिपाही राजकुमार को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

जम्मू कश्मीर सरकार ने कांस्टेबल राजकुमार को धमपत्ती श्रोमती उमैला देवी को 1.25 लाख रुपए की यह अनुदान राशि भेंट की है।

इस मौके पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बल के महानिदेशक डा० एस० सुब्रह्मण्यन महोदय ने शहीद हुए कार्मिकों की आश्रिताओं को बल की ओर से हर संभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन भी दिया।

रेपिड एक्शन फोर्स

अधिकारियों के लिए विशेष कोर्स



उद्घाटन समारोह के अवसर पर बोलते हुए उपकुलपति श्री कुलंदै स्वामी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के तत्वाधान में साम्प्रदायिक दंगों से निबटने तथा इन से प्रभावित जन मानस को राहत पहुंचाने के लिए गठित किए गए रेपिड एक्शन फोर्स के अधिकारियों के लिए आयोजित किए गए एक ओरियंटेशन प्रोग्राम का उद्घाटन 12 फरवरी, 1992 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति श्री कुलंदै

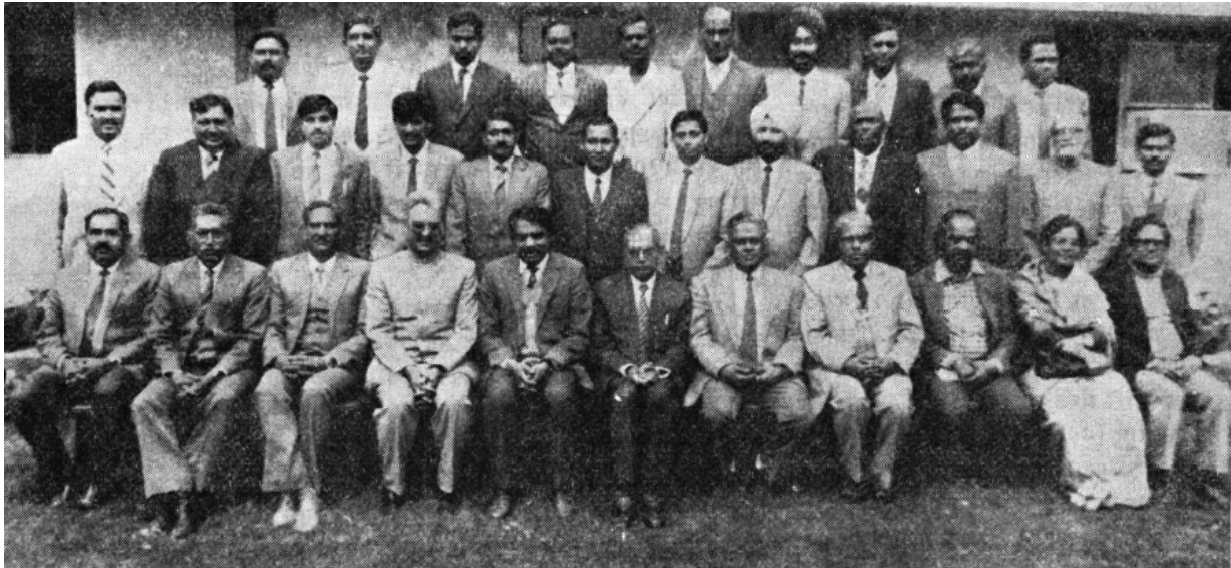
स्वामी ने विश्वविद्यालय पारेसर, नई दिल्ली में किया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा “समकालीन सामाजिक स्थितियां एवं जागरूकता” विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य रेपिड एक्शन फोर्स के अधिकारियों को उनके कार्य क्षेत्र की जटिलता, दंगों के समय जन मानस के मनोविज्ञान एवं उन की पृष्ठभूमि की जानकारी देना था।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान स्कूल द्वारा चलाए जाने वाले इस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विश्वविद्यालय के उप कुलपति ने विषय की जटिलता, उसके स्वरूप, पृष्ठभूमि, विस्तार तथा उस के मनोविज्ञान इत्यादि से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले अधिकारियों के लिए बनाए गए पाठ्यक्रम में भारतीय समाज की प्रकृति, उस पर अंग्रेजी राज का प्रभाव तथा इस की समकालीन वास्तविकताएं, भारतीय संविधान—राज्य और समाज, विभिन्नता में एकता (विडियो), भारतीय संविधान सामाजिक समानता का आधार, भारत में साम्प्रदायिकता की प्रकृति, साम्प्रदायिक दंगों का उद्भव, हिंदू, सिख मुस्लिम समाज की साम्प्रदायिक मान्यताएं, साम्प्रदायिक दंगों तथा हिंसा से निबटने के लिए पुलिस की तैयारी, राज्य का कानून एवं साम्प्रदायिकता, साम्प्रदायिक दंगों के दौरान राहत आदि विषयों के साथ-साथ सामूहिक वार्तालाप एवं विषय पर आधारित वीडियो फिल्मों का प्रदर्शन भी शामिल है।

इस अवसर पर के. रि. पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह सहित बल के कई वरिष्ठ अधिकारी एवं शिक्षाविद् उपस्थित थे। रेपिड एक्शन फोर्स के विषय में जानकारी देते हुए बल के उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह ने बताया कि श्री डी.डी. गुप्ता महानिरीक्षक के नेतृत्व में गठित 10 बटालियन वाली इस फोर्स की मानव क्षमता लगभग 13,000 है। इस के सदस्यों की गतिशीलता एवं कार्यप्रकृति को दृष्टि में रखते हुए इन्हे अत्याधुनिक सुविधाएं एवं उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं। इसका उपयोग मुख्यतः साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए किया जायेगा। इस बल में महिलाओं को भी आवश्यक अनुपात में प्रतिनिधित्व दिया गया है।



कोर्स में भाग लेने वाले अधिकारी महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह, उपकुलपति श्री कुलंदै स्वामी एवं अन्य पाठ्यक्रम अधिकारियों के साथ ।

साम्प्रदायिक दंगों से निबटने के लिए इस बल को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाएगा । उन्हें प्राथमिक उपचार तथा अग्निशमन के उपायों से भलीभांति अवगत कराया जाएगा ।

भीड़ तथा जनता से सीधा सामना होने पर उससे निबटने के मनोवैज्ञानिक तरीकों का इसे प्रशिक्षण दिया जाएगा ।

इस फोर्स के सदस्यों का चयन भलीभांति मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षणों के बाद किया गया है ।

यह कोर्स 20 फरवरी, 1992 को समाप्त हुआ । इस कार्यक्रम का समापन बल के महानिदेशक श्री डी०पी०एन० सिंह तथा विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सी० कुलंदै स्वामी के उद्बोधन के साथ हुआ । इस मौके पर बोलते हुए श्री डी०पी०एन० सिंह ने कहा कि हालांकि पुलिस कर्मियों को सीधे व्यावहारिक रूप से कार्य करने वाला व्यक्ति माना जाता है मगर पुलिस वाले भी बिना किसी सैद्धांतिक आधार के कार्य नहीं कर पाते, बल्कि उनके कार्यों का एक सैद्धांतिक आधार भी होता है, भले ही वे उस सैद्धांतिक आधार से सीधे अवगत हों या नहीं । शिक्षाविद् और बुद्धिजीवी देश की ज्वलंत समस्याओं से सीधे जूझ रहे पुलिस कर्मियों को इस सैद्धांतिक आधार से न केवल अवगत करा सकते हैं, अपितु इसके व्यवहारिक पहलुओं के प्रति उन्हें सजग और सचेत भी कर सकते हैं । इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सी० कुलंदै स्वामी ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि पुलिस कर्मियों को समस्या से निबटने के लिए उस समय बुलाया जाता है, जबकि वह विकृत हो चुकी होती है । उन्हें समस्या के प्राथमिक एवं समग्र पहलुओं से परिचित नहीं कराया जाता । रेपिड एक्शन फोर्स के अधिकारियों के साथ यह प्रयास पहली बार किया गया है और वह इसकी सफलता से आश्वस्त हैं ।

इस मौके पर उन्होंने “समकालीन सामाजिक पारोस्थितियां एवं जागरूकता” विषय पर आयोजित किए गए इस सात दिवसीय कार्यक्रम में भाग लेने वाले अधिकारियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए।

देश में किसी भी पुलिस फोर्स के अधिकारियों के लिए आयोजित किया जाने वाला यह अपनी तरह का पहला प्रमुख कार्यक्रम था, जिसमें कि देश के प्रमुख बुद्धिजीवियों एवं शिक्षाविदों ने विषय के विभिन्न पहलुओं एवं जटिलताओं पर विस्तारके साथ प्रकाश डाला। और इन समस्याओं के सीधे निबटने में लगे पुलिस अधिकारियों की व्यावहारिक कठिनाइयों से अवगत होकर उन्हें इसके अन्य पहलुओं से अवगत कराया।

के.रि.पु. बल ने शूटिंग चैंपियनशिप जीती

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की शूटिंग टीम ने हाल ही में अजमेर में सम्पन्न हुयी अखिल भारतीय सी. एल. बी. मैमोरियल राइफल शूटिंग चैंपियनशिप की ओवर आल चैम्पियनशिप जीत ली। महाराष्ट्र की टीम दूसरे स्थान पर रही, जबकि रेलवे को तीसरा स्थान मिला।

ओवरआल चैम्पियनशिप के अतिरिक्त, के० रि० पु० बल ने महिला वर्ग की टीम टाफी तथा पुरुष वर्ग की बेस्ट टीम टाफी भी जीत ली। कमांडेंट टी० एस० ढिल्लन प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज घोषित किए गए।

इन पांच दिवसीय प्रतियोगिताओं में देश की विभिन्न टीमों ने भाग लिया।

माह जनवरी, 92 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की माह जनवरी, 1992 में मृत्यु हुई। सी०आर०पी०एफ० समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

है. कां. बहादुर सिंह (69 बटा.) उपाधीक्षक कल्याण मल (49 बटा.), ला.ना. एक. आर, गौड़ (49 बटा.), सफाई कर्मचारी अच्छे लाल (11 बटा.), कां. जी. बेणुदास (49 बटा.), कां. जोरावर सिंह (105 बटा.), इंस्पेक्टर राम कुमार (74 बटा.), कां. ए. सतीश कुमार (9 बटा.), ला.ना. केशवर दास (60 बटा.), फार्मसिस्ट के.जी.डी. नायर (आर.टी.सी.-3), कां. सज्जन पुरी (53 बटा.), बारबर पुरषोत्तम (123 एग्ज. बटा.), कां. एम. वी. पाटिल (61 बटा.), सब-इंस्पेक्टर पी. एन. पांडेय (119 बटा.), है. कां./ड्रा. सी. कुमारन (77 बटा.) है. कां. शुभ नाथ त्रिपाठी (52 बटा.), बाटर कैरियर सी. एस. महादेवा (6 बटा.), सब-इंस्पेक्टर नारायण सिंह (40 बटा.), कां./रंगरूट एस. एल. काईको लाल (ग्रु. के. इम्फाल), कां. बलबिंदर सिंह (65 बटा.), कां. एन. वी. जिद्देवर (64 बटा.), सब-इंस्पेक्टर/रेडियों आपरेटर रंधीर सिंह (3 सिगनल), है.

कां./ड्रा. जसवंत सिंह (71 बटा.), नायक एस.सी.डे. (84 बटा.), नायक मोहम्मद मलिक खान (72 बटा.), ला.ना. एन. सी. पात्रा (10 बटा.), वाटर कैरियर दीना नाथ (49 बड़ा, है. कां. चित्रु सिंह (आर. टी. सी.-2), नायक भारत सिंह (71 बटा.), ला. ना. रतन लाल 71 बटा.), तथा कां. अनिल कुमार मोरांडी (71 बटा.).

इन के अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार दिसंबर, 91 में रंगरूट, भगवान दास (आर. टी. सी-3), कां./ड्रा. रतन सिंह (ग्रु. के. बनतालाब, 76 बटा.), स. उप-निरीक्षक (एम) दीप चन्द (ग्रु. के. दिल्ली) तथा वाटर कैरियर एन. लुसाई की भी मृत्यु हुयी ।

207 आतंकवादी गिरफ्तार

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह जनवरी, 1992 में देश भर में 207 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया । इस दौरान देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी कुल 130 मुठभेड़ों में 32 आतंकवादी मारे गए ।

इन में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं ।

मारे गए आतंकवादियों में भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स का स्वयंभू ले. जनरल मनजीत सिंह, खालिस्तान कमांडो फोर्स (जप्फरवाल ग्रुप) का सतनाम सिंह उर्फ सत्ता और बिंदा, खालिस्तान लिब्रेशन फ्रंट (बुद्ध सिंह वाला ग्रुप) का. ले. जनरल जसबीर सिंह तथा भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान (मनोचल ग्रुप) का हरजीत सिंह जैसे खूंखार आतंकवादी भी शामिल हैं ।

गिरफ्तार आतंकवादियों में खालिस्तान कमांडो फोर्स (टी.) ग्रुप के हूजन सिंह, सत्तोवाल गैंग के बलदेव सिंह, जोगिंदर सिंह तथा हरिंदर सिंह जैसे दुर्दांत आतंकवादी भी शामिल हैं ।

इन मुठभेड़ों में बल के कार्मिकों ने 105 घातक हथियार तथा भारी मात्रा में सजीव गोली बारूद भी बरामद किया । बरामद हथियारों में 28 ए.के. 47 राइफलें, 20 ए.के. 56 राइफलें, दो एस. एल. आर. चार 303 राइफलें, 26 पिस्तौलें/रिवाल्वर, पांच माउजर, एक कारबाइन, दो राइफलें, पांच माउजर, एक कारबाइन, दो राइफलें, तीन राकेट लांचर तथा एक यू.एम.जी. शामिल हैं ।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के चार कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए, जबकि 31 गंभीर रूप ले घायल हुए ।

कथा कहानी

हरेराम की रामलीला

—चिन्तामणि पांडेय,

डॉ. आई. जी, रामपुर

हरेराम का कद ठिगना है। शरीर पहलवानों की तरह गठीला। दोनों पैर धनुषाकार, कुछ-कुछ ऐंठे हुए। चलता है तो एक-एक कदम पर बल देकर। हरेराम बोलता है। अपनी बात कहता है, दूसरे की बात सुनने की बिल्कुल परवाह नहीं है। लेकिन बातों की पकड़ उसकी मजबूत है। सुनी अनसुनी करते हुए भी काम की बात वह तुरन्त पकड़ लेता है। बोलते समय उसकी गर्दन की नसें फूल जाती हैं। उसकी आवाज में कड़क है लेकिन ओज नहीं, भारीपन और अक्खड़पन है।

हरेराम को महफिल लगाने का बड़ा शौक है। दस-पांच लोग उसकी गद्दी के आस-पास हमेशा दिखाई देते हैं। उनमें मुहल्ले, गाँव, जिले, राज्य तथा देश की चर्चा अनवरत चलती रहती है। घर बाहर की पारिवारिक घटनाओं, मार-पीट, कलह, सुलह-सफाई से लेकर स्थानीय राज्य, देश विदेश की घटनाओं पर बहस होती है। यहाँ पर देहाती तथा शहरी दोनों माहौल होते हैं। हरेराम इन सारी चर्चाओं और बहसों में भाग लेता है। अपनी बात उसे सुनाने की जिद सी रहती है। यदा-कदा नोंक झोंक भी होती है लेकिन माहौल गरम होने से पहले ही हरेराम ठंडे पानी के छींटे मारकर उसे संभाल लेता है।

आजकल रामलीला की चर्चा है। हरे राम रामलीला समारोह का केन्द्र बिन्दु है। वह दिनरात एक करके इसका आयोजन कराता है। पात्रों का चुनाव, उन्हें अपने-अपने पार्ट की कापियां देना, उनसे याद करवाना, नाटक का रिहर्सल, वह सबमें भाग लेता है। इसके लिए वह हजारों रुपये स्वयं खर्च करता है। पिछले वर्ष वीर अभिमन्यु नाटक रामलीला के अवसर पर खेला गया। अभिमन्यु की मुख्य भूमिका एक बारह वर्षीय बालक ने की। हरेराम ने उसका चुनाव किया लेकिन उसे अपने संवाद ही याद नहीं हो रहे थे। हरेराम ने उसे कहा कि अगर तुम तीन दिन में पूरे संवाद याद कर लो तो मैं तुम्हें 100 रुपये का इनाम दूंगा। उस लड़के को याद करने का एक नशा हो गया और तीन दिन बाद ही उसने अपने संवाद धड़ल्ले से बोलना शुरू कर दिए। नाटक में उसके अभिनय को देखकर लोग वाह वाह करने लगे। इस नाटक की सफलता के साथ ही हरेराम की शोहरत और बढ़ गई।

इस वर्ष की तैयारी पिछले साल से भी ज्यादा बड़े पैमाने पर की जा रही है। हरेराम ने अपने हास्य प्रहसन का चुनाव कर लिया है। वह हमेशा से ही हास्य नाटिका में मुख्य पात्र की भूमिका करता आया है। उसका खेल नाटक से पहले ही शुरू होता है।

इस बार वह एक कंजूस की भूमिका कर रहा है। आज इसी हास्य प्रहसन का रिहर्सल है। सूरज ढल गया है हम लोग अब वहीं रामलीला के स्टेज पर चलते हैं।

चारों तरफ चहल-पहल है। रंगमंच की साज-सज्जा पूरी हो चकी है। मंच जमीन से कुछ ऊँचा लकड़ी के तख्त-पोशों को मिलाकर बनाया गया है। बांस और पाइप के जरिये परदे खड़े किए गए हैं। परदे रामलीला के अनुरूप ही बनवाए गए हैं।

बोच-बोच में परदा खींच कर मंच को खोलने और बन्द करने का अभ्यास चल रहा है । बच्चों में अत्यधिक उत्साह है । नाटक के पात्र अपनी भूमिका को लेकर आपस में लड़-झगड़ और शोर मचा रहे हैं । परदे के पीछे से आवाज आती है, “कृपया शान्त हो जाइए । नाटक अब शुरू होने वाला है ।”

लीजिए परदा खुल गया है । मंच के बीचोंबीच एक आदमी बौखलाया सा आता है । और “हाय मेरे बापू” की रट लगा-लगा कर विलाप शुरू कर देता है । क्रमवार इसकी माँ, औरत, ताऊ ताई और बच्चे मंच पर आते हैं । और कोरस में विलाप शुरू कर देते हैं । कुछ समझ में नहीं आता है वे क्या कह रहे हैं । गांव का मुखिया उन्हें शान्त कराता है । बात यों है कि उस कंजूस का बाप गुजर गया है । सभी उसे समझाते हैं और सबके कहने पर वह बाजार अर्थी खरीदने जाता है । वहां पर दुकानदार से उसकी तकरार होती है ।

कंजूस — भाई यह टिकटी कितने की है ।

दुकानदार — एक का दाम 12 रुपये ।

कंजूस — और दो का ।

दुकानदार — बीस

कंजूस — और चार का ।

दुकानदार — चार का दाम केवल तीस रुपये ।

कंजूस — तो चार दे दो ।

और वह चार टिकटियाँ रिक्शे पर लदवाकर घर लाता है । उसे देखकर उसकी उसकी मां पूछती है कि तू ये चार टिकटी क्यों लाया?

कंजूस — चार टिकटी 30 रुपये में लाया, जबकि एक का दाम 12 रुपये है । सस्ता सौदा करके लाया हूँ ।

मां — अरे तो तू इन टिकटियों का करेगा क्या?

कंजूस — क्यों ताऊ, ताई और तेरे काम नहीं आएंगी । और सभी उसे मारने दौड़ते हैं । दर्शक दीर्घा हंसते-हंसते लोट पोट हो जाती है । कंजूस का पार्ट हरेराम ने बड़ी बखूबी से किया । सभी वाह-वाह कर उठे ।

आज नाटक का असली मंचन है । हरेराम सुबह-सुबह ही रामलीला के कठघरे में आ गया है । काफी व्यस्त है । इतने में उसका लड़का दौड़ते हुए आया । हरेराम ने पूछा-क्या बात है? इतना हांफ क्यों रहा है?

लड़का — बापू तुम्हें थानेदार ने बुलाया है । थाने से एक सिपाही आया था ।

हरेराम — थानेदार ने क्यों बुलाया है? तुम्हें कुछ मालूम है ।

लड़का — मैं क्या जानू । बाबा ने मुझे भेजा है और तुम्हें बुलाकर लाने को कहा है ।

हरेराम का मन अचानक शंका, भय और चिन्ता से भर उठा । थानेदार ने क्यों

बुलाया है? मैने तो कुछ किया नहीं। क्या हो सकता है। किसी ने मेरी शिकायत की होगी? कौन हो सकता है? लगता है शंकर ने की है। जिसे हमने घर से निकाल दिया था। शंकर घर का नौकर था। आये दिन वह घर से बाहर चला जाता था। मन-मरजी के मुताबिक आता था और काम की बातों से कतराता था। इधर-उधर की बातें करके घर से भागने के चक्कर में रहता। उसकी कुछ दिन हुए हरेराम ने छुट्टी करदी थी। इसी लिए वह बौखलाया इधर-उधर लाला की शिकायतें करता फिर रहा था। हरेराम को शक हो गया कि हो न हो शंकर ने ही मेरी शिकायत थाने में की होगी। इसी उधेड़ बुन में वह घर पहुंचा। वहां अजीब मातमी माहौल बन चुका था। उसकी मां घर के अन्दर रो-रो कर बेहाल हो रही थी।

उसके आने तक बह मंदिर में पूजा और प्रसाद वितरण की मन्नत मान चुकी थी। पिता जी भी हनुमान जी से प्रार्थना कर चुके थे कि अगर उनका लड़का सही सलामत थाने से वापस आ गया तो मन्दिर में पूजा अर्चना के साथ सवा सेर लड्डू बांटेंगे। हरेराम को स्थिति गंभीर लगी। उसने पानी पीकर तालु को गीला किया और सशंकित मन से घर से बाहर आया। वहां पर उसके पिता मुखिया, नंबरदार तथा थाने के एक दो और दलालों को उसके साथ जाने के लिए तैयार कर चुके थे। जरूरत के मुताबिक खर्च के लिए रुपये भी बांध लिए थे। देखते-देखते दस पन्द्रह लोग और हमदर्दी में साथ देने पहुंचे। हरेराम को कुछ ढाढस बंधा पूरी पार्टी के साथ वह थाने की तरफ बढ़े।

थाने से 50 गज दूर ही सभी हमदर्दियों, सिफारशियों को छोड़कर हरेराम सशंकित मन के थाने के अन्दर घुसा। सन्तरी ड्यूटी पर तैनात सिपाही ने उसे ललकारा। “अबे कौन है तू? कहां अन्दर घुसा जा रहा है?”

“हवलदार साहब मुझे थानेदार साहब ने बुलवाया है।”

“क्या नाम है तेरा?”

“हरेराम, बदलू राम का बेटा”

सिपाही ने गौर से देखा और तीखी आवाज में बोला, “यहीं खड़ा रह, मैं अभी आता हूँ।”

सिपाही जल्दी ही वापस लौट आया और हरेराम को अन्दर ले गया।

थानेदार एक मेज के इर्द-गिर्द अपने बच्चों और घरवाली के साथ गप्पें मार रहा था। पूछा — “क्या नाम है भाई तेरा।” “हुजूर मैं हरेराम हूँ, बदलू राम का बेटा।”

“अच्छा तो तुम ही रामलीला के इन्चार्ज हो।”

“जी हां, रामलीला का आयोजन मैं ही करता हूँ।”

“अरे भाई आइये, इधर आइये” और और दारोगा ने उठकर हरेराम का हाथ पकड़कर अपने सामने की कुर्सी पर बैठा लिया और बोला, “बात यूँ है कि मेरी साली अपने बच्चों के साथ आई है और रामलीला का नाटक देखना चाहती है। आपसे यह कहना था कि अगली आठ सीटें मेरे लिए रिजर्व रखें।”

हरेराम अचानक इस व्यवहार से हक्का-बक्का हो गया; लौकेन तुरन्त ही संयत होकर बोला, “हुजूर बस इतनी सी बात । इसके लिए मुझे यहां क्यों बुलवाया । केवल सन्देश भिजवा देते । मेरी तो जान ही चली गई थी । बाहर मेरे पिता जी पन्द्रह लोगों के साथ मुझे छुड़वाने के लिए आए हैं ।”

इतना सुनना था कि दरोगा, उसकी साली और बच्चे हंसते-हंसते बेहाल हो गए ।



पंजाब चुनाव के दौरान सुचारु मतदान के लिए सुरक्षा प्रदान करते के. रि. पु. बल के जवान ।

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा । सम्पादक : अनिल गुप्ता । वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लॉक 1, सी० जी० ग्रो० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003
की ओर से ए० एन० शर्मा ।
मुद्रक : सी० आर० पी० एफ० प्रेस, भड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072 ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खंड—V

अंक—2

मूल्य—1.95 रुपए

31 मार्च, 1992

11 चैत्र, शक संवत् 1914



मध्य प्रदेश के राज्यपाल कुंवर मोहम्मद अलि खान 41 वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में स्वर्ण पदक विजेता आर० एस० बल को सम्मानित करते हुए।

सी० आर० पी० एफ०
समाचार

खण्ड—V अंक—2

31 मार्च, 1992

11 चैत्र, शक 1914

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा।

वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।

सम्पादक : अनिल गुप्ता।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लॉक 1, सी० जी० प्रो० काम्पलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।

मुद्रक : सी० आर० पी० एफ० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली - 110072 ।

सम्पादकीय

इस वर्ष के अखिल भारतीय पुलिस खेलों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने अपनी स्थिति को कुछ सुधारा है। बल की टीम 2 स्वर्ण, 6 रजत एवं 8 कांस्य पदक प्राप्त कर मात्र 134 अंक ही प्राप्त कर पायी। इस प्रकार उसे इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में तीसरा स्थान हासिल हुआ। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जैसी फोर्स के लिए यह कोई बहुत संतोषजनक स्थिति नहीं है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम के लिए इस वर्ष गत वर्ष के सर्वश्रेष्ठ धावक के० शयोधनन का डेक्थोलन प्रतियोगिता की 100 मीटर दौड़ में घायल हो जाना काफी दुर्भाग्यपूर्ण रहा। यदि वह सकुशल रहते और गत वर्ष के अपने प्रदर्शन को भी बरकरार रखते तो शायद पदक तालिका में हमारी स्थिति और बेहतर होती।

बहरहाल मात्र तीसरे स्थान पर ही पहुंच कर हमें संतोष नहीं कर लेना चाहिए। अपनी टीम को इन प्रतिस्पर्धाओं के शीर्ष पर देखने के लिए हमें हरसंभव प्रयास करने चाहिए। इसके लिए जरूरी होगा कि हम खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने के लिए उन्हें सतत प्रशिक्षण एवं अभ्यास का मौका दें और इसके लिए उन्हें हर संभव सहायता उपलब्ध कराएं, विशेष कर जिन प्रतियोगिताओं में हम पिछड़ जाते हैं, उस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही इस वर्ष की प्रतियोगिता में नवोदित प्रतिभाओं के प्रदर्शन को देखते हुए, हमें अधिक से अधिक अच्छे खिलाड़ियों की भर्ती बल में करनी चाहिए। इस भर्ती में भी उन खेलों के खिलाड़ियों की भर्ती पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जिन प्रतियोगिताओं में हम पिछड़ते हैं।

इसके अतिरिक्त हमें अपने परिवार में छिपी प्रतिभाओं को भी बाहर आने का मौका देना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हम बटालियन स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन करें और इन प्रतियोगिताओं में अच्छे खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर उनकी प्रतिभा को निखरने का भरपूर मौका दें। और इस प्रकार अच्छे खिलाड़ियों को चुनकर केन्द्रीय टीम में शामिल किया जाए।

एक बात और हमें अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि कोई प्रतियोगिता अकेला खिलाड़ी नहीं जीतता। निस्संदेह उसकी प्रतिभा, उसकी मेहनत, उसका संघर्ष सर्वोपरि होता है, मगर उसको आधार प्रदान करने के लिए, उसकी प्रतिभा को आकार देने के लिए हर महकमे को उसी शिद्दत, उसी समर्पण के साथ जुटना पड़ता है। यदि खिलाड़ी जीतता है, तो यह सबकी जीत होती है, तो फिर हार के लिए हम दोष अकेले खिलाड़ी को कैसे दे सकते हैं ?

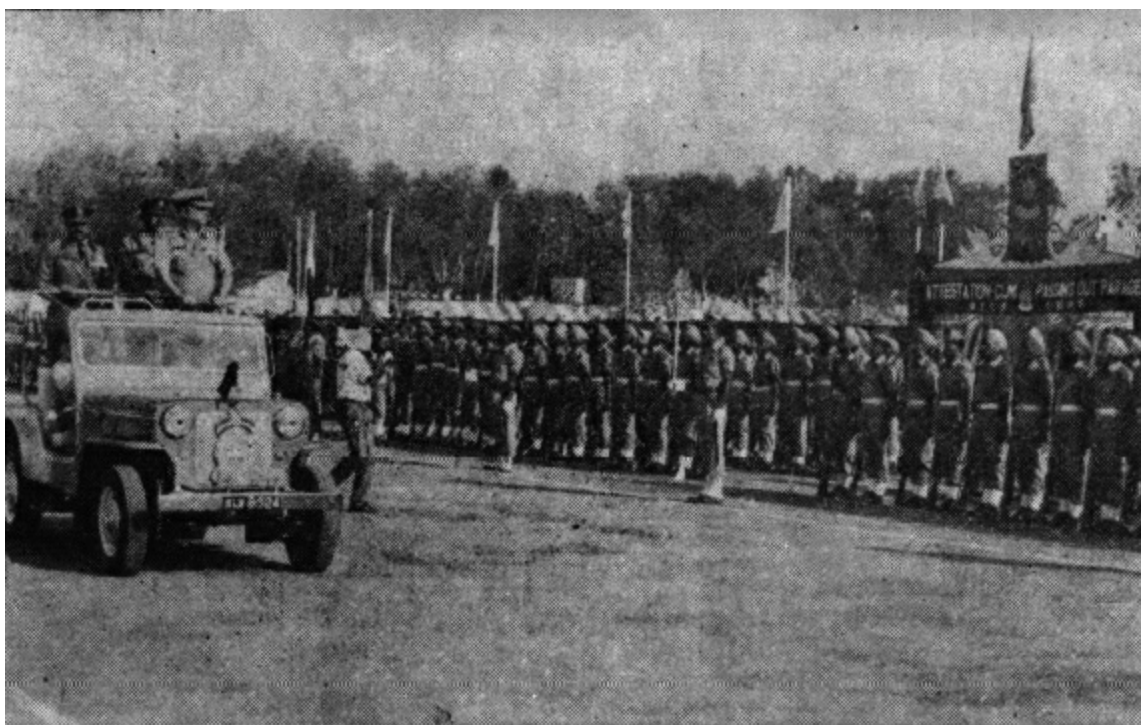
एक बात और, इस बार की गणतन्त्र दिवस परेड में बल की पुरुष टुकड़ी, पुलिस बलों में सर्वश्रेष्ठ पायी गयी। यह एक अपूर्व सम्मान है। के० रि० पु० बल इस सम्मान को पाकर गौरवान्वित हुआ है। गणतन्त्र दिवस परेड में उत्कृष्ट मार्चपास्ट के लिए केन्द्रीय रक्षा सचिव ने रक्षा मंत्री की तरफ से यह ट्राफी टुकड़ी के नेता डिप्टी कमांडेन्ट श्री

मनोज कुमार दुबे को प्रदान की। इस आद्वैतीय उपलब्धि के लिए हम गणतन्त्र दिवस परेड में भाग लेने वाली बल की पूरी पुरुष टुकड़ी एवं श्री मनोज कुमार दुबे को हार्दिक बधाई देते हैं।

अरविन्द शर्मा

(अरविन्द शर्मा)

371 जवान बल के परिवार में शामिल



श्री डी० पी० एन० सिंह, महानिदेशक रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3 में 34 वें बैच के गार्ड आफ-आनर का निरीक्षण करते हुए।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3 पल्लिपुरम में 1 मार्च 1992 को रंगरूटों के 34वें बैच के जवानों की पासिंग आऊट परेड संपन्न हुई। अपने 9 महिने के प्रशिक्षण को पूरा कर बल के परिवार में शामिल होने वाले रंगरूटों के 34वें बैच के इन 371 जवानों की परेड की सलामी बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन.

सिंह ने ली। इन जवानों में आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब तथा केरल के जवान शामिल थे। इस मौके पर बोलते हुए बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने जवानों से देश की एकता और अखंडता के प्रति बल की वचनबद्धता को बनाए रखने का आह्वान किया।

इसे मौके पर महानिदेशक महोदय ने सर्वश्रेष्ठ इनडोर कैडेट रंजीत कुमार, सर्वश्रेष्ठ आउटडोर कैडेट सोम नाथ बदन तथा आलराउंडर मोहन सिंह को पुरस्कार भी प्रदान किए।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से 8 कार्मिक सम्मानित

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के आठ कार्मिकों को अपने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया है।

के. रि. पु. बल ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम के अपर-उप-महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद को राजभाषा हिंदी के उत्थान एवं प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान के लिए यह सम्मान दिया गया है, जब कि के. रि. पु. बल महानिदेशालय में कार्यरत जन सम्पर्क अधिकारी श्री अरविंद नारायण शर्मा को यह सम्मान जन सम्पर्क एवं प्रचार के क्षेत्र में उन के योगदान के लिए दिया गया है।

41 बटालियन के उप-कमांडेंट श्री मनोजकुमार दुबे, 88 (महिला) बटालियन की सहायक कमांडेंट सुश्री एनी अब्राहम एवं ग्रुप केन्द्र बनतलाब के इंस्पेक्टर थापा (बैड) को यह सम्मान इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकड़ियों के नेतृत्व के लिए दिया गया है। ज्ञातव्य है कि इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में बल की पुरुष टुकड़ी को पुलिस बलों की टुकड़ियों में सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया है।

75 बटालियन के कां. ज्ञान चन्द्र, जगदेव सिंह एवं जसरूप सिंह को पंजाब में आतंकवाद विरोधी अभियान में उन के योगदान के लिए सम्मानित किया गया है।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क 1987 में शुरू की गई थी तथा यह प्रति वर्ष अपने अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कार्मिकों को प्रदान की जाती है। इस सम्मान को शुरू करने का उद्देश्य बल के ईमानदार, बहादुर एवं साहसी कार्मिकों को प्रोत्साहन देना है। इस सम्मान के लिए कार्मिकों का चयन करते समय मुख्य रूप से इस बात को ध्यान में रखा जाता है कि उन्होंने परिचालन ड्यूटियों या प्राकृतिक विभीषिकाओं के दौरान उल्लेखनीय साहस, वीरता एवं कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया हो, खेलों के क्षेत्र में राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योगदान दिया हो या फिर कोई ऐसा कार्य किया हो, जिससे बल की एवं कार्यकुशलता में बढ़ोत्तरी हुयी हो।

उत्तीर्ण प्रशिक्षार्थियों को सम्मान



अपर-महानिदेशक श्री सी. एस. द्विवेदी राज्य स्तर की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले मोटर मैकेनिक ट्रेड के छात्र नरेन्द्र प्रसाद तिवारी को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर-महानिदेशक श्री सी. एस. द्विवेदी ने 6 मार्च, 1992 को बल के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के होनहार छात्रों को पदक, ट्राफियां एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए।

ज्ञातव्य है कि इस संस्थान के मोटर मैकेनिक ट्रेड के छात्र नरेन्द्र प्रसाद ने 1990-91 में राज्य स्तर की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया था। इस मौके पर अपर-महानिदेशक श्री द्विवेदी ने उन्हें पुरस्कार प्रदान किया। साथ ही नरेन्द्र कुमार को रेडियो टी. वी. कोर्स, रितेश सैनी को मोटर मैकेनिक ट्रेड तथा धर्मेन्द्र सिंह को वेल्डर ट्रेड में विशिष्ट योग्यता के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए। अपनी कक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त करने पर सतनारायण सिंह (रेडियो एवं टी.वी. कोर्स), जगदीश कुमार रावत (मोटर मैकेनिक) तथा राजेश कुमार (वेल्डर ट्रेड) को भी पुरस्कार प्रदान किए गए। मोटर मैकेनिक शाप को सर्वश्रेष्ठ मैकेनिक शाप तथा मोटर मैकेनिक ट्रेड छात्रावास को सर्वश्रेष्ठ छात्रावास की शील्डें भी प्रदान की गईं।

एन. पी. तिवारी को राज्य स्तर की योग्यता में अपना योगदान देने वाले प्रशिक्षकों इन्स्पेक्टर एम. आर. लिंगम (मोटर मैकेनिक), हर्ष जोशी (वर्कशाप केलकुलेशन एवं साईंस) तथा जोगिंदर कुमार (मोटर मैकेनिक) को भी सम्मानित किया गया। साथ ही रेडियो तथा टी. वी. ट्रेड के इन्स्पेक्टर के. के. अरोड़ा को भी पुरस्कार प्रदान किया गया। इससे पूर्व मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत करते हुए संस्थान के प्रधानाचार्य श्री

डॉ. पी. अग्रवाल ने इस संस्थान की गांठों-बंधनों की जानकारी दी।

ज्ञातव्य है कि के. रि. पु. बल औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना बल के कार्मिकों के कल्याण कार्यक्रमों के अंतर्गत ढाई वर्ष पूर्व की गई थी। इस संस्थान में बल के कार्मिकों के बच्चों को तकनीकी शिक्षा उपलब्ध कराई जाती है। पिछले दो वर्षों में इस संस्थान का परिणाम शतप्रतिशत रहा है। साथ ही यहां से निकले प्रशिक्षार्थियों को रोजगार दिलाने का भी भरपूर प्रयास इस संस्थान द्वारा किया जाता है। वर्तमान में इस संस्थान में 90 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

जंगल में मंगल

(रचयिता-राजनाथ पाण्डेय)
हव. रे. फी 33 बटा. सिंग.

आम-जामुन के विशालकाय वृक्षों की गोद में दूर-दूर तक फैले हुए मुख्यालय के इन तम्बुओं में से एक नवीन आभा निकल पड़ी है। शाम ढलने को है। उजाला बांटने वाले वह पक्षी जिनकी चहचाहट वातावरण को हर समय संगीतमय बनाये रखती थी, अब दिनभर की थकान से पनाह पाने के लिए घोंसलों की तरफ मुड़ रहे हैं। रह-रह कर हल्के झोंकों से हिलती डुलती अमराईयों के पत्तों में दुबके हुए तोते - मैनों को निशा की भयावहता आकुल बना रही है। गौधूली से नहाकर सिमटती हुई टहनियों से छनकर आ रही मधुर लालिमा निशा की वेदना का ही इजहार कर रही है। सचमुच इसके तेवर को बांच पाना दुष्कर काम है।

अब तक तो अल्हड़ जवानों की अलमस्ती ने निशा के वृत्तचित्र में केवल प्रकृति की सारी कालिमाओं के सिमटने का ही अंदाज पढ़ा है, ध्यान जब इस काली नागिन पर जाता है, तो इसके विषैले जहरीले डंक के स्वरूप का आभास भी प्रतिबिम्बित होने लगता है। ख्याल चला जाता है मंड के उन सरकंडों पर जो हमारी पैनी दृष्टि को उलझाने की नाकामयाब कोशिशों से बार बार बाज नहीं आ रहे हैं, उन्हें शायद पता न हो कि हमने खुद को सिकोड़ लिया है कि उनके घास-फूस, मूँज पत्तल, कांटे पत्थर हमें अब फूल से लग रहे हैं और अब वे हमारा रास्ता न रोक सकेंगे। जान को जोखिम में डालने वाला खेल तो हमने अपने प्रशिक्षण-शैशव काल में ही सीख लिया था। प्राणों को हथेली पर रखकर चक्रव्यूह तोड़ने वाले हमारे कई खेलों को तो जग देख चुका है। अब इस पथ की गर्दिशों से भय ही क्या ? जो अधिक से अधिक हमारी सूरतों को बन्दरनुमा बनाकर संतोष की सांस लेती रहेगी। मगर हमने तो इस कालिमा का चीर हरण करने की मन में ठान ली है और अपने उद्देश्य के लिए जो हम इधर-उधर की खाक छानते फिर रहे हैं उसमें तगमों को टटोलने की मंशा बेबुनियादी होगी, वरन दिन के उजालों से लुकते छिपते उन चेहरों को बेनकाब करने का संकल्प है उसमें। वे उलूक-चेहरे किसी नालायक गुरू-घंटाल के फुसलावे में आकर वतन को वे आबरू करने और अमन छिनने के ख्वाब देख रहे हैं, वे ये नहीं सोचते की उनका भी पर्दाफाश हो चुका है।

ख्यालों में कुछ दूर निकल पाया हूँ। ध्यान नहीं रहा मुख्यालय प्रांगण में गड़े हुए इस शामियाने की तरफ जिसमें आज एक जमघट दिखाई पड़ रहा है। न कोई बाजे गाजे बज रहे हैं और ना ही जश्न का जाम ही बंट रहा। बाजे बजे कैसे ? जहां रणभेरी बज रही हो। जाम बटें कैसे ? इसे हाथ तक न लगाने की जो कसम है हाँ। “प्लेटों” में परोसे गये अपने भोज्य व्यंजनों को भी सब ऐसे ही खा रहे हैं, जैसे कोई शेर ताक झांक के साथ अपने शिकार को खाता है। कवच तो कभी उतारने के लिए होते ही नहीं। हां इस समय भी अर्जुन के गांडीव की तरह बन्दूकें सभी के कन्धों से लटक रही हैं। क्या पता अनवरत प्रहरी बेतार कब जयद्रथ पर बाण छोड़ने की आज्ञा दे बैठे। बड़े-छोटे, ऊँच-नीच, प्रांत-भाषा आदि के भेद से दूर यह पवित्र संगम ऐसा लग रहा है जिसे एक बार साक्षात् यौवन भी देख ले तो लज्जित हो जाय। यह शाम उस साँवल के महान व्यक्तित्व की याद दिला रही है, जिन्होंने तैतीस करोड़ देवताओं को साक्षी मानकर आज के ही दिन (पहली अप्रैल सन् उन्नीस सौ अड़सठ) को के.रि.पु. बल के विशाल चमन में, जिसकी महक से वतन सुरम्य ला रहा है, इस तैतीसवें पौधे को रोपा था। आज यह 24 वर्ष का एक स्वस्थ छायादार पेड़ बन गया है और इसमें लगने वाले फलों को इतिहास अपनी झोली में नहीं समेट पा रहा है।

बुनियादी परम्पराओं पर खड़ा है यह चमन और दिनों दिन पल्लवित पुष्पित होता जा रहा है। इसकी निष्ठा सन्देह से कोसों दूर निकल आई हैं। इसके हौंसले का आज तक कोई विकल्प नहीं बन पाया है। इस ने कुदृष्टि को सदा ही दृष्टिहीन बनाने की कारगर भूमिका का निर्वाह किया है। पत्थरों में दूब उगाने और तपती रेत में बसंत के फूल खिलाने की कला इसने हमें सिखा दी है। कवच रूपी वर्दी के ताने बाने तो बस धर्म कर्म और दीन-ईमान के ही धागों से बने हैं। टोपियों ने तो मानो विगत स्मृति की कसक को सदा के लिए ही ढाप दिया है। पुष्ट एवं जुटे हुए कंधे भविष्य के मधुर सपनों की तरह इंगित एक तस्वीर बन गये हैं। मानों वर्तमान ने अनुशासन-प्रियता की एकरसता के साथ समझौता कर लिया हो। दुहरे कर्तव्य की प्रतीक सिविल पोशाकों को घर की खूटियों पर ही टंगवा रखा है। प्रिया को पत्र की अधीरता से समझौता करा दिया है। तीज-त्यौहारों और सुख-दुख के अहसासों को घर लौट आने तक न आने के लिए बरत रखा है, क्योंकि कोई भी चमन, फूल अपने लिए नहीं रखता, हाँ शूल जरूर उसके अपने हिस्से के ही होते हैं, जिसे कोई नहीं लेना चाहता है। तो फिर क्या ? गांव-शहर, संगी-साथी, सुख-दुख और अपना-बेगाना सब इस कर्तव्य सेवा से ओझल हो जाते हैं। ये ऐसा सुन्दर चमन होने के कारण ही इसने राष्ट्र के अन्य उद्यानों से अपनी विशिष्ट पहचान बना रखी है। आज यह बटालियन देश सेवा के क्षेत्र में सच्चे प्रहरी की भूमिका अदा कर रही है।

“जननी जन्म भूमिश्च” की महत्ता दार्शनिक गण कुछ भी क्यों न स्वीकारें। हमें तो सच्चे सपूत की परिभाषा पहले ही शहीदों ने बतला दी है। इस मातृभूमि की धूल का एक-एक कण सैकड़ों फूलों से भी अधिक सुखानुभूति देता है। इसमें ममता की पावन दुग्ध धारा अविरल गति से प्रवाहित हो रही है। इसमें स्नेहमयी मधुर लोरियों का मधुर राग और वरद हाथों की थपथपाहट का आभास अब भी हो रहा है, इसके तिलक-

चन्दन प्रांतेपल किसी भी चुनौती में विजय दिलाने के लिए ललकार रहे हैं।

इन विचारों की एक श्रृंखला हमारे मन मस्तिष्क में हमेशा ही उन छाया गीतों को गुनगुनाते हुए सुनाई पड़ती है। चाहे हम किसी मोरचे में बैठे हों, घात लगाकर ताक में बैठे हों अथवा फुर्सत या संवेदनाओं की कश्मकश में। हमारे लहू का एक-एक कतरा उन्हीं कणों से बना है, पला है, बढ़ा है और उसकी रक्षा हमारा ईमान बनकर हमारे जहन में उतर गया है। बस इन्हीं अहसासों के साथ हमारा मनोबल सदा आकाश से भी ऊँचा उठा रहता है और अन्दर ही अन्दर एक गुदगुदी सा अनुभव होता रहता है। तो फिर क्या? “जंगल में भी मंगल” मन जाता है।

‘चूहा किससे डरता है?’

‘बिल्ली से।’

‘बिल्ली किससे डरती है?’

‘कुत्ते से।’

‘कुत्ता किससे डरता है?’

‘शेर से।’

‘शेर किससे डरता है?’

‘आदमी से।’

‘आदमी किससे डरता है?’

‘औरत से।’

‘औरत किससे डरती है?’

‘चूहे से।’

अनुभव: ‘गलतियों का दूसरा नाम।’

संकलन कर्ता—नायक (चालक)

—रामजी लाल

हिन्दी पुरस्कार

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद पिछले 25 वर्षों से हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन अखिल भारतीय स्तर पर करती आ रही है। इस वर्ष यह प्रतियोगिता देश में 82 केन्द्रों पर आयोजित की गई, इस में कुल मिलाकर 334 प्रतियोगियों ने भाग लिया। अखिल भारतीय स्तर के पुरस्कारों में 351 रुपए का प्रथम पुरस्कार, चल वैजयन्ती पदक तथा स्मृति चिह्न सहित के. रि. पु. बल इम्फाल के श्री राम प्यास राय

को दिया गया। 251 रुपए का दूसरा पुरस्कार स्मृति चिह्न साहेत ग्रुप केन्द्र रामपुर के श्री संतोष कुमार श्रीवास्तव को दिया गया।

इसी प्रकार अधिकारी वर्ग में अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र-2, अजमेर श्री विश्वदेव सहगल, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र रामपुर श्री अशोक कुमार कथूरिया, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र बनतालाब श्री एम. एस. बोपाराय तथा अपर पुलिस उप महानिरीक्षक ग्रुप केन्द्र-1 अजमेर, श्री सतीश कुमार को भी 101 रुपए के पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रायोजनकर्ता का पुरस्कार अ. पु. उ. म. नि. श्री ओ. पी. भट्टा ग्रुप केन्द्र नीमच को दिया गया। यह पुरस्कार उप गृह राज्य मन्त्री श्री रामलाल राही ने नई दिल्ली में प्रदान किए।



श्री ओ.पी. भट्टा उप-गृहराज्य मंत्री श्री रामलाल राही से पुरस्कार प्राप्त करते हुए

41वें अखिल भारतीय पुलिस खेल

के० रि० पु० बल को तीसरा स्थान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने इस बार के 41वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में अपनी स्थिति को पहले से बेहतर बनाते हुए तीसरा स्थान हासिल किया। गत वर्ष बल की टीम को इन प्रतियोगिताओं में पाँचवां स्थान हासिल हुआ था। इस वर्ष इन प्रतियोगिताओं का आयोजन केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के तत्वावधान में 23

फरवरी से एक मार्च, 1992 तक भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड पारिसर, भोपाल, मध्य प्रदेश में किया गया था।

इस बार फिर 162 अंक प्राप्त कर सीमा सुरक्षा बल ने प्रथम स्थान हासिल किया। जबकि 136 अंक प्राप्त कर केरल पुलिस दूसरे स्थान पर रही। तीसरा स्थान प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को 134 अंक बटोरने पड़े। उसे यह अंक इसकी पुरुष टीम ने दो स्वर्ण, छः रजत तथा 6 कांस्य पदक और महिला टीम ने दो रजत पदक प्राप्त कर दिलाए।

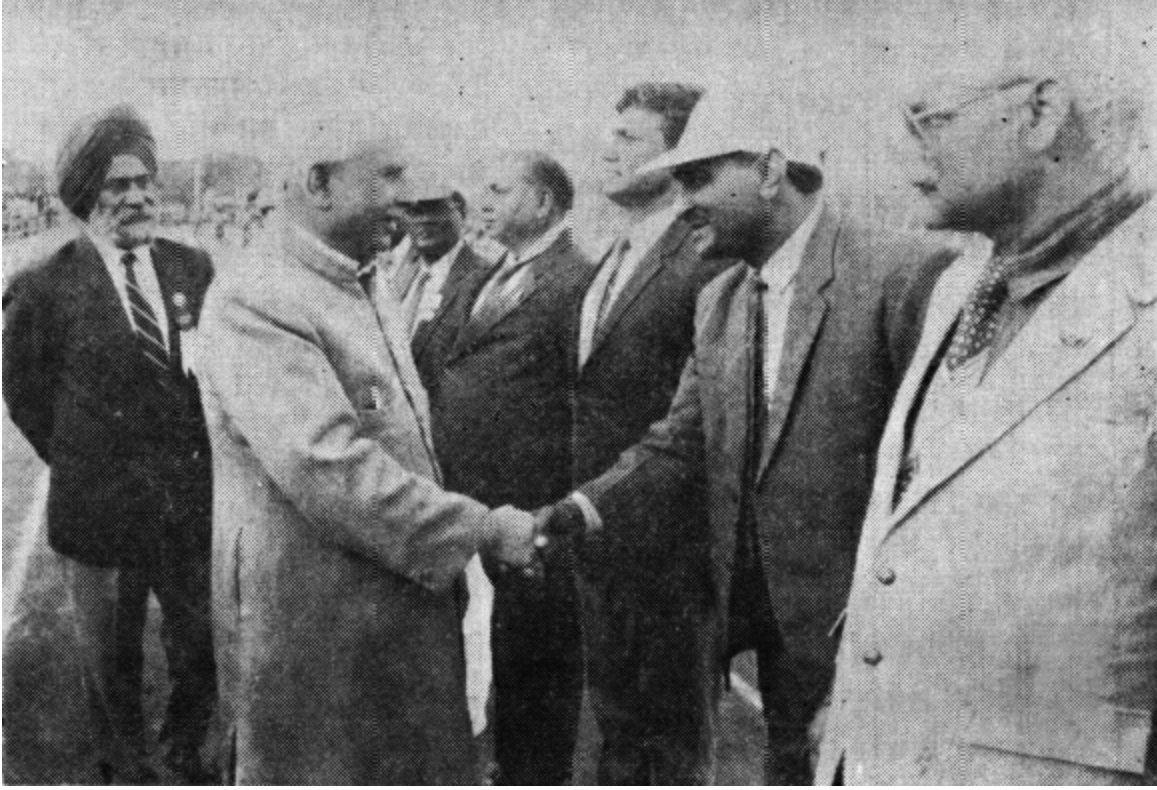
मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री सुन्दर लाल पटवा ने एक रंगारंग कार्यक्रम के बीच दौड़-कूद प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया, जबकि समापन समारोह के मौके पर मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री कुंवर मोहम्मद अली खान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए।

इन खेलों में पूरे देश से आयी 26 पुलिस टीमों ने भाग लिया। भाग लेने वाली टीमों में असम, तमिलनाडु, नागालैंड, उड़ीसा, प० बंगाल, मिजोरम, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, त्रिपुरा, केरल, कर्नाटक, बिहार, पंजाब, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़ तथा राजस्थान पुलिस सहित केन्द्रीय पुलिस संगठनों एस०एस०बी०, रेलवे पुलिस, के० औ०पु०बल, के०रि०पु० बल, सी०सु०बल तथा भा०ति०सी०पु० की टीमों भी शामिल थीं। इन टीमों के 1700 खिलाड़ियों में 100 महिलाएं भी शामिल थीं। इन प्रतियोगिताओं में दौड़कूद मुकाबलों के अतिरिक्त हाकी, बास्केटबाल, वालीबाल, कबड्डी, कुश्ती जमनास्टिक तथा जूडो प्रतिस्पर्धाएं भी रखी गई थीं। प्रतियोगिता की महिला प्रतियोगियों ने सिर्फ दौड़कूद प्रतियोगिताओं में ही भाग लिया।

इन प्रतियोगिताओं में देश के कुछ चोटी के धावकों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के कुछ प्रमुख आकर्षणों में के०रि०पु० बल के डिप्टी कमांडेंट आर० एस० बल और इन्स्पेक्टर के० शियोधनन, के०औ०सु० बल के शक्ति सिंह, ओमबीर सिंह, अशोक कुमार, महेंद्र सिंह तथा कु० श्रीदेवी, सी० सु० बल के सुभाष वर्मा तथा संजय, केरल पुलिस के पी० वी० विल्सन तथा पंजाब पुलिस की सुश्री अमनदीप कौर शामिल थीं।

इन्हीं खेलों के दौरान जम्मू कश्मीर, सलाल से साईकिल यात्रा तथा पटना से एक मशाल यात्रा का भी आयोजन किया गया। ये दोनों ही यात्राएं खेलों के उद्घाटन के अवसर पर भोपाल में सम्पन्न हुईं।

के०रि०पु० बल की टीम में बड़ी संख्या में नए सितारों की बढ़ोत्तरी के साथ ही इसके प्रदर्शन में खूबी आयी। इस प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करने वाले कुछ उदीयमान धावकों में चांदवीर सिंह (1500 मीटर), प्रभजोत सिंह (पोल वाल्ट), अजर मोहम्मद (800 मीटर), अमृतपाल सिंह (3000 मीटर), इनोवा सिंह, फारूक अली, सुरजीत सिंह तथा देवाशीश राय (4×100 मीटर रिले) शामिल हैं।



मध्य प्रदेश के राज्यपाल कुंवर मोहम्मद अली खान 41वें अ० भा० पु० खेलों के समापन समारोह पर पुलिस टीमों के अधिकारियों से मिलते हुए।

बल के लिए दो स्वर्ण पदक आर०एस० बल ने हैमर थ्रो (62.98 मी०) में तथा प्रभजोत सिंह ने पोल वाल्ट (4.50 मी०) में जीते। जबकि एस० एम० महतो ने हाई जम्प (1.90 मी०), राजेन्द्र सिंह ने 400 मीटर बाधा दौड़ (55.0 सै०), ओम प्रकाश ने हैमर थ्रो (62.96), राम करन ने 5000 मीटर दौड़ (15:26.2), राजेन्द्र सिंह ने 110 मीटर बाधा दौड़ (15:3) तथा अमृतपाल सिंह ने 3000 मीटर स्टीपल चेस (9:18.6) में बल के लिए रजत पदक बटोरे।

कांस्य पदक प्राप्त करने वाले बल के सदस्य हैं :—

चांदवीर सिंह, 1500 मीटर (4.00.7), राय जैकब 400 मी० बाधा दौड़ (55.1), अजर मोहम्मद, 800 मीटर दौड़ (1:55.9), राम शंकर, जेवर्लिन थ्रो (165.52 मीटर), रसदेव सिंह, मैराथन (2.30:12), 4X100 मीटर रिले (42.9) शामिल हैं। इसके अतिरिक्त दो कांस्य पदक बल की महिला सदस्यों ने जीते।



के० रि० पु० बल के पोलवाल्ड विजेता प्रभजोत सिंह पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

अन्य खेलों में बल की टीम का प्रदर्शन कोई बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं रहा। बेहतर प्रदर्शन के लिए टीम को सघन प्रशिक्षण तथा कड़ी मेहनत की जरूरत है। फिर भी बास्केटबाल प्रतियोगिता में बल की टीम को दूसरा स्थान मिला, कबड्डी, वालीबाल, जूडो व कुश्ती में टीम तीसरे स्थान पर एवं हाकी और जिम्नास्टिक में चौथे स्थान पर

रही। बल के इन्स्पेक्टर विजय कुमार को प्रांतयोगेता का सर्वश्रेष्ठ जिमनास्ट घोषित किया गया।

के० रि० पु० बल ने 253 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह मार्च 1992 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 253 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी कुल 53 मुठभेड़ों में 39 आतंकवादी मारे गए। इन में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

मारे गए आतंकवादियों में गाटा मारू ग्रुप का स्वयंभू ले. जनरल हरदीप सिंह उर्फ डा० इन्दर सिंह, खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजावर ग्रुप) का स्वयंभू ले. जनरल निरवेर सिंह धोबी, खालिस्तान कमांडो फोर्स का ही स्वयंभू ले० जनरल अमरप्रीत सिंह उर्फ हितू तथा भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान (सांगा गुट,) का स्वयंभू ले० जनरल गुरदीप सिंह उर्फ ढाबा उर्फ गुप्ता शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 103 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में 30 ए. के. 47 राइफलें, 16 ए. के. 56 राइफल, 19 पिस्तौलें/रिवाल्वरें, एक एस. एल. आर, एक राकेट लांचर, एक स्टेनगन, चार राइफलें तथा एक जी. पी. एम. जी. शामिल है।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के 12 कार्मिक वीर गति को प्राप्त हुए।

जोखिम निधि लाभ

माह फरवरी, 92 में के. रि. पु. बल जोखिम निधि से मृत्यु के 18 मामलों में कुल 6,30,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इन में प्रति मामला 10,000 रुपए की केन्द्रीय कल्याण निधि एवं सी. बी. एफ. की राशि भी शामिल है।

मधुमेह (डाईबिटीज)–लक्षण व निदान

—डा० जी० एस० सोनी डी० एच० एम० एस०

मधुमेह यानि डाईबिटीज एक ऐसा रोग है जो रोगी की जान तक ले सकता है। इसलिए प्रत्येक को इस रोग के बारे में पूर्णतया जान लेना अति आवश्यक है। दूसरे

शब्दों में यह रोग स्वयं ही दूसरे रोगों को भी जन्म देता है जैसे दिल व ब्लडप्रेसर की बीमारी।

सबसे पहले यह जान लेना अति आवश्यक है कि वास्तव में मधुमेह का कारण क्या है, इसके लक्षण क्या हैं, निदान के सही तरीके व इसकी पहचान कैसे की जाती है। इसके अलावा इस रोग में रोगी स्वयं अपनी मदद कैसे कर सकता है व आहार इस रोग में कैसे लाभकारी सिद्ध होता है।

इस रोग का मुख्य कारण शरीर में इन्सुलिन की कमी होना है या इन्सुलिन का असर पूरा नहीं होता है, जिसके परिणाम स्वरूप खून में शूगर की मात्रा बढ़ जाती है। जब खून में शूगर की मात्रा 180 मि. ग्रा. से अधिक हो जाती है तब यही शूगर पेशाब में आने लगती है।

यहां यह बताना बहुत जरूरी है कि डाईबिटीज में केवल ब्लड शूगर ही नहीं बढ़ता है बल्कि शूगर के साथ-साथ खून में चर्बी के और तत्व जैसे जैसे कोलेस्ट्रॉल, ट्राइग्लियराइ आदि भी बढ़ जाते हैं, जिससे डाईबिटीज रोग के बिगड़ने की संभावना बढ़ जाती है। यदि डाईबिटीज को विधिवत कंट्रोल किया जाये तो न केवल नार्मल स्वास्थ्य फिर से पा सकता है बल्कि इसकी जटिलता से बहुत हद तक छुटकारा पाया जा सकता है।

डाईबिटीज के मुख्य लक्षण निम्न लिखित हैं :—

- (1) अधिक पेशाब का आना ।
- (2) प्यास अधिक लगना।
- (3) कमजोरी व थकावट महसूस होना।
- (4) वजन अनायास कम होना ।
- (5) फोड़े-फुन्सी का बार-बार होना।
- (6) किसी चोट के घाव का शीघ्र ठीक न होना।

कुछ लक्षण इतने स्पष्ट होते हैं जिनकी हम उपेक्षा करते हैं जैसे :—

1. साधारण दिनचर्या से थकावट ।
2. ताकत की कमी।
3. शरीर का दुखना।
4. अपने पापको स्वस्थ महसूस न करना।
5. आंखों की रोशनी का धीरे-धीरे कम होना।

इन बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है क्योंकि जब जब डाईबिटीज का कंट्रोल बिगड़ जाता है तभी ये लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

मुख्यतः डाईबिटीज एक नहीं बल्कि दो प्रकार की होती है, जो निम्नलिखित है:—

- (1) **टाइप—1** :—यह कम उम्र में होती है। इसमें रोगी का वजन काफी कम हो जाता है। इस रोग के लक्षण मालूम होने लगते हैं।
- (2) **टाइप—2** :—यह अधिक उम्र के लोगों को यानी 40 वर्ष में या उससे ऊपर के लोगों को होती है। इसमें रोगी का वजन नार्मल से अधिक होता है। विशेषकर इस टाइप की बीमारी 95% लोगों को होती है।

जो रोगी मोटे होते हैं उन्हें अपना भार कम करना जरूरी होता है। वास्तव में रोगी का वजन उसकी लम्बाई, उम्र व शरीर की बनावट पर निर्भर होना चाहिये। दूसरे शब्दों में डाईबिटीज के रोगियों को सही वजन रखना उतना ही जरूरी है जितना की ब्लड शुगर।

रोगी चिकित्सा के अलावा स्वयं भी अपनी देखभाल कर सकता है जिसमें मुख्यतः निम्नलिखित हैं :—

1. समय-समय पर अपना वजन लें। ज्यादा नहीं तो हर महीने अवश्य ही वजन लेना चाहिये।
2. रोगी को आवश्यकतानुसार अपना वजन बढ़ाना या घटाना चाहिये। इसी प्रकार खाने की मात्रा को भी नियंत्रित करना चाहिये।
3. यदि वजन लगातार घटता जा रहा हो तो हो सकता है कि डाईबिटीज कन्ट्रोल ठीक नहीं हो व खून में शूगर की मात्रा अधिक हो, खाना खुराक कम हो।
4. कोई अन्य बीमारी हो या उसको संभावना हो जैसे टी. बी. या ब्लड प्रेशर।
5. शारीरिक परिश्रम अधिक हो।

इन सब बातों का ध्यान रखकर अपने आपको ठीक करना जरूरी है जो रोगी स्वयं ही कर सकता है।

यहां यह बताना बहुत आवश्यक है कि रोगी को समय-समय पर खून में शूगर की जांच अवश्य कर लेनी चाहिए क्योंकि शूगर के अधिक होने से शरीर के किसी भी अंग को नुकसान पहुंच सकता है।

कई रोगी सोचते हैं कि ब्लड शूगर की जांच एक ही दिन में दो बार या तीन बार क्यों की जाती है? इसका मुख्य कारण है कि भूखे पेट टेस्ट करने से डाईबिटीज रोग की पुष्टि होती है व चूंकि खाने के दो घंटे के बाद ब्लड शूगर की मात्रा बढ़ जाती है इसलिए इसके कन्ट्रोल की जांच के लिए दूसरा टेस्ट खाने के बाद करना जरूरी हो जाता है। इसलिये ब्लड शूगर की हमेशा दो दफा जांच जरूरी होती है।

साधारणतया यह टेस्ट तीन प्रकार के होते हैं यानी :

1. भूखे पेट

2. खाने के बाद
3. किसी भी समय

नार्मल ब्लड शुगर जांच की रिपोर्ट निम्नलिखित होती है :

भूखे पेट	खाने के बाद
नार्मल 110 मि. ग्रा. %	140 मि. ग्रा.

डाईबिटीज, 149 मि. ग्रा. % 180,,

संक्षेप में इलाज के अलावा ब्लड शुगर टेस्ट का समय-समय पर करवाना बहुत आवश्यक है।

डाईबिटीज के रोगियों के लिए इस बिमारी का इलाज करवाना ही जरूरी नहीं है बल्कि खाने-पीने की चीजों का ख्याल रखना भी बहुत जरूरी है क्योंकि भोजन या आहार का इसमें एक विशेष महत्व है।

डाईबिटीज के रोगियों को कई दफा गलत धारणा भी हो जाती है जैसे :—

1. मीठा ज्यादा खाने लगे हैं,
2. खाने में पूरी सावधानियां लेने पर भी शुगर की मात्रा बढ़ गई है,
3. यदि खाना कम कर दें तो क्या इन्सूलिन की मात्रा ठीक हो जाएगी या उन्हें डाईबिटीज क्यों हो गई उन्होंने तो मीठा खाना बिल्कुल ही छोड़ दिया है।

इन सबसे ऐसा लगता है कि डाईबिटीज के रोगी यह समझते हैं कि यह रोग मीठा खाने से ही होता है मगर यह सच नहीं है। सच तो यह है कि यह बीमारी ब्लड शुगर में इन्सूलिन की कमी के कारण होती है जैसा कि मैंने शुरु में इसके कारणों में लिखा है। कुछ लोग अपना ब्लड टैस्ट इसलिए जानबूझ कर नहीं कराते कि उनको मीठा, आइसक्रीम आदि खाने की मनाही कर दी जायेगी।

यह सच है कि संतुलित खाना इस बिमारी को कन्ट्रोल करने में बहुत मदद करता है।

वास्तव में डाईबिटीज के रोगी को किसी अन्य व्यक्ति के बराबर ही अच्छा व स्वादिष्ट भोजन मिलना चाहिए क्योंकि भोजन से ऊर्जा, पौष्टिक तत्व, स्वाद व संतुष्टि आदि मिलती है।

अब प्रश्न उठता है कि संतुलित भोजन क्या है व उसमें क्या-क्या शामिल होना चाहिये। संतुलित भोजन वही होता है जिसमें ठीक मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फैट (घी, तेल, मक्खन) व विटामिन शामिल हों। यह सब चीजें निम्नलिखित पदार्थों से मिलती हैं।

(1) अनाज जिसमें गेहूं, जौ, मक्का, बाजरा व चावल होते हैं। ये पदार्थ मुख्यतः कार्बो-हाइड्रेट व कुछ अंश में प्रोटीन देते हैं। इन सब में 100 ग्राम से 350 ग्राम क्लोरीज होती है।

गेहूं में सोयाबीन व चना मिला लिया जाये तो प्रोटीन की मात्रा बढ़ जाती है।

(2) दालें-अरहर, उरद, मूंग, चना, मटर, राजमा व लोबिया। इससे भी 100-350 ग्राम कैलोरीज मिलती है और प्रोटीन की मात्रा 20 ग्राम से 100 ग्राम होती है।

(3) दूध या दूध से बनी वस्तुएं-इसमें स्टार्च, प्रोटीन और फैट एक उचित अनुपात में होते हैं। डाइबिटीज के रोगी इसको दही, लस्सी, खीर, पनीर आदि के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। भैंस, गाय का दूध मलाई निकालकर प्रयोग करना चाहिए।

(4) सब्जियां- इनमें कुछ मात्रा में स्टार्च, प्रोटीन और विटामिन सबसे ज्यादा होते हैं। इसमें कच्ची सब्जियां जैसे स्लाद, खीरा ककड़ी, टमाटर, हरी प्याज, मूली आदि जरूरी है, जिसमें आमतौर पर 100 ग्राम में 20 से 25 कैलोरी होती है। हरी सब्जियों में पालक, मेथी, बथुआ, सरसों शलगम व बन्द गोभी आदि जिसमें 100 ग्राम में 30 कैलोरीज होती है।

मौसमी सब्जियां, सर्दियों व गर्मियों की जिनमें 100 ग्राम में 35 कैलोरीज होती है।

इस बीमारी के रोगियों को आलू, अरबी, जिमिकन्द नहीं लेना चाहिए क्योंकि इसमें स्टार्च व कैलोरीज अधिक होती है।

कई लोग सोचते हैं कि डाइबिटीज के रोगियों को जमीन से पैदा हुई सब्जियां नहीं खानी चाहिये। उनकी यह धारणा गलत है और इस रोग के रोगी भी इनका प्रयोग उचित मात्रा में कर सकते हैं।

(5) फल—इनमें विटामिन्स व कार्बो हाइड्रेट मिलता है, डाइबिटीज के रोगी को कम कैलोरीज के फल जैसे खरबूजा, तरबूज, पपीता, संतरा आदि लेना चाहिए व इसका प्रयोग 250-400 ग्राम तक प्रतिदिन कर सकते हैं।

सेब, अमरूद, नाशपाती, खुमानी आदि 100-150 ग्राम तक प्रतिदिन ले सकते हैं।

ज्यादा कैलोरीज वाले फल जैसे केला, चीकू, अनार, अंगूर, लीची व आम जहां तक हो सके नहीं लेना चाहिये, क्योंकि इनमें कैलोरीज ज्यादा होती है।

(6) फैट (Fat)—घी, तेल इत्यादि। इनका प्रयोग बहुत कम करना चाहिए क्योंकि इनमें कार्बोहाइड्रेट की अपेक्षा कैलोरीज दुगुनी होती है। इसमें 9 कैलोरीज प्रति ग्राम होती है।

(7) गुड व चीनी—इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि इनके खाने से खून में शुगर एक दम बढ़ जाता है और इसके पचने में बहुत कम समय लगता है। इसलिए कम मीठे स्वाद का प्रयोग करना चाहिये जैसे फल शहद आदि।

एक औसतन आहार में 1500 कैलोरीज होनी चाहिये जो निम्न प्रकार है :—

प्रतिदिन—दूध	—500 मि०ली०
अंडा	—1
दाल	—60 ग्राम
बिस्कुट	—15 ग्राम

आटा	—80 ग्राम
सलाद की सब्जियां	—250 ग्राम
सब्जियां	—400 ग्राम
फल	—150 ग्राम
तेल	—15 ग्राम

इनको जरूरत के मुताबिक कम ज्यादा किया जा सकता है।

यहां यह बताना बहुत जरूरी है कि रोगी को अपना वजन व मोटापा बढ़ने नहीं देना चाहिए, क्योंकि यह इस बीमारी के लिए बहुत हानिकारक है। रोगी का भार रोगी की लम्बाई के अनुसार होना चाहिये।

रोगी को भोजन आदि का समय भी तय करना चाहिये, क्योंकि हर समय खाने से नुकसान होने का भय रहता है। गर्मियों में नीम्बू पानी, नमक की लस्सी, जीरे का पानी, फ्रूट जूस जैसे मोसमी, टमाटर, ठंडी काफी, कच्चे नारियल का पानी, कच्ची लस्सी आदि का प्रयोग लाभदायक है। ठंडाई, मीठी कौफी, फ्रूटी, माजा, शर्बत आदि नुकसान दायक है।

जहां तक इस बीमारी के इलाज का प्रश्न है रोगी को इसके बारे में पता चलते ही खून में शुगर का व अन्य टेस्ट करवाना चाहिए।

इसकी चिकित्सा के लिए मुख्यतः तीन प्रणाली हैं जैसे अंग्रेजी, आयुर्वेदी व होम्योपैथिक चिकित्सा। रोगी की चिकित्सा होम्योपैथिक द्वारा बहुत सरल है, क्योंकि इसकी चिकित्सा से दूसरा कोई साइडइफेक्ट नहीं होता है व इस चिकित्सा द्वारा रोगी के पूरी तरह से स्वस्थ होने की संभावना होती है।

लगातार इलाज व समय-समय पर टेस्ट करवाना रोगी के लिए अति आवश्यक है क्योंकि इसका संबंध सीधा दिल से है अतः यह एक जानलेवा बीमारी है और इसके इलाज आदि का विशेष ध्यान रखना अति आवश्यक है।

माह फरवरी 1992 में बल के मृत कार्मिक

माह फरवरी, 1992 में के. रि. पु. बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी. आर. पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक गोपालचन्द (ग्रुप. के. पिंजौर), लांस/नायक महादेव प्रसाद (53 बटा.), उ. नि. / रे. आ. रामसूरज भान (1 सिग.), ला. नायक/ ड्रा. कबीर हुसैन (96 बटा.), लां/ नायक कांति भाई (96 बटा.), कां. गिरधारी लाल (96 बटा.), कां/माली फूल चन्द (ग्रुप. के. नीमच), कां. सुभाष ठाकुर (4 बटा.), नायक मोहेन्द्र सिंह (आर. टी. सी.-3), कां. एस. डी. बर्मा (32 बटा.), उपाधीक्षक (एन. बी. दास) (54 बटा.), है. का. बिशन चन्द (37 बटा.) कां. श्याम लाल (131 अगज. बटा.), है० कां० दल बहादुर (66 बटा.),

कां. जी. एम. खान (66 बटा.), एवं स. उ. ने./रे. आ. राधव सिंह (3 सिंग. बटा.).

इन के अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार दिसंबर, 91 माह में 53 बटा. के कां. सुदेश कुमार तथा जनवरी, 92 माह में 126 बटा. के रंगरूट बी. लक्ष्मी पैथी एवं 25 बटा. के वाटर कैरियर परमानंद यादव की भी मृत्यु हुयी।

खेल समाचार संक्षिप्त में

शूटिंग

20 से 24 जनवरी, 1992 तक अजमेर में हुयी अखिल भारतीय ओपन सी. एल. बी. स्मारक राइफल शूटिंग चैंपियनशिप की ओवर आल चैंपियनशिप के. रि. पु. बल की टीम ने जीत ली। कमांडेंट टी. एस. ढिल्लन को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ शाट घोषित किया।

बास्केटबाल

18 से 25 जनवरी, 1992 तक त्रिवेंद्रम में हुयी राष्ट्रीय बास्केटबाल प्रतियोगिताओं में दिल्ली की टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। ज्ञातव्य है कि दिल्ली की टीम में के. रि. पु. बल के पांच खिलाड़ी शामिल हैं तथा बल के कोच श्री के. एस. चीमा टीम के कोच भी हैं। दिल्ली की टीम में खेलने वाले बल के खिलाड़ी हैं इन्स्पेक्टर जसमिंदर सिंह, इन्स्पेक्टर सुरेन्द्र सिंह, सब-इन्स्पेक्टर हरपाल सिंह, सब-इन्स्पेक्टर गुरेन्द्र सिंह तथा लांस नायक दलबीर सिंह।

कुश्ती

17 से 19 जनवरी, 1992 तक कलकत्ता में हुयी पश्चिम बंगाल राज्य कुश्ती चैंपियनशिप प्रतियोगिता की चैंपियनशिप के. रि. पु. बल की टीम ने जीत ली। उसने यह चैंपियनशिप 10 स्वर्ण, पांच रजत तथा पांच कांस्य पदक प्राप्त कर जीती।

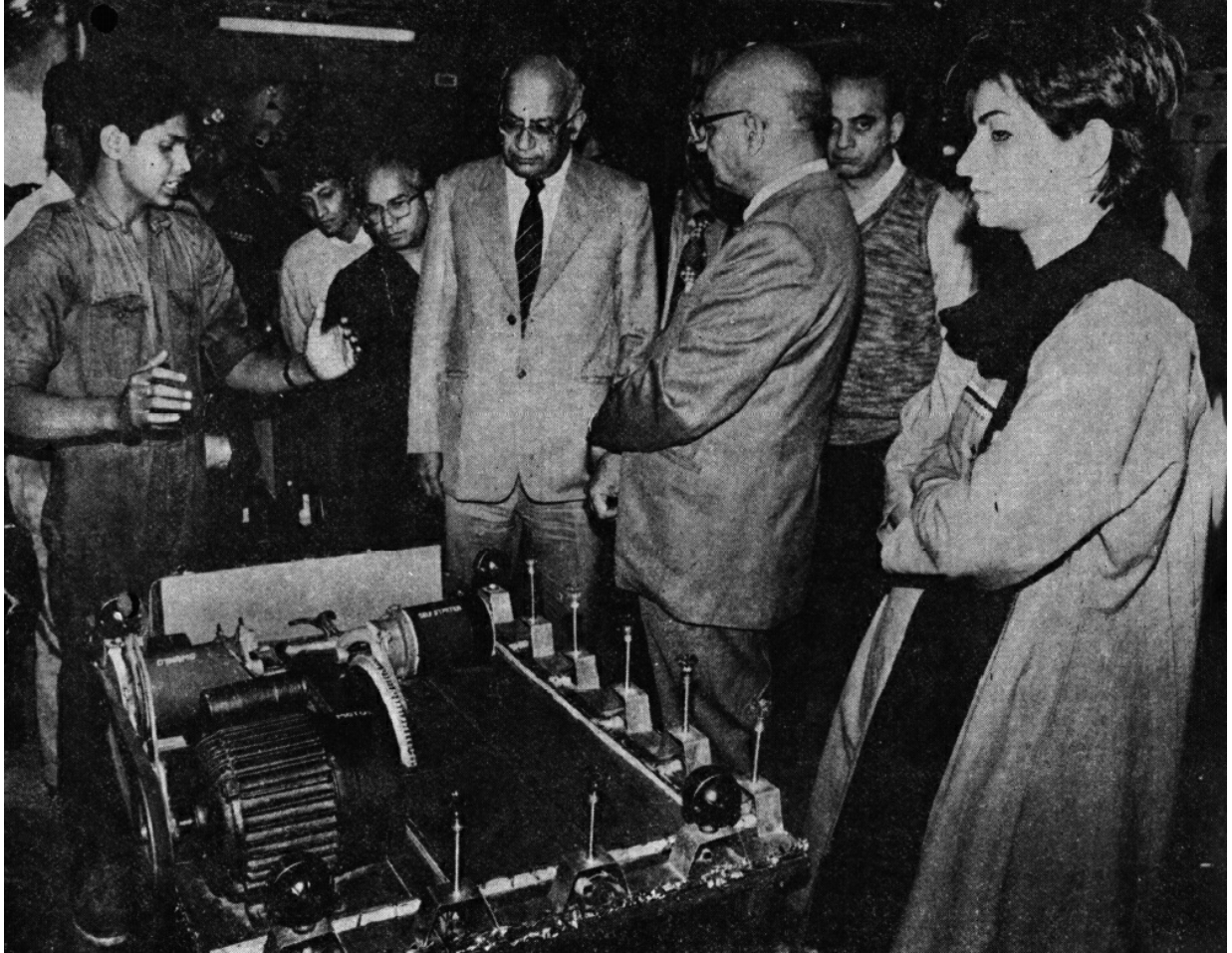
शूटिंग चैंपियनशिप

28 जनवरी से 2 फरवरी, 1992 तक नई दिल्ली के तुगलकाबाद शूटिंग रेन्ज हुई दिल्ली राज्य शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता में के. रि. पु. बल की टीम ने पांच स्वर्ण पदक जीते। इस प्रतियोगिता में दिल्ली की कई टीमों के 300 निशानेबाजों ने भाग लिया।

श्री टी. एस. ढिल्लन ने दो स्वर्ण तथा दो रजत पदक जीते, सब-इन्स्पेक्टर देवीसिंह ने एक स्वर्ण, लांस नायक दिलबाग सिंह ने एक रजत, कांस्टेबल अतुल प्रताप ने एक रजत, डा० श्रीमती एस० के० ढिल्लन ने एक रजत, नायक मीरा ने एक स्वर्ण, कांस्टेबल किरन पंडालिया ने एक स्वर्ण व एक कांस्य, ला० नायक निर्मल रानी ने एक

रजत, नायक टी. दास ने एक रजत, कांस्टेबल प्यारी पुरती ने एक कांस्य तथा लांस नायक कनक लता ने एक कांस्य पदक जीता।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में अपर महानिदेशक



श्री सी० एस० द्विवेदी अपर महानिदेशक पुरस्कार वितरण के बाद ओ० प्र० संस्थान का निरीक्षण करते हुए।



गणतन्त्र दिवस के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ परेड का प्रदर्शन करने वाली के० रि० पु० बल की टुकड़ी के कमान्डर मनोज कुमार दुबे को रक्षा उत्पादन एवं आपूर्ति सचिव एन० रघुनाथ ट्राफी प्रदान करते हुए

पत्रिका सी० आर० पी० एफ० समाचार स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ ग्युजपेपर्स सेंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान	—	नई दिल्ली
2. प्रकाशन की आवधि	—	बर्ष में आठ बार
3. प्रिटर का नाम	—	ए. एन. शर्मा
4. नागरिकता	—	भारतीय
5. पता	—	ब्लॉक-I, सी.जी.प्रो. काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	—	उपयुक्त
7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता	—	उपयुक्त
8. उन लोगों के नाम व पते जो प्रत्येक वर्ष के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।	}	महानिदेशक, के० रि० पु० बल, ब्लॉक-I, सी० जी० प्रो० काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

मैं ए. एन. शर्मा एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं।

ह०

ए० एन० शर्मा
प्रकाशक के हस्ताक्षर

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

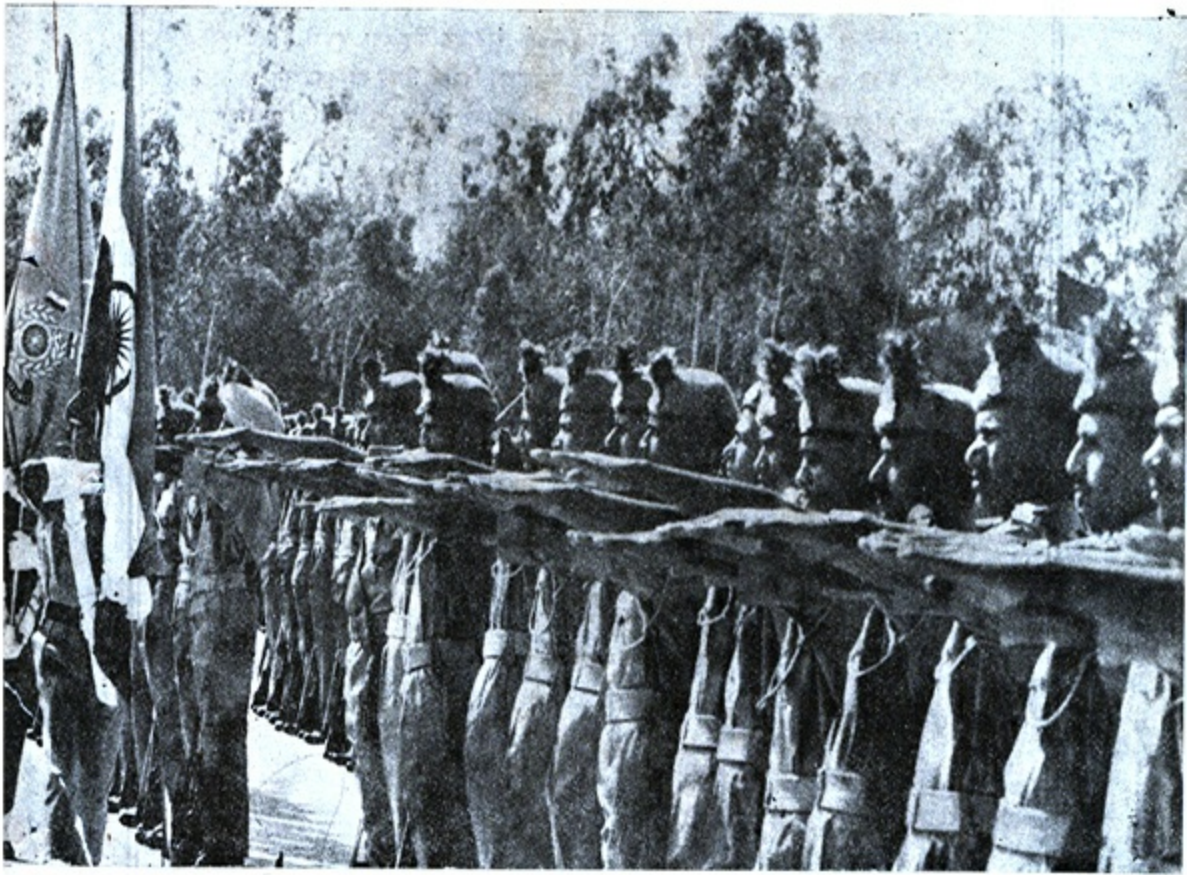
खंड—V

अंक—3

मूल्य—1.95 रुपये

31 मई, 1992

10 ज्येष्ठ, शक संवत् 1914



115 बटालियन के जवान देश के प्रति निष्ठा एवं कर्तव्य निर्वाह की शपथ लेते हुए।

छाया—सतीश खन्ना

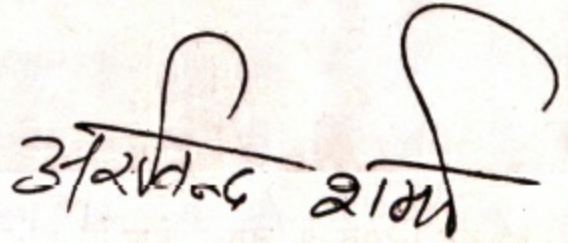
सम्पादकीय

21 मई आतंकवाद के विरुद्ध सतत् संघर्ष जारी रखने का प्रण लेने का दिवस है।

आज के दिन हमें सोचना है कि वे कौन से तत्व हैं जो हमारे समाज में सड़ांध पैदा कर उसे अन्दर ही अन्दर खाए जा रहे हैं। वे कौन लोग हैं जो राष्ट्रीय स्वाभिमान के सीने पर निर्ममता से गोलियां दाग रहे हैं। हमारे देश के सीने पर उभरे ये नासूर यदि मरहम और प्रेम के फाहों से नहीं भरते, तो देश प्रेम के नशतर इन्हें जड़ से भी उखाड़ सकते हैं। अपने ही किसी अंग पर स्वयं नशतर चलाना एक कष्टप्रद कार्य है। मगर कष्ट के भय से शरीर के किसी अंग को सड़ने नहीं दिया जा सकता। इससे पहले कि उस का जहर शरीर को विगलित कर दे, उसे काट कर फेंक देना जरूरी है। स्व० श्री राजीव गाँधी की प्रथम पुण्य तिथि पर आतंकवाद विरोधी दिवस का आयोजन इसी दिशा में एक कदम है।

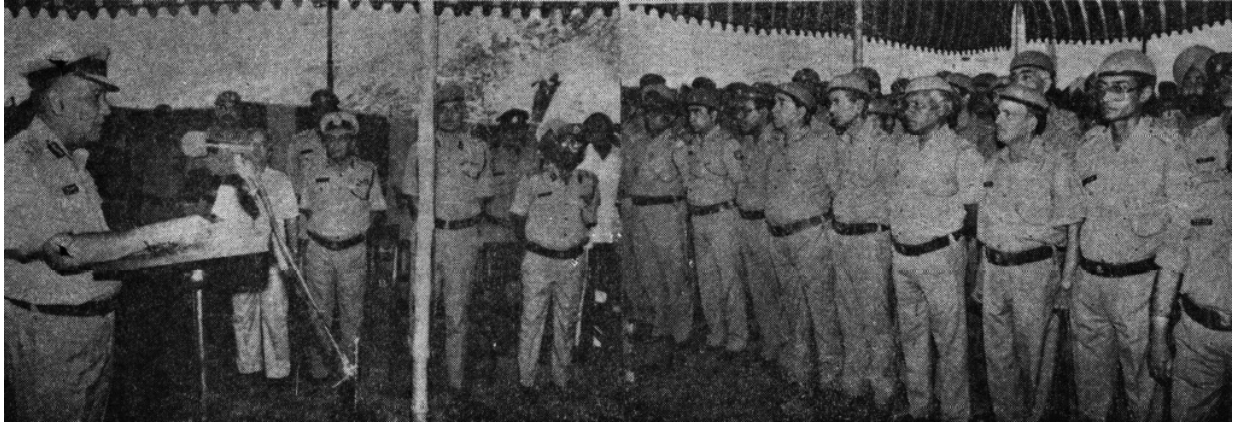
आतंकवाद निश्चित रूप से राष्ट्र की एक भयंकर समस्या है। इसी से जूझने के लिए हमने अपने संकल्प को स्वर्गीय श्री राजीव गाँधी की पुण्य तिथि पर दोहराया है। मगर सारे राष्ट्र ने श्री राजीव गाँधी को श्रद्धांजलि देते समय आतंकवाद से लड़ने का जो संकल्प लिया, वह सार्थक तभी सिद्ध हो सकेगा, जब सम्पूर्ण भारतीय जनमानस हृदय से लोकतन्त्रवादी बनते हुए इसके विरुद्ध उठ खड़ा हो। जनमानस को अपनी भीरुता, असुरक्षा की भावना, संकीर्णता, अविश्वास तथा स्वार्थपरता को तिलांजलि देनी होगी।

देश के सुरक्षा बलों पर देश में शांति व्यवस्था बनाये रखने की ही जिम्मेदारी नहीं है, उन्हें जनता के हृदय से अविश्वास तथा असुरक्षा की भावना को दूर कर उसके अन्दर देश के सुरक्षा एवं शासन तन्त्र के प्रति विश्वास भी पैदा करना है। 21 मई को लिया गया संकल्प आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष में प्राण उत्कर्ष कर देने की प्रतिज्ञा को दोहराने के साथ-साथ हमें इस जिम्मेदारी की भी याद दिलाता है।



(अ० ना० शर्मा)

आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष का प्रण



महानिदेशालय के अधिकारियों एवं अन्य कार्मियों को आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष की शपथ दिलाते हुए अपर महानिदेशक श्री द्विवेदी।

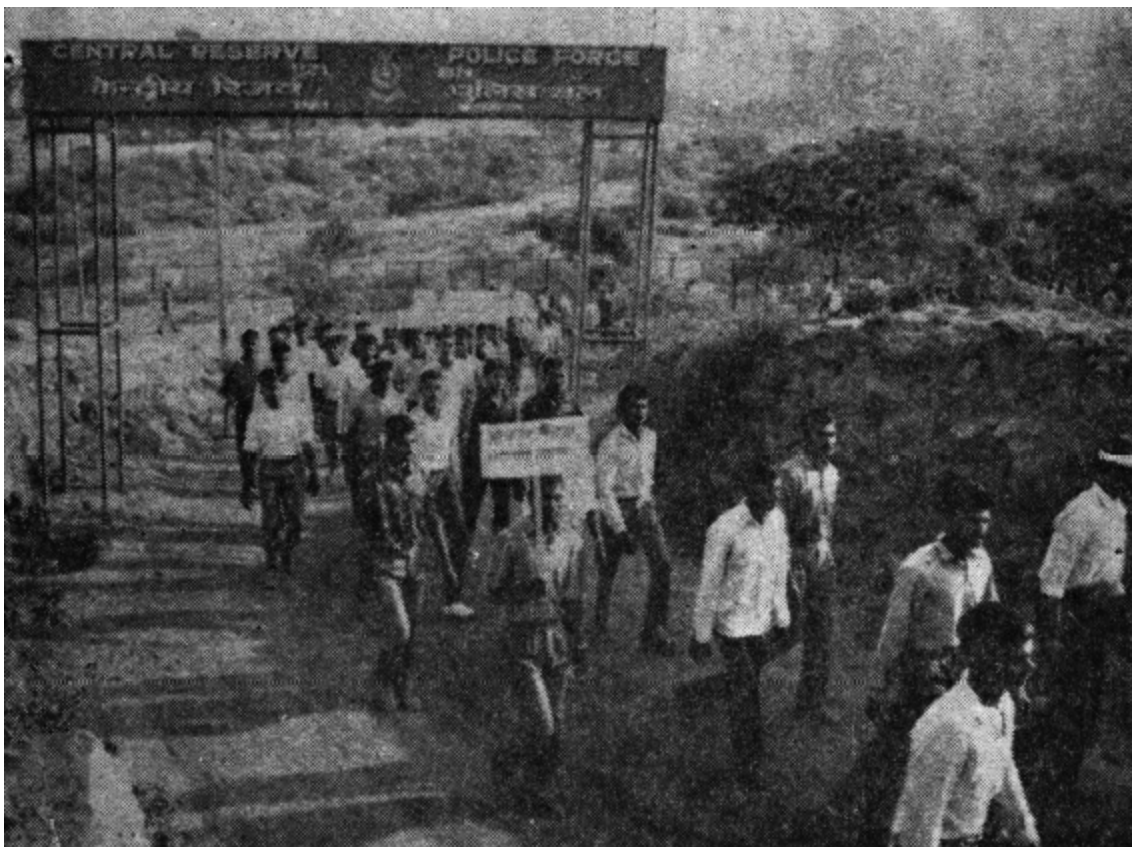
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों और अधिकारियों ने 21 मई, 92 को अपने मुख्यालय तथा अपनी अपनी यूनिटों में आतंकवाद को जड़ से समाप्त कर देने की अपनी प्रतिज्ञा को दोहराया।

स्वर्गीय श्री राजीव गाँधी की पुण्य तिथि 21 मई को सरकार द्वारा आतंकवाद विरोधी दिवस घोषित किए जाने के बाद के०रि०पु० बल के तमाम सदस्यों ने आज के दिन पुनः राष्ट्र सेवा में अपने प्राणों का बलिदान देने की प्रतिज्ञा ली।

जनता का ध्यान आतंकवाद की समस्या की ओर आकर्षित करने के लिए के०रि०पु० बल की विभिन्न इकाइयों द्वारा शांति मार्चों तथा विचार गोष्ठियों का आयोजन भी किया गया।

के०रि०पु० बल मुख्यालय में कार्मिकों को यह शपथ अपर महानिदेशक श्री सी.एस. द्विवेदी ने दिलाई, जबकि सेक्टर मुख्यालयों में यह शपथ पुलिस महानिरीक्षकों द्वारा दिलाई गई।

ज्ञातव्य है कि के०रि०पु० बल देश में आतंकवाद तथा देशद्रोही गतिविधियों से सीधे भिड़ने वाला सबसे बड़ा पुलिस बल है। आतंकवाद की बलिवेदी पर सर्वाधिक बलिदान इसी बल ने दिए हैं, और आतंकवाद के बढ़ते प्रभाव पर काबू पाने में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः आतंकवाद विरोधी दिवस का के०रि०पु० बल के सदस्यों के लिए विशेष महत्व है।

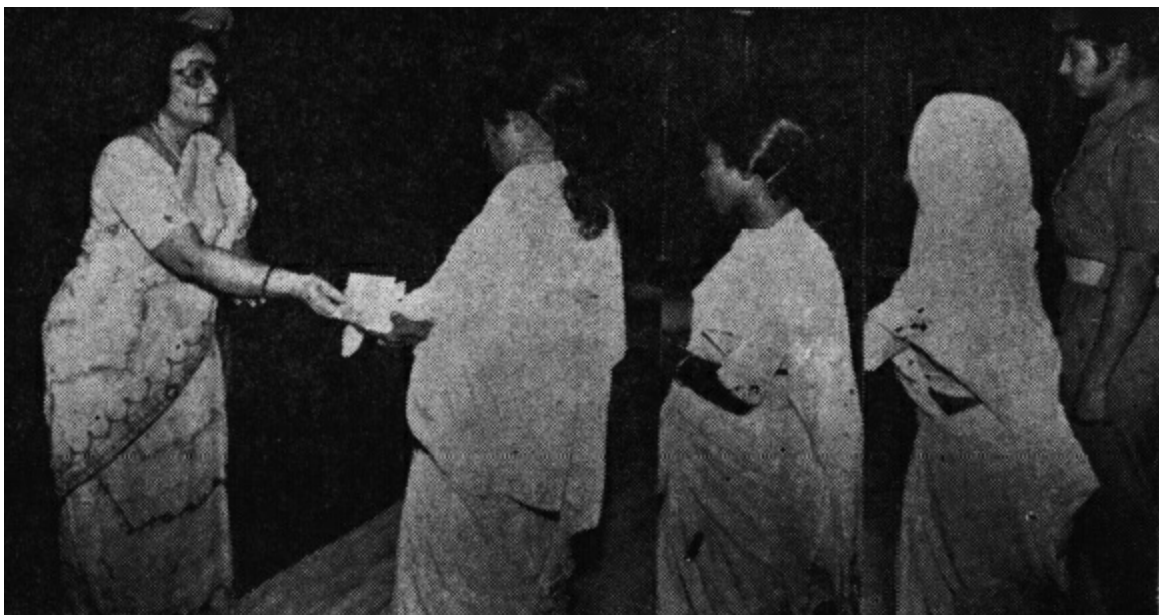


के० रि० पु० बल द्वारा नई दिल्ली में आयोजित शांति मार्च का एक दृश्य

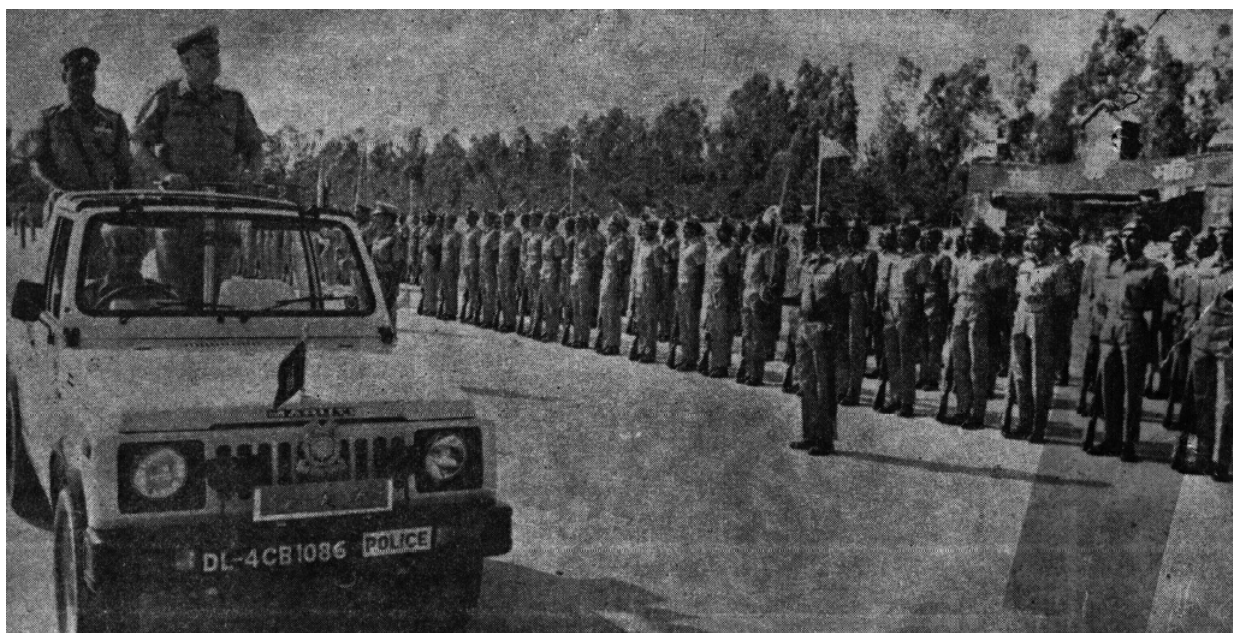
115 बटालियन की दीक्षांत परेड

के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री डी० पी० एन० सिंह ने रामपुर स्थित के० रि० पु० बल के ग्रुप केन्द्र में 25 मई, 1992 को नवगठित 115 बटालियन के 523 जवानों की दीक्षांत परेड की सलामी ली। अपने प्रशिक्षण को समाप्त कर बल के इन जवानों ने कर्तव्य के प्रति निष्ठा एवं देशभक्ति की शपथ ली। उपकमांडेंट निर्मल सिंह ने परेड का नेतृत्व किया, जबकि कमांडेंट अशोक मुंशी ने जवानों को शपथ दिलाई।

महानिदेशक महोदय ने कांस्टेबल गोपाल सिंह को सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी, विरेंद्र सिंह को सर्वश्रेष्ठ आउटडोर प्रशिक्षार्थी, रमेश थापा को सर्वश्रेष्ठ इनडोर प्रशिक्षार्थी तथा अजय शंकर व्यास को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के सम्मान भी प्रदान किए। सर्वोत्तम परेड के लिए बटालियन की “डी” कम्पनी को टाफी प्रदान की गई। इस मौके पर जवानों ने अनआर्म्ड काम्बेट का भी प्रदर्शन किया।



मृत जवानों की आश्रिताओं को अनुदान राशि के चेक भेंट करती हुई श्रीमती डी. पी. एन. सिंह



परेड का निरीक्षण करते हुए महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह।

इस मौके पर बोलते हुए श्री डी० पी० एन० सिंह ने बल के परिवार में शामिल हुए जवानों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि उन्होंने जिस कड़े परिश्रम के साथ अपना प्रशिक्षण सम्पूर्ण किया है उसका प्रदर्शन वे आगे अपने कर्तव्य निर्वह के दौरान भी करते रहेंगे। उन्होंने जवानों का आह्वान किया कि वे के० रि० पु० बल की गौरवशाली परंपराओं के अनुरूप अपनी शपथ की मर्यादा को बनाए रखें। ज्ञातव्य है कि 115 बटालियन 1 अप्रैल 1991 को अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री ए० के० कथूरिया की देख रेख में खड़ी की गई थी। इस बटालियन का उद्घाटन पुलिस उप

महानिरीक्षक पूर्वी सेक्टर श्री के०आर०के० प्रसाद ने 29 अप्रैल 1991 को किया था।
वर्तमान में श्री अशोक मुंशी इस बटालियन के कमांडेंट हैं।



परेड कमांडर श्री निर्मल सिंह

इस मौके पर श्रीमती डी० पी० एन० सिंह ने कर्तव्य पर मारे गए बल के तीन जवानों की विधवाओं को 2-2 लाख रुपये के चेक भेंट किए। ये जवान पंजाब में आतंकवादियों का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। ये चेक हवलदार मुरलीधर मंडल, लांसनायक सिलास कुजूर तथा सिपाही सुभाष सिंह यादव की विधवाओं को प्रदान किए गए।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 8 वीं बटालियन आतंकवादी गतिविधियों को नियंत्रण में करने के लिए पंजाब के लुधियाना शहर में तैनात है। 15 नवम्बर 91 को 11.30 बजे दिन में इस बटालियन की एक टुकड़ी हवलदार मुरलीधर मंडल की कमान में नाकाबन्दी तथा गश्त के लिए चली। यह टुकड़ी पंजाब पुलिस की एक गाड़ी से सफर कर रही थी जिसका चालक एक सिविलियन था। इस टुकड़ी को गांव सीड़ा, सत्तोवाल तथा चूहरपुर के इलाके में जाना था। जैसे ही गाड़ी सड़क के किनारे सिंचाई हेतु लगाए गए एक पाइप के ऊपर से गुजरी कि अचानक जबरदस्त विस्फोट हुआ और गाड़ी के टुकड़े-टुकड़े होकर दूर- दूर तक बिखर गये। इस जबरदस्त विस्फोट में हवलदार मुरलीधर मंडल, लांस नायक सिलास कुजूर तथा सिपाही सुभाष सिंह

यादव और सिविलियन चालक रत्तोराम को तत्काल मृत्यु हो गई ।

श्री डी०पी०एन० सिंह रामपुर ग्रुप केंद्र में चल रहे परिवार कल्याण केन्द्र को देखने भी गए साथ ही उन्होंने ग्रुप केंद्र में उत्तर प्रदेश पुलिस की शाखा पी.ए.सी. के लिए चलाए जा रहे छठे आतंकवाद विरोधी प्रशिक्षण कोर्स को भी देखा । बल के तत्वावधान में चलाए जा रहे इस 15 दिवसीय कोर्स में उत्तर प्रदेश पुलिस के जवानों को आधुनिक अस्त्रों शस्त्रों के परिचालन का प्रशिक्षण तथा आतंकवाद निरोधी उपायों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।



महानिदेशक महोदय को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए 115 बटालियन के कमांडेंट अशोक मुंशी

विचार सुधा

भविष्य में हमें तभी कोई उम्मीद दिला सकता है, जब हम कदम मिलाकर चलना सीखें ।

आलोचना से कभी डरना नहीं चाहिए ।

जीवन सदैव समझौते के लिए विवश करता है ।

सही तरीके से हारना, गलत तरीके से जीतने से कहीं अच्छा है ।

पारेवतेन आनेवाये है, निरंतरता भी आवश्यक है ।
जैसे डर झूठ का साथी है, वैसे ही सत्य निडरता के साथ चलता है ।
आजादी और अधिकार, जिम्मेदारी बढ़ा देते हैं ।
सैकड़ों गलतियों के बावजूद भी महानता, महानता ही रहती है ।

राजपत्रित अधिकारियों के 22 वें बैच की दीक्षांत परेड



इन्दौर विषयों के लिए सुश्री नीतू थताई को ट्राफी प्रदान करते हुए महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की माउंट आबू स्थित आंतरिक सुरक्षा अकादमी में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 22वें बैच के 33 अधिकारियों की भव्य दीक्षांत परेड 7 अप्रैल 1992 को संपन्न हुई ।

के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने परेड को सलामी ली तथा सर्वश्रेष्ठ कैडेटों को पुरस्कार वितरित किए।

इस मौके पर बोलते हुए बल के महानिदेशक श्री सिंह ने कहा कि 52 वर्षीय के० रि० पु० बल राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की एक मजबूत कड़ी है। उन्होंने कहा कि किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए के० रि० पु० बल एक राष्ट्रीय शस्त्र है। उन्होंने कहा कि डेढ़ लाख की सदस्य संख्या वाला यह बल एक लघु भारत है, जिसमें भारत के प्रत्येक हिस्से का उचित प्रतिनिधित्व है।

श्री सिंह ने कहा कि हमारी अंतिम परीक्षा जनता के समक्ष ही होती है, जोकि हमारी सब से बड़ी मालिक है। हम देश में कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए पूरी तरह समर्पित हैं, हमें चाहे जहां भी, जब भी बुलाया जाए। जो कैडेट पुरस्कार नहीं जीत पाए उन्हें संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन तेज दौड़ नहीं मैराथन है, इस के लिए केवल प्रतिभा की नहीं अपितु बम्बे कार्यकाल में सम्मान अर्जित करने के लिए स्फूर्ति तथा कर्तव्य के प्रति अनथक सजगता की आवश्यक है।

इससे पूर्व श्री सिंह ने प्रशिक्षण के दौरान विशिष्ट उपलब्धियां हासिल करने वाले कैडेटों को पुरस्कार वितरित किए। सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी के लिए सहायक कमांडेन्ट विजय कुमार को स्वार्ड ऑफ आनर, इनडोर विषयों विषयों एवं वाद विवाद के लिए अकेली महिला सहायक कमांडेन्ट नीतू थताई, शूटिंग के लिए विजय कुमार, आउटडोर विषय तथा ड्रिल के लिए अनिल कुमार, आयुद्ध प्रशिक्षण के लिए ज्ञानेन्द्र कुमार, शारीरिक प्रशिक्षण तथा पर्वतारोहण के लिए डी. पी. उपाध्याय, अनआर्म्ड काम्बेट कोर्स के लिए कर्म भूटिया तथा खेलों के लिए सुरेन्द्र सिंह को पुरस्कार प्रदान किए गए।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल केंद्रीय जोखिम निधि से माह अप्रैल, 92 में मृत्यु के 20 मामलों में कुल सात लाख रुपए देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रत्येक मामले में 10,000 रुपए केन्द्रीय कल्याण निधि तथा सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के 6 मामलों में कुल 90,000 रुपए देने स्वीकृत किये गए।

प्रस्तावित के.रि.पु. बल आवासीय काम्पलैक्स

माडल बैरक का उद्घाटन



19वीं बटालियन स्थल पर अधिकारी मैस का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह।

नई दिल्ली नेहरू नगर में के०रि०पु०बल के कार्मिकों के आवास के लिए प्रस्तावित के०रि०पु० बल काम्पलैक्स की एक माडल बैरक का उद्घाटन 18 मई, 1992 को के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने किया। नेहरू नगर में 8.35 लाख रुपए में दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा प्राप्त .7 एकड़ भूखण्ड पर इस आवासीय काम्पलैक्स का निर्माण केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के सहयोग से किया जाएगा। वर्तमान में इस भूखंड पर माडल बैरक तथा नलकूप का निर्माण बल की 25 बटालियन के कार्मिकों ने किया है। स्थल की घेराबन्दी का कार्य केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग कर रहा है।

18 मई को ही बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने महरौली स्थित 19 बटालियन स्थल पर एक वी.आई.पी. आवासीय खंड तथा अधिकारी मैस का भी उद्घाटन किया।

ज्ञातव्य है कि बल के कार्मिकों की अधिकांश संख्या समुचित आवासों के आभाव में तम्बुओं में रहती है, जिसके कारण उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इन आवासीय योजनाओं से दिल्ली स्थित कार्मिकों की आवासीय समस्याओं से कुछ हद तक निबटा जा सकेगा।

माह अप्रैल, 1992 में बल के मृत कार्मिक

के०रि०पु०बल के निम्न कार्मिकों की माह अप्रैल, 92 में मृत्यु हुयी, सी० आर० पी० एफ० समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक बेनदयोट मिंज (28 बटा.), कां. जायन्ना (95 बटा.), नायक रघुबीर सिंह (36

बटा.), बारबर एम० टी० सावले (27 बटा.), रंगरूट डी० एन० बिन्जेंद्र (110 बटा.), सफाई कर्मचारी साकारी बाई (ग्रु०के०-2 अजमेर), इन्सपेक्टर एस० एस० भट्टी (122 बटा.), सब इन्सपेक्टर (मि.) दीवान सिंह (महानिरीक्षक स्पेशल सेक्टर कार्यालय), सब इन्सपेक्टर वी.एम. जानारकर (44 बटा०), लां/नायक मोतीराम (113 बटा.), स. उ. नि. (रे. आ.) विजय त्रिकी (2 सिग.), नायक देवी दत्त (4 बटा.), सब इन्सपेक्टर नरवीर सिंह (53 बटा.), है. कां० ऋषी राम पांडेय (53 बटा.), कां० अनंता कुमार दास (53 बटा.), नायक/रे० आ० सज्जन कुमार (5 सिग०) कां. संता राम (96 बटा.), कां० एच० एन० शिवानन्दा (96 बटा.), कां. एस० देवेनधन (28 बटा.), कां० जे०सी० नागपुरे (64 बटा०) तथा कां. विजय कुमार (16 बटा.),

इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार जुलाई, 91 में 121 बटालियन के रंगरूट जी० वेंकटेश्वर की भी मृत्यु हुयी।

आर० ए० एफ० अधिकारियों का कोर्स



कोर्स में भाग लेने वाले अधिकारी महानिरीक्षक (परिचालन एवं प्रशिक्षण) श्री आर. के. शर्मा एवं कोर्स संचालित करने वाले शिक्षाविदों के साथ ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के तत्वावधान में गठित रेपिड एक्शन फोर्स के उप कमांडेंट तथा द्वितीय कमान अधिकारी स्तर के अधिकारियों के लिए सामाजिक स्थितियों एवं जागरूकता विषय पर एक पांच दिवसीय कोर्स का उद्घाटन 27 अप्रैल, 92 को बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने किया।

रोहिणी स्थित राष्ट्रीय अपराध शास्त्र एवं विधि विज्ञान संस्थान द्वारा डा० (श्रीमती)

एस. सान्याल के निदेशन में चलाए जाने वाले इस कोर्स का उद्घाटन करते हुए श्री सिंह ने कोर्स में भाग ले रहे अधिकारियों का आह्वान किया कि वे अपने अन्दर प्रेरणा, उचित रवैये तथा तकनीकी दक्षता की भावना को बढ़ाएं, तभी इस तरह के कोर्स सार्थक होंगे।

श्री सिंह ने रेपिड एक्शन फोर्स के गठन के कारणों एवं उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस फोर्स के गठन का एक मुख्य कारण राज्य स्तर पर उचित मात्रा में पुलिस बलों का उपलब्ध न होना, दक्ष कर्मियों की कमी तथा पुलिस बलों की गतिशीलता में कमी आदि है। इसके अतिरिक्त उन का कहना था कि पुलिस बल का, पूर्वाग्रहों से ऊपर राष्ट्रहित में एक संतुलित स्वरूप होना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इस पांच दिवसीय कोर्स में अपने अपने विषयों के विशेषज्ञ शिक्षाशास्त्रियों एवं विद्वानों ने “सामाजिक स्थितियां एवं जागरूकता” के विभिन्न पहलुओं से अधिकारियों को अवगत कराया।

के.रि.पु. बल ने 308 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अप्रैल, 1992 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 308 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इन में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

इस दौरान हुयी 121 मुठभेड़ों में 57 आतंकवादी मारे गए तथा तीन गंभीर रूप से घायल हुए।

मारे गये आतंकवादियों में बब्बर खालसा गुट का “बी” श्रेणी का मंगल सिंह अंजाम उर्फ गद्दर, खालिस्तान कमांडो फोर्स (जफ्फरवाल गुट) का एरिया कमांडर बूटा सिंह, भिन्दरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान (मनोचल गुट) का स्वयंभू ले० जन० परगट सिंह, खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजावर) का ले० जनरल सुरेन्द्र सिंह उर्फ मन्ना उर्फ साहिब तथा स्वयंभू ले० जनरल देवेन्द्र सिंह व बिज बेहरा की अल जहद फोर्स का एरिया कमांडर फिरदौस वानी उर्फ फिद्दा शामिल है।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 92 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में 27 ए. के. 47 राइफलें, 6 ए० के० 56 राइफलें, 15 पिस्तौलें, 11 रायफलें, तीन माउजर, एक जी. पी. एम. जी, दो राकेट लांचर एक थामसन गन. एक ए. के 54 राइफल तथा एक गन ग्रेनेड लांचर सहित भारी मात्रा में सजीव गोली बारूद भी शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के आठ जवान वीर गति को प्राप्त हुए तथा 25 गंभीर रूप से घायल हुए।

16वीं इंदिरा स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता

के०रि०पु० बल ने खिताब जीता



बल की खिताब जीतने वाली टीम राज्यपाल के सलाहकार श्री बी०जे० हिरजी तथा अन्य अधिकारियों के साथ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 30 मार्च 1992 को जम्मू में हुए एक रोमांचक एवं संघर्षपूर्ण मुकाबले में सीमा सुरक्षा बल को 2-0 से हरा कर 16वीं इंदिरा स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता जीत ली। के. रि. पु. बल ने मध्यांतर से पूर्व व बाद में एक-एक गोल कर सीमा सुरक्षा बल को सकंते में डाल दिया और हाफ टाइम के बाद गोल करने के उस के हर प्रयास को विफल कर दिया। यह के० रि० पु० बल की एक उल्लेखनीय सफलता है।

खचाखच भरे मौलाना आजाद स्टेडियम में दोनों टीमों ने अच्छे खेल का प्रदर्शन कर बराबर दर्शकों में उत्तेजना को बनाए रखा, मगर 27वें मिनट में तनवीर जमाल ने एक पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदल कर के० रि० पु० बल की टीम को विजय की ओर धकेल दिया।

खेल समाप्त होने के कुछ क्षणों पूर्व ही सेन्टल फारवर्ड जावेद हबीब ने एक पास को खूबसूरती के साथ गोल में तब्दील कर दर्शकों की उत्तेजना को चरम-सीमा पर पहुंचा दिया।

इस मौके पर मुख्य आतिथे के रूप में उपास्थित राज्यपाल के सलाहकार श्री बी. जे. हिरजी ने बल की टीम को जी. टी. सी. चांसलर ट्राफी प्रदान की। रनर अप ट्राफी सीमा सुरक्षा बल को प्रदान की गई। राजस्थान फर्टिलाइजर्स कारपोरेशन द्वारा प्रायोजित एक अन्य ट्राफी भी बल की टीम को प्रदान की गई, उसी प्रकार जम्मू कश्मीर पर्यटन विभाग द्वारा प्रायोजित ट्राफी सीमा सुरक्षा बल को प्रदान की गई।

नीति वाक्य

नेता की अदूरदर्शिता अक्षम्य है

बन्द दिमाग तर्क के काबिल नहीं होते हैं।

हमारा मूल्यांकन परिणामों से होता है।

भाषण देने की अपेक्षा आदर्श प्रस्तुत करना अधिक उपयुक्त है।

—संकलन—सिपाही रामसिंह

127 बटालियन ने चैम्पियनशिप जीती

गांधीनगर ग्रुप केन्द्र में 16 अप्रैल से आयोजित द्वितीय इंटर सेक्टर क्रास कंट्री टूर्नामेंट की चैम्पियनशिप स्पेशल सेक्टर ने जीत ली।

प्रतियोगिता का उद्घाटन उप-महानिरीक्षक के०रि०पु० बल अजमेर श्री आर. एम. एस. बरार ने किया, जब कि समापन समारोह के अवसर पर गुजरात के पुलिस महानिरीक्षक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये।

इस प्रतियोगिता में उत्तरी, पूर्वी, उत्तर पूर्वी, दक्षिणी, केंद्रीय, स्पेशल, बिहार सेक्टर तथा उत्तर पश्चिम जोन की टीमों ने भाग लिया।

स्पेशल सेक्टर की टीम ने गत वर्ष की विजेता उत्तर पश्चिमी टीम को एक बड़े अंतराल ने हरा दिया। स्पेशल सेक्टर की टीम में शामिल 127 बटालियन के रंगरूट जवानों के कौशल ने सब को हैरत में डाल दिया। स्पेशल सेक्टर की टीम के 9 घावकों में से सात 127 बटालियन के थे।

के०रि०पु० बल ने जालिम सिंह स्मारक स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता जीती

एक दिलचस्प तथा संघर्षपूर्ण मुकाबले में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने टाई ब्रेकर में पांच के मुकाबले छः गोल कर भारतीय वायु सेना को पराजित कर जालिम सिंह स्मारक स्वर्णकप हाकी प्रतियोगिता जीत ली।

रेणुकोट उत्तर प्रदेश में हुयी इस प्रतियोगिता का स्वर्ण कप के.रि.पु. बल ने

लगातार दूसरी बार जीता है।

के० रि० पु० बल तथा वायु सेना के अतिरिक्त इस प्रतियोगिता में ई० एम० ई० जालंधर, ए० एस० सी०, सीमा सुरक्षा बल (जालंधर), इफको, दिल्ली, बिहार पुलिस, रांची—XI तथा रेणुकोट—XI की टीमों ने भी भाग लिया।

हिन्दी कार्यशाला

ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम में 20 से 26 मार्च, 1992 तक 6 दिवसीय हिन्दी कार्यशाला चलाई गई। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री महेन्द्र प्रसाद, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, के० रि० पु० बल, पल्लिपुरम द्वारा दीप जलाकर किया गया। इस कार्यशाला में ग्रुप केन्द्र, र० प्र० केन्द्र-3 तथा 110 बटा० के कुल 30 कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री महेन्द्र प्रसाद अपर-पुलिस उप-महानिरीक्षक ने इस अवसर पर बोलते हुए सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण बदलने की जरूरत पर जोर दिया।

हिन्दी कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य बताते हुए उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य किसी को हिन्दी सिखाना नहीं है, बल्कि जिन कार्मिकों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान पहले से ही प्राप्त है और जिन्हें हिन्दी लिखने में मुश्किलें आती हैं इस कार्यशाला के जरिये उनकी ऐसी मुश्किलें दूर करने का प्रयास किया जाता है तथा राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए क्या-क्या संवैधानिक व्यवस्थाएं हैं, इसका ज्ञान उन्हें कराया जाता है। उन्होंने सरल व सुबोध भाषा के प्रयोग तथा नवीन तकनीकी नामों व शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी में लिखने की सलाह दी।

कार्यशाला के अंत में एक मूल्यांकन परीक्षा का भी आयोजन किया गया जिसमें करीब 30 कर्मचारियों ने भाग लिया और सभी प्रतियोगी उत्तीर्ण हुए।

फुरसत के लिए

अध्यापक 'क्या कोई बच्चा गुजराती बोल सकता है ?'

'जी' मैं बोल सकता हूं' एक बच्चे ने कहा।

'शाबाश ! बोल कर दिखायो।'

'गजराती।'

बच्चा रो रहा था। पिता बोले: 'बेटे, रोते नहीं। बहादुर लोग तो गोली लगने पर भी नहीं रोते।'

'लेकिन उन्हें गोली लगने के बाद रोने का समय ही कहां मिलता है,' बच्चे ने कहा।

पत्नी: 'यदि तुम साड़ी पहन कर घर में रहो तो क्या होगा?'

‘पाते: ‘कुछ भी नहीं।’

पत्नी: ‘क्यों?’

पति: ‘क्योंकि मैं घर के बर्तन और कपड़े आज भी धोता हूँ और तब भी घोता रहूँगा।’

अध्यापक ने कहा: ‘तुम आज फिर देर से स्कूल पाए।’

छात्र बोला: क्या करूँ मास्टर जी, मेरी बस अक्सर देर से आती है।’

मास्टर जी ने सलाह दी, ‘जिस दिन तुम्हारी बस देर से आए, उस दिन उससे पहली वाली बस से आ जाया करो’

मां कह रही थी कि यह दलिया खाओ। बच्चा कह रहा था—नहीं खाऊँगा । आखिर मां ने धमकी दी: अगर तुम दलिया नहीं खाओगे तो मैं पुलिसवाले को बुला लूँगी।

बेटा बोला: ‘ममी, यह दलिया इतना खराब है कि पुलिस वाला भी नहीं खाएगा’

हथियारों की दुकान पर एक औरत ने कहा: ‘मुझे एक रिवाल्वर चाहिए।’

दुकानदार ने एक रिवाल्वर दिखाते हुए कहा: ‘यह बहुत बढ़िया रिवाल्वर है। आटोमैटिक है। एक साथ छह गोलियां चलती हैं।’

औरत कुछ चिढ़ कर बोली ‘आप क्या समझते हैं कि मेरे छह पति हैं?’

एक साहब ने एक रेस्तरां में जा कर दो अंडे और चाय मंगाई। खाने-पीने के बाद बिल आया। दो अंडों के दस रुपये लगा रखे थे। वेटर से पूछा: ‘क्यों भई, इधर क्या अंडे बहुत मुश्किल से मिलते हैं?’

वेटर बोला: ‘जी नहीं, लेकिन आप जैसे लोग बड़ी मुश्किल से मिलते हैं।’

—संकलन
सिपाही अशोक कुमार
महानिदेशालय

तुम धरा के अमर पुत्र हो

तुम धरा के अमर पुत्र हो, सदा रहेगा तेरा नाम ।

के. रि. पु. बल के प्रहरी जग में, गाते हैं तेरा जयगान ।

पग-पग काटें बिछे हों लेकिन, चलना चलते जाना है।

निष्कंटक पथ बना कर अपना, आगे बढ़ते जाना है।

राष्ट्र-भावना, दृढ़-शक्ति का भरा है तुझमें अतुल उत्साह ।

होवे न खंडित बल की एकता, अनुशासन, आचरण प्रवाह ।

काश्मीर की घाटी और पंजाब प्रदेश है तुझे बुलाता ।

पूर्वांचल में असम सदा ही, तेरा जय-जयगान सुनाता ।
फैला भ्रष्टाचार देश में, कर्मवाद से करो कल्याण ।
निज शक्ति और सेवा-भक्ति का नित रखना प्रतिपल ध्यान ।
सच्ची लगन व अथक परिश्रम, प्रहरी के गुण होते हैं ।
जागरूक हो, शत्रु-शमन कर, प्रहरी के धुन होते हैं ।
मानवता के रक्षक तुमको, “शान्ति-दुर्ग” पर चढ़ना है ।
तू देश-भक्त हो, जनहित जग में, तुम्हें न्योछावर होना है ।
जन-शोषण और धर्म-जाति का, भेद मिटाना है तुझको ।
संघर्ष-सूत्र को अपना कर, आतंक मिटाना है तुझको ।
हे के. रि. पु. बल के ललना जाओ, जग में अमन शान्ति लाओ ।
प्रहरी “प्रभात” कर अर्पण खुद को, जन-हित शूली पर चढ़ जाओ ।

हंसराज ओझा “प्रभात”
पु०उ०म०नि० कार्यालय, गुवाहाटी

रक्षक हमारा परिचय है ।

हम भारत मां के सपूत विशेष, रक्षक हमारा परिचय है ।
हम मर मिटेंगे इसकी खातिर, यही हमारा निश्चय है ।
इसी लिए हमने जन्म लिया है, केवल देश की सेवा को ।
मामूली सी बात सिर्फ है, चाहे खतरा जान लेवा हो ।
राकेट लांचर या टैंक किसी का, या कोई तोप का गोला हो ।
पीछे नहीं हटते हैं हम, चाहे कोई आग का शोला हो ।
नहीं लालच करते हैं किसी का, चाहे सोने के भण्डार पड़े हों ।
न कर्तव्य छोड़ते हैं हम अपना, चाहे पैरों में अंगार पड़े हों ।
इस सोने की चिड़िया को हम, खुशियों से चह-चहा देंगे ।
हम देश विद्रोह व उग्रवाद को, मिट्टी में मिला देंगे ।
इस बल की महिलायें भी देश की हरदम रक्षा करती हैं ।
पंजाब कश्मीर या असम हो, नहीं किसी से डरती हैं ।
शेर जवान हैं हम इस बल के, बब्बर शेर अधिकारी हैं ।
रख के पंजा फाड़ दें उनको, जो देश के ब्यभिचारी हैं ।
हरियाली से भर दूं देश को, ये ही नरेन्द्र का सपना है ।

आओ सब मिल बनायें शान्ते, क्योंकि देश हमारा अपना है ।

सिपाही नरेन्द्र सिंह
महानिदेशालय के० रि० पु० बल

रामपुर ग्रुप केन्द्र

यू. पी. का है जिला रामपुर, सुन लो मेरे प्यारो ।

शहर गली क्या घर बाहर, मक्खी मच्छर मारो ।

दिन को मक्खी रात को मच्छर हमला करें करारा ।

सावधान रहकर ही इन से करना होय गुजारा ।

मक्खी, मच्छर, मस्जिद, मस्ती, रामपुर का नारा ।

हर मौसम में मिले बराबर, यह कमाल है सारा ।

हैं मशहूर यहां के तोफे, ये यारों के यारों ।

यू. पी. का है जिला रामपुर सुन लो मेरे प्यारो ।

सी. आर. पी. का ग्रुप सेन्टर, रेल लाईन किनारे ।

रेलवे लाईन का फाटक, है मेन गेट के द्वारे ।

तीन द्वार पर सजग प्रहरी, देश भक्त रखवारे ।

एड़ी से चोटी तक अपनी, हर पोशाक संवारे ।

अनुशासन में झलक रहा है, फोर्स महान हमारो ।

यू. पी. का है जिला रामपुर, सुन लो मेरे प्यारो ।

ए. डी. आई. जी., डी. आई. जी. कार्यालय इक ठौर,

सी. डब्लू. एस. सिगनल बी. एन, करो प्रेम से गौर ।

सीटी देकर रेल बुलाए, आज सब कुछ छोड़ ।

सी. आर. पी. का पहला सेंटर नहीं ऐसा कोई और ।

यह रमणिक स्थान मनोहर, लगता सबसे न्यारो ।

यू. पी. का है जिला रामपुर, सुन लो मेरे प्यारो ।

पेड़ पुराने पक्षी कलरव, छाया सघन घनेरी,

पारिवारिक आवास बास, खेल के प्रांगण भारी ।

बाल वाटिका, उपवन झूले, बिच-बिच कुसुम क्यारी ।

मीन पोखरे बीच फुहारा, झर-झर झरता बारी ।

काले रंग का नकली हाथी, सूंड से नीर निकारो ।

यू. पी. का है जिला रामपुर, सुन लो मेरे प्यारो ।

सिपाही दफ्तरी गनेश प्रसाद
कार्यालय डी. आई. जी. पी.
रामपुर (यू. पी.)



नई दिल्ली, नेहरू नगर में के. रि. पु. बल के प्रस्तावित आवासायें कामप्लेक्स स्थल पर एक माहल पर एक क.
उद्घाटन करते हुए महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ।

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा । सम्पादक : अनिल गुप्ता । वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लॉक 1, सी० जी० प्रो० कामप्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से ए० एन० शर्मा ।

घटक : श्री० आर० सी० एम० भट्टाचार्य स्वयं उई दिल्ली 110070 ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खंड—V

अंक—4

मूल्य—1.95 रुपए

30 जून, 1992

9 अषाढ़ शक 1914



कर्तव्य पर मारे गए बल के कामियों की आश्रिताओं से बात करते हुए श्रीमती एवं श्री डी. पी. एन. सिंह

छाया—सतीश खन्ना

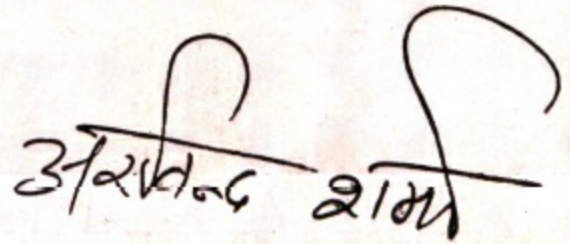
सम्पादकीय

वर्ष 1992 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इतिहास में विशेष रूप से याद किया जाएगा। इस अकेले वर्ष में बल के परिवार में 20 नई बटालियनें जुड़ी हैं और इस प्रकार बल के सदस्यों की संख्या डेढ़ लाख को पार कर गई। इस वर्ष के मई, जून एवं आगे आने वाला जुलाई माह काफी व्यस्तताओं से भरा हुआ है। क्योंकि ये सभी नवगठित बटालियनें इन्हीं तीन महिनों के अन्दर अपना-अपना प्रशिक्षण समाप्त कर अपने कर्तव्य क्षेत्र में कूद रही हैं। अधिकांशतः इन सभी नयी बटालियनों को आतंकवाद से ग्रस्त राज्यों पंजाब व जम्मू-कश्मीर में तैनात किया जा रहा है।

9 महिने के कड़े प्रशिक्षण की आग से तप कर निकले ये जवान अपने पूरे जोश और होश के साथ आतंकवाद के दावानल की जड़ पर प्रहार करेंगे इसका हमें विश्वास है। बड़ी आशा के साथ देश और सरकार उन्हें यह जिम्मेदारी सौंप रही है। देश के प्रति खाई निष्ठा एवं कर्तव्यपरायणता की शपथ हर कशमकश भरे क्षण में उनका मार्ग प्रशस्त करेगी इसकी हमें आशा है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कुरबानियों एवं शौर्यगाथाओं से भरे इतिहास में ये रणबांकुरे नए पृष्ठ जोड़ेंगे, देश सेवा एवं कर्तव्यनिष्ठा के नए अध्यायों की रचना करेंगे। इसी विश्वास के साथ इन्हें कर्तव्य-पथ की ओर अग्रसर किया गया है।

जिस ध्येय के लिए हमारे जवान आज अपने प्राणों की बाजी लगा रहे हैं, जिस सुखद, शांत एवं निर्मल भविष्य की आशा में देश उनकी ओर ताक रहा है, अपनी पूरी निष्ठा, साहस एवं कुरबानियों के बल पर हमारे जवान उसकी प्राप्ति करेंगे, इसका हमें विश्वास है। इसके लिए देशवासियों का सम्बल और सरकार का विश्वास उनके साथ है।



(अ० ना० शर्मा)

120 बटालियन की दीक्षांत परेड



परेड का निरीक्षण करते हुए अपर महानिदेशक श्री सी. एस. द्विवेदी

24 जून, 1992 को के०रि०पु० बल की 120 बटालियन के दिक्षान्त समारोह में रंगरूट जेसविंदर सिंह को हर क्षेत्र में सर्वोत्तम प्रशिक्षणार्थी होने का सम्मान श्री सी. एस. द्विवेदी अपर महानिदेशक के०रि०पु० बल ने दिया। इसके अलावा रंगरूट सैयद अहमद पाशा तथा राज कुमार यादव को भी क्रमशः सर्वोत्तम इन्डोर प्रशिक्षणार्थी तथा आउट डोर प्रशिक्षणार्थी का सम्मान दिया गया। सर्वोत्तम परेड के लिये बटालियन की “एफ” कम्पनी को सम्मानित किया गया जिसका नेतृत्व इंसपेक्टर काशीराम ने किया। सर्वोत्तम मार्चिंग कन्टीजेन्ट का सम्मान ‘ई’ कम्पनी को मिला। इस अवसर पर रंगरूटों ने अनआर्म्ड कम्बेट तथा जिम्नास्टिक का भी प्रदर्शन किया।

कमान्डेंट आई. एस. ढिल्लो ने परेड का सफलता पूर्वक नेतृत्व किया, जबकि उप कमान्डेंट शिव स्वरूप सिंह ने रंगरूटों को शपथ दिलायी। 9 माह का गहन प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इस बटालियन को अब बरनाला पंजाब में भेजा जायेगा।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री द्विवेदी ने बल के परिवार में शामिल हुए जवानों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि उन्होंने जिस कड़े परिश्रम के साथ अपना प्रशिक्षण सम्पूर्ण किया है उस का प्रदर्शन वे आगे अपने कर्तव्य निर्वाह के दौरान भी करते रहेंगे, उन्होंने जवानों का आह्वान किया कि वे के०रि०पु० बल की गौरवशाली परम्पराओं के अनुरूप शपथ की मर्यादा को बनाए रखेंगे।

इस 9 माह के प्रशिक्षण में रंगरूटों को आधुनिक हथियारों का गहन प्रशिक्षण दिया गया जिसमें ए. के.-47, ए. के.-56, ए.के.-74, काबाईन और राकेट लांचर आदि आते हैं। इसके अलावा (पारंपरिक) हथियारों को भी चलाने का भी प्रशिक्षण दिया

गया। जिसमें एस. एल. आर. राइफल व पिस्टल आदि आते हैं। रंगरूटों को अच्छी निशाने बाजी, बारूदी सुरंगे बिछाने और उन्हें नाकाम आदि करने का भी प्रशिक्षण दिया गया। शारीरिक सुरक्षा के लिये उन्हें जूडो आदि का भी प्रशिक्षण दिया गया।

इस समारोह में के० रि० पु० बल के उच्च अधिकारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

‘पत्नी पिछले साल शादी की साल-गिरह पर आपने मुझे अंगूठी दी थी, इस बार तो मैं उससे भी बड़ी चीज लूँगी।’

पति—‘इस बार अंगूठा ले लेना।’

121 बटालियन की दीक्षांत परेड

619 जवान बल के परिवार में शामिल

के० रि० पु० बल के महानिदेशक डी. पी. एन. सिंह ने 17 जून, 1992 को 121 बटालियन के मुख्यालय में एक सादे, परन्तु प्रभावशाली समारोह में 619 जवानों की दीक्षान्त परेड की सलामी ली। इन रंगरूटों ने 9 माह का प्रशिक्षण सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। श्री एम. सी. सोम कमान्डेंट ने परेड का नेतृत्व किया, जबकि उप कमान्डेंट शिवताज सिंह ने रंगरूटों को शपथ दिलाई।

महानिदेशक महोदय ने रंगरूट एस. कार्तियकेन को सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी, रंगरूट यू. कृष्णन को सर्वश्रेष्ठ आउट डोर प्रशिक्षार्थी तथा इंगले सुनील को सर्वश्रेष्ठ इनडोर प्रशिक्षार्थी का सम्मान प्रदान किया। सर्वोत्तम परेड के लिये बटालियन की “डी” कम्पनी को सम्मानित किया गया। जिसका नेतृत्व सहायक कमान्डेंट ए. के. पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर रंगरूटों ने अन-आर्म्ड कम्बेट तथा जिमनास्टिक का भी प्रदर्शन किया। ‘ई’ कम्पनी को सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग टुकड़ी घोषित किया गया।

इस मौके पर बोलते हुए श्री डी.पी.एन. सिंह ने बल के परिवार में शामिल हुए जवानों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि उन्होंने जिस कड़े परिश्रम के साथ अपना प्रशिक्षण सम्पूर्ण किया है उसका प्रदर्शन वे आगे अपने कर्तव्य निर्वाह के दौरान भी करते रहेंगे। उन्होंने जवानों का आह्वान किया कि वे के० रि० पु० बल की गौरवशाली परम्पराओं के अनुरूप अपनी शपथ की मर्यादा को बनाए रखेंगे।

यहां पर बताना अनुचित न होगा कि 121 बटालियन के० रि० पु० बल की उन 20 बटालियनों में से एक है जिनको सन् 1991 में एक साथ खड़ा किया गया था। देश में बढ़ते हुए आतंकवाद, नक्सलवाद तथा गिरती हुई कानून व्यवस्था की स्थिति तथा साम्प्रदायिक तनाव को देखते हुए इन रंगरूटों को 9 माह का आधुनिक प्रशिक्षण इस

तरह से दिया गया है जिससे कि वो इन सारी आपदाओं का सफलता पूर्वक सामना कर सके। रंगरूटों के शारीरिक स्वास्थ्य, अच्छी निशाने बाजी, बारूदी सुरंगे बिछाने और उन्हें नाकाम करने आदि के प्रशिक्षण पर अधिक महत्व दिया गया है। हथियारों के प्रशिक्षण में अत्य-आधुनिक 9 एम. एम. कार्बाइन, सेल्फ लोडिंग राईफल, ए. के.-47, ए. के.-56 आदि का प्रशिक्षण भी दिया गया है।

इस समारोह में के०रि०पु० बल के उच्च अधिकारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

128 बटालियन की दीक्षांत परेड

21 मई, 1992 को सराय खास; करतारपुर पंजाब स्थित 128 बटालियन की दीक्षांत परेड सम्पन्न हुयी। परेड की सलामी उप महानिरीक्षक श्री एस. एस. विर्क ने ली। परेड में 128 बटालियन के 543 जवानों ने भाग लिया। ये जवान इस परेड में 36 सप्ताह के सफल प्रशिक्षण के बाद शामिल हुए थे। परेड का नेतृत्व कमांडेंट जी. के. शर्मा ने किया।

इस मौके पर मुख्य अतिथि श्री विर्क ने जवानों को पुरस्कार भी प्रदान किए। आल राउण्ड सर्वश्रेष्ठ टेनी कांस्टेबल बीरबल स्वामी, सर्वश्रेष्ठ इनडोर टेनी कांस्टेबल गिरीश चंदरसिंह, सर्वश्रेष्ठ आउटडोर टेनी कांस्टेबल परमेश्वर गोगाई तथा सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कांस्टेबल कृष्ण प्रधान घोषित किए गए। तथा उन्हें संबंधित ट्राफियां प्रदान की गईं।

परेड में “एफ” कम्पनी की टुकड़ी को सर्वश्रेष्ठ पाया गया तथा उसके लिए कम्पनी कमांडर सहायक कमांडेन्ट तजविंदर सिंह को ट्राफी प्रदान की गई।

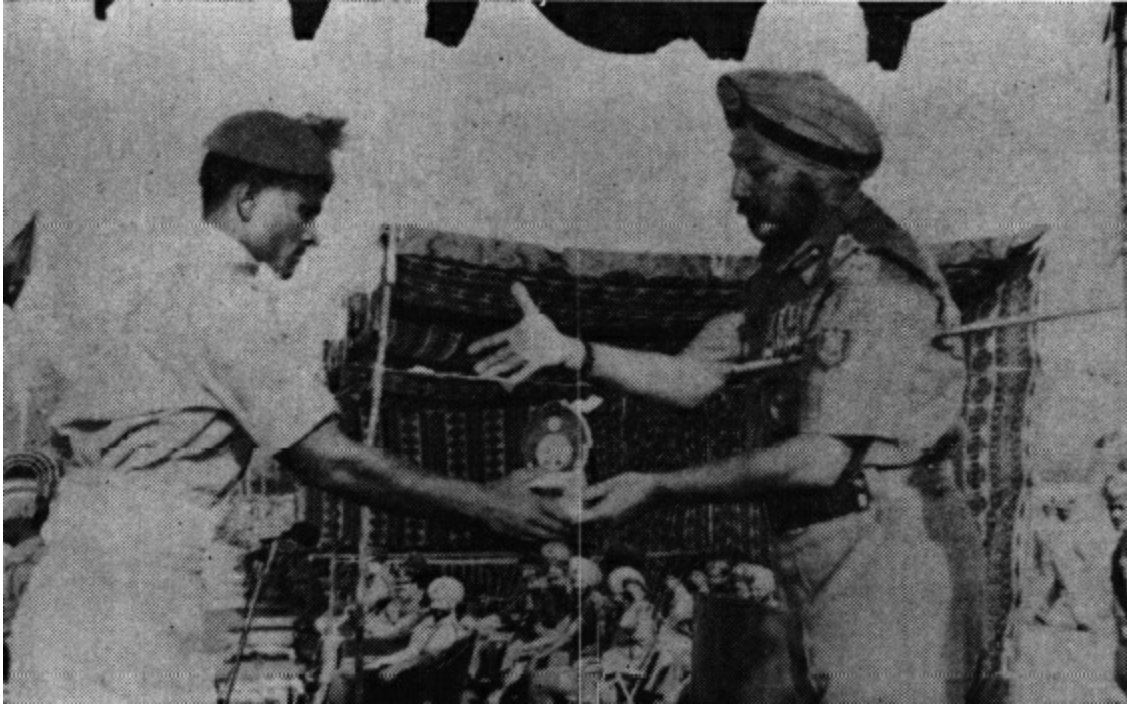
इस मौके पर बोलते हुए पद्मश्री श्री एस. एस. विर्क ने जवानों का आह्वान किया कि वे बल की गौरवशाली परंपराओं को बनाए रखें तथा देश के सामने खड़ी आतंकवाद की चुनौती से सख्ती के साथ निबटें। उन्होंने जवानों से कहा कि उनकी असली परीक्षा अब कर्तव्य के क्षेत्र में होनी है।



परेड का निरीक्षण करते हुए श्री एस. एस. विर्क

127 बटालियन की दीक्षांत परेड

127 बटालियन की दीक्षांत परेड 18 मई, 1992 को सराय खास जालंधर में संपन्न हुई। परेड की सलामी उप महानिरीक्षक जालंधर श्री एस०एस० विर्क ने ली। इस अवसर पर जवानों द्वारा प्रस्तुत आकर्षक परेड का नेतृत्व कमांडेंट श्री गुरचरण सिंह ने किया। परेड में 629 रंगरूटों ने भाग लिया। तथा देश के प्रति कर्तव्य निर्वाह की शपथ ली। इस अवसर पर जवानों ने अनआर्म्ड काम्बेट का भी प्रदर्शन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री विर्क ने कां० पारूष रामसिंह को आल राउन्ड बेस्ट ट्रेनी, कां० आफताब आलम को बेस्ट आउटडोर ट्रेनी, कां० पूरनसिंह को बेस्ट इनडोर ट्रेनी एवं कां० कमल राना को बेस्ट खिलाड़ी की ट्रॉफियां भेंट की।



कांस्टेबल पारुष राम को सर्वश्रेष्ठ ट्रेनी की ट्राफी प्रदान करते श्री एस. एस. विर्क

116 बटालियन की दीक्षांत परेड

नवगठित 116 बटालियन की दीक्षांत परेड 25 मई, 92 को सम्पन्न हुयी, इस अवसर पर बल के पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री के० आर० के० प्रसाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने परेड की सलामी ली तथा सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए।

116 बटालियन अप्रैल 91 में दुर्गापुर में खड़ी की गई थी। अपने 36 सप्ताह के सफल प्रशिक्षण के बाद इस बटालियन के जवानों ने दीक्षांत परेड के साथ-साथ देश के प्रति निष्ठा एवं कर्तव्यनिर्वाह की शपथ भी ली। वर्तमान में बटालियन के कमांडेंट श्री आर०के० गौड़ हैं।

माह मई, 1992 में मृत बल के कार्मिक

माह मई, 1992 में बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार परिवार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक बलदेव सिंह (27 बटा.), कां. जी. देवदासन (ग्रु. के. हैदराबाद), कां. नगेन्द्र ठाकुर (22 बटा.), कां. एच.एस. राजेय्या (10 बटा.), है. कां. शिव मूर्ति (100 बटा.), है. कां. रामरेख यादव (45 बटा.), नायक/रे.आ. वी. श्रीनिवासन (1 सिग.), कां. परमार सोभा भाई (85 बटा.); कां. गुरमीत सिंह (12 बटा.), है. कां./क्रिप्टो एस. डी. सिंह (3 सिग.), नायक/टेलर साजिद अली (85 बटा.), नायक राम विनोद मिश्रा (27 बटा.),

कुक तारा चंद (95 बटा.), ला. नायक/ड्राइवर पी. पी. रावेंद्रन (99 बटा.), नादय फ्रांकिस कजौर (79 बटा.), कां. उदत भान यादव (4 बटा.), लां. नायक महादेव ओरेन (116 बटा.), कां. सी.जे. रामाराजू (47 बटा.), लां. नायक बहादुर चन्द (48 बटा.) तथा सहायक कमांडेंट मोहम्मद इजरैल (5 बटा.)।

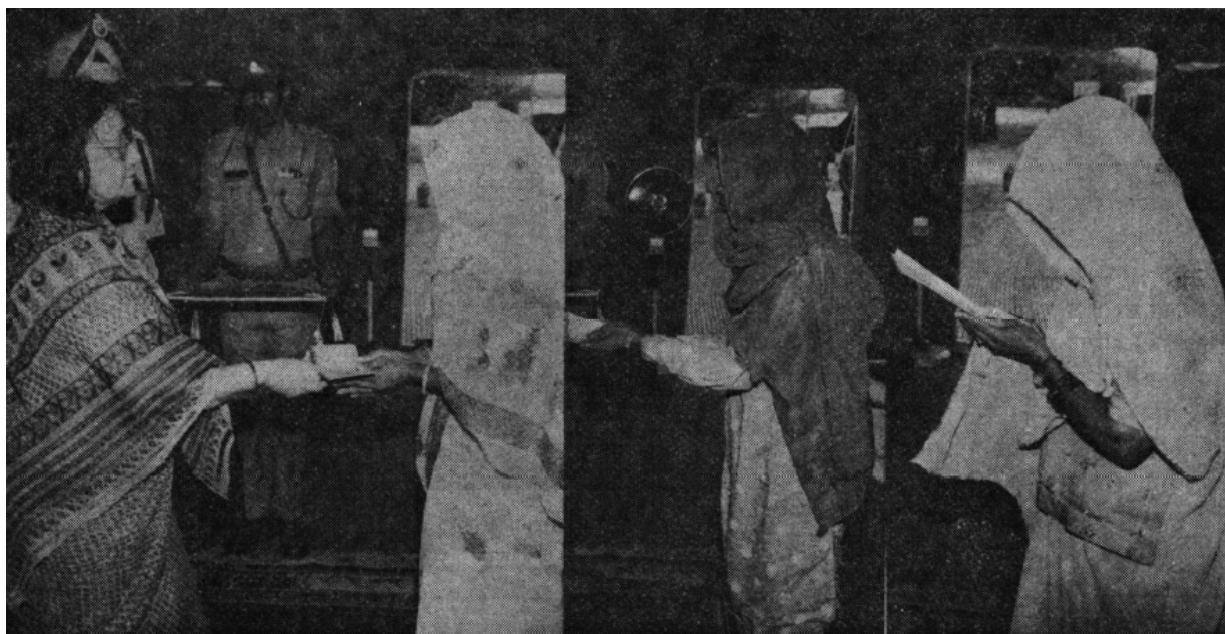
इनके अतिरिक्त देर ये प्राप्त सूचना के अनुसार अप्रैल 92 माह में 46 बटा. के कां. ओम प्रकाश की भी मृत्यु हुयी।

के० रि० पु० बल ने 173 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह मई, 1992 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 173 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी कुल 69 मुठभेड़ों में 49 आतंकवादी मारे गए तथा एक गम्भीर रूप से घायल हुआ। इनमें पंजाब जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़े में शामिल हैं। इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 94घातक हथियार भी बरामद किये। बरामद हथियारों में 14 ए० के० 47 राइफलें, 10 ए० के० 56 राइफलें, एक ए० के० 74 राइफल, दो राकेट लांचर, आठ राइफलें, 18 पिस्तौलें, पांच माउजर पिस्तौलें तथा एक एस० एल० आर० शामिल हैं। इसके अतिरिक्त 631 सजीव गोली बारूद भी बरामद किया गया।

मगर इस सबके एबज में बल का एक जवान वीरगति को प्राप्त हुआ, जबकि 16 जवान गम्भीर रूप से घायल हुए।

आश्रिताओं को अनुदान



आश्रिताओं को अनुदान राशि के चेक भेंट करते हुए श्रीमती डी. पी. एन. सिंह

के०रि०पु० बल के तीन कार्मिकों की विधवाओं को “जिन्होंने आतंकवाद तथा आतंकवादी गतिविधियों को रोकने के लिए जम्मू व कश्मीर तथा मणिपुर राज्यों में अपनी जान गवां दी बल के महानिदेशक श्री डी० पी० एन० सिंह की धर्मपत्नी ने 12 जून, 1992 को सादे तथा भाव-भीने समारोह में उपरोक्त राज्यों से प्राप्त अनुग्रह राशी के चेक प्रदान किये।

एक लाख पच्चीस हजार रुपये प्रत्येक अनुग्रह राशि के चेक 49 बटालियन के सहायक कमांडेंट कल्याण मल की पत्नी श्रीमती मोहन कनवर तथा 54 बटालियन के लांस नायक श्री श्रीकृष्ण की पत्नी श्रीमती सुशीला देवी ने ग्रहण किये। इसी प्रकार 22 बटालियन के सिपाही वेदव्रत सिंह की पत्नी श्रीमती राजबाला ने सत्तर हजार रुपये की अनुग्रह राशि का चेक भी प्राप्त किया, जिन घटनाओं के लिए सहायक कमांडेंट कल्याण मल तथा लांस नायक श्रीकृष्ण को अनुग्रह राशि दी गयी, वो घटनाएं जम्मू तथा कश्मीर राज्य में 3 जनवरी 1992 तथा 11 नवम्बर 1991 को घटित हुईं। इसी प्रकार सिपाही वेदव्रत सिंह ने अपनी जान उस समय गंवाई जब वो एक पुलिस दल के साथ बैंक की नकदी को सुरक्षा सहित ले जा रहे थे और उन पर आतंकवादियों ने घात लगा करके नकदी लुटने के इरादे से 7 दिसम्बर 1991 को भूरे व इम्फाल के बीच में हमला कर दिया।

इस मौके पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बल के महानिदेशक श्री डी० पी० एन० सिंह ने शहीद हुए कार्मिकों की आश्रिताओं को बल की ओर से हर संभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन भी दिया।

जोखिम निधि लाभ

माह मई, 1992 में के०रि०पु० बल जोखिम निधि से मृत्यु के 38 मामलों में कुल 13,30,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपये की केन्द्रीय कल्याण निधि एवं सी०डब्ल्यू०एफ० की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के 10 मामलों में कुल 1,15,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

‘सर, आजकल तालाब में आत्महत्याएं बहुत हो रही हैं।

‘ठीक है, तालाब के किनारे एक बोर्ड लगा दो कि आत्महत्या करने वाले को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।’

आश्रितों को अनुदान



आश्रितों को अनुदान राशि के चैक भेंट करते श्री डी. आर. कार्तिकेयन

25 जून, 1992 को ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में हुए एक सादे एवं भाव भीने समारोह में बल के दक्षिण सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी. आर. कार्तिकेयन ने कर्तव्य पर मारे गए बल के एक जवान को मरणोपरांत शौर्यवीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक एवं पांच अन्य जवानों के आश्रितों को संबंधित राज्य सरकारों द्वारा प्रदान किए गए अनुदान राशि के चैक भेंट किए।

63 बटालियन के कां. पी.आर. अर्जुनन 16 अप्रैल, 1988 को पंजाब में आतंकवाद विरोधी अभियान के दौरान दृढ़ता के साथ

आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। कर्तव्य के प्रति उनके समर्पण, साहस, वीरता एवं निष्ठा के लिए उन्हें प्रदान राष्ट्रपति का पुलिस पदक उन की माता श्रीमती मंदी ने प्राप्त किया।

ग्रुप केन्द्र पिंजौर के कां/डाइवर एम.के. वारके 17 नवम्बर, 1990 को गोरे नंगल क्षेत्र में आतंकवादियों के एक हमले में वीरगति को प्राप्त हुए। पंजाब सरकार द्वारा उनके आश्रितों को प्रदत्त 2 लाख रुपये की अनुदान राशि का चैक उन के पिता श्री एम.एम. कुरियन ने ग्रहण किया।

41 बटालियन के नायक रेडियो आपरेटर के. मोहनन 10 फरवरी, 1990 को आतंकवादियों द्वारा किए गए एक विस्फोट में मारे गए। पंजाब सरकार द्वारा उनके आश्रितों को प्रदत्त एक लाख रुपये की अनुदान राशि का चैक उनके पिता श्री के.के. कृष्णन वैधन ने ग्रहण किया।

लांस नायक बी. शिवराजन 9 दिसंबर, 1991 को मोरह, इम्फाल में आतंकवादियों द्वारा लगाई गयी घात में मृत्यु को प्राप्त हुए। मणिपुर सरकार द्वारा अनुदान स्वरूप प्रदत्त 20,000 रुपए की राशि एवं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की केन्द्रीय कल्याण निधि में से 50,000 हजार रुपए की राशि के अनुदान चैक उनकी विधवा श्रीमति ई. उषा ने ग्रहण किए।



एक जवान के पिता को अनुदान राशि का चेक भेंट करते श्री कार्तिकेयन

कां. जी. वेणुदास 5 जनवरी, 1991 को श्रीनगर जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। जम्मू कश्मीर सरकार द्वारा अनुदान स्वरूप प्रदत्त एक लाख, 95 हजार रुपये की अनुदान राशि का चेक उन की आश्रिता श्रीमती प्रिया दास ने ग्रहण किया।

कां. एपी, सदानन्दन 24 अक्टूबर, 1991 को पंजाब में आतंकवादियों का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। पंजाब सरकार द्वारा अनुदान स्वरूप प्रदत्त दो लाख रुपये की अनुदान राशि का चेक उन की आश्रिता श्रीमती के.सी. शांता ने ग्रहण किया।

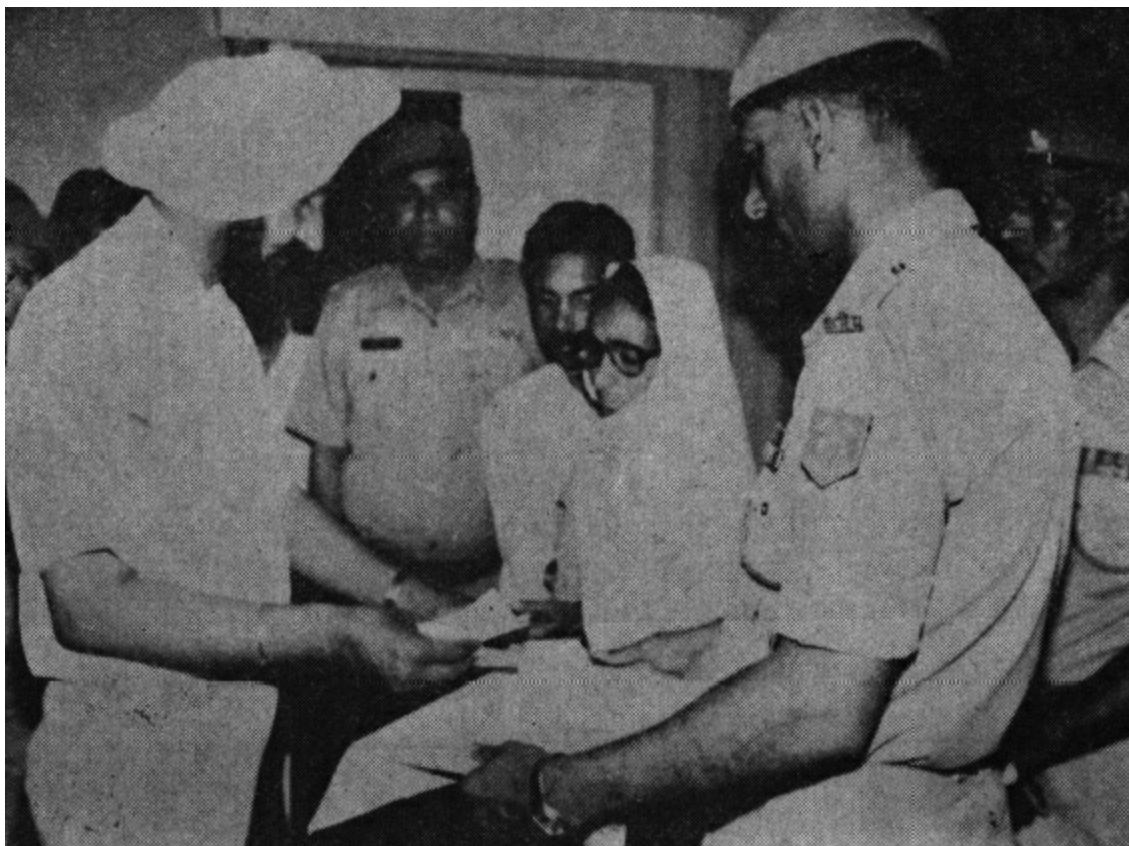
इस अवसर पर भारी रूप से बल के कार्मिक, मृत जवानों के परिवार के लोग एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। श्री कार्तिकेयन ने मृत जवानों के बलिदान का स्मरण करते हुए उन्हें बल की तरफ से भावभीनी श्रद्धांजली भी अर्पित की।

आश्रितों को अनुदान

5 जून, 1992 को येलेहंका, बंगलौर स्थित 77 बटालियन स्थल पर बल के दक्षिण क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री डी. आर. कार्तिकेयन ने 75 बटालियन के नायक एम. के. अत्तर की आश्रिता को एक लाख रुपये की राशि का अनुदान चेक प्रदान किया। नायक एम. के. अत्तर 8 अगस्त 91 को पंजाब के तरनतारन जिले में आतंकवादियों द्वारा बिछाई गयी एक सुरंग के फटने से अपने पांच अन्य सहयोगियों के साथ वीरगति को प्राप्त हुए थे।

इस अवसर पर आयोजित सादे एवं भावभौने समारोह में उपास्थित समुदाय को संबोधित करते हुए श्री कार्तिकेयन ने बल की महान परंपराओं के अनुकूल अपना बलिदान देने वाले कार्मिकों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि बल की इन परंपराओं को अक्षुण्ण रखा जाएगा ।

आश्रिता को अनुदान



श्रीमती गोदावरी देवी को अनुदान राशि के चेक भेंट करते अपर उप महानिरीक्षक ग्रुप केन्द्र बनतालाब

27 मई, 1992 को ग्रुपकेन्द्र बनतालाब में आयोजित एक सादे एवं भाव-भीने समारोह में 131 बटालियन के सिपाही श्याम लाल की माता श्रीमती गोदावरी देवी को ग्रुप केन्द्र बनतलाब के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक ने अनुग्रह राशि के चेक भेंट किए। उन्हें एक लाख 25 हजार रुपए जम्मू कश्मीर सरकार द्वारा, 2000 रुपए बटालियन कल्याण निधि से तथा 10,000 रुपए केन्द्रीय कल्याण निधि से प्रदान किए गए।

कांस्टेबल श्याम लाल की मृत्यु 17 फरवरी, 1992 को ड्यूटी के दौरान एक अश्रु गैस सेल के फट जाने से हो गयी थी।

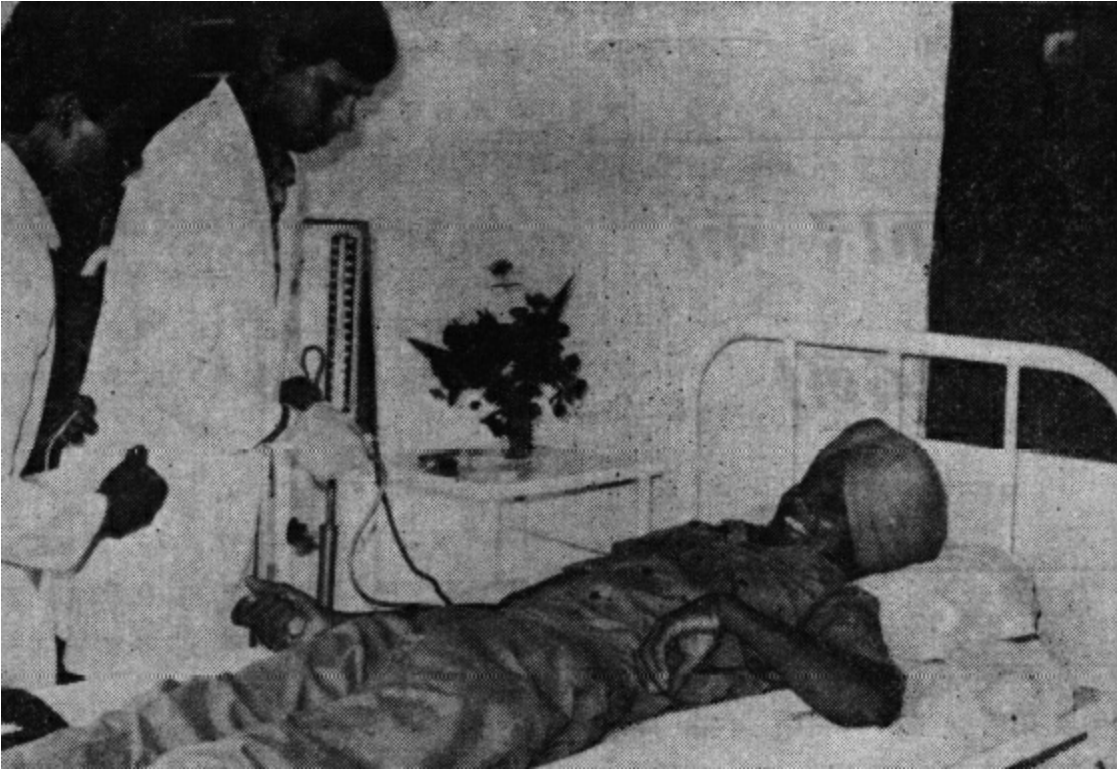
के. रि. पु. बल स्कूल का शत प्रतिशत परिणाम

सी० बी० एस० ई० द्वारा घोषित 10वीं कक्षा के परिणामों में सी० आर० पी० एफ० पब्लिक स्कूल रोहणी ने शत प्रतिशत सफलता पायी है। दसवीं कक्षा में पहली बार इस स्कूल ने भाग लिया और उसके 34 विद्यार्थियों में से 32 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में तथा 2 विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की है।

भारत भूषण ने 91.5 प्रतिशत अंक प्राप्त किये, जबकि विजय कुमार सिंह, ने जो कि एक सिपाही का बेटा हैं 81.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। इसने चार विषयों में 75 प्रतिशत से अधिक अंक पाने का गौरव प्राप्त किया है।

सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल ने गणित, विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन विषयों में बहुत अच्छे परिणाम दिये हैं। गणित में 23 विद्यार्थियों ने डिस्टिक्शन प्राप्त किया है। इसमें से 5 से 99 प्रतिशत अंक प्राप्त किये, जबकि 15 ने 90 प्रतिशत व उससे अधिक अंक प्राप्त किये। इसी प्रकार 19 विद्यार्थियों ने विज्ञान में डिस्टिक्शन प्राप्त किया है। इनमें से एक विद्यार्थी मानवी सैनी ने 97 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं। सामाजिक अध्ययन में जूली मोहन्ती ने 89 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं।

22 बटालियन के जवानों द्वारा रक्तदान



22 बटालियन का एक जवान रक्तदान करते हुए।

मणिपुर स्थित बल की 22 बटालियन ने बटालियन स्थल मंत्री पोखरी, इम्फाल में 8 जून, 1992 को एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में बटालियन के कमांडेंट श्री एस० सी० कक्कड़ सहित बटालियन के 51 सदस्यों ने रक्तदान किया। यह रक्तदान इम्फाल स्थित जवाहर लाल नेहरू अस्पताल के रक्त बैंक की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया।

हिन्दी में कार्य के लिए पुरस्कार

के. रि. पु. बल महानिदेशालय के कुछ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में नोटिंग, ड्राफ्टिंग एवं अन्य कार्य करने के लिए नकद पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। ये पुरस्कार 500 रुपये से 100 रुपये तक के हैं। पुरस्कार प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :

उ.नि. जे. एस. चौहान, सूबेदार मेजर डी. डी. भट्ट, उ. नि. ओमप्रकाश शर्मा, अनुभाग अधिकारी प्रेम चंद जैन, उ.नि. के. एन. मेहरा, नि. बी. एन. खंडेलवाल, अनुभाग अधिकारी, जे. एल. बजाज, हवलदार भाना राम, हवलदार महेन्द्र सिंह, नि. राकेश पांडेय एवं स.उ.नि सुभाष चंद गौतम।

हिन्दी में कार्य के लिए शील्ड

तिरुवनंतपुरम स्थित केन्द्रीय सरकार के 88 कार्यालयों में से पल्लीपुरम ग्रुप केन्द्र को वर्ष 1991-92 के दौरान हिन्दी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान के लिए तिरुवनंतपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने एक शील्ड तथा योग्यता प्रमाण पत्र प्रदान किया है। अपर उप महानिरीक्षक श्री महेन्द्र प्रसाद को यह शील्ड तथा योग्यता प्रमाण पत्र, केरल परिमंडल के मुख्य पोस्टमास्टर जनरल एवं समिति के अध्यक्ष श्री वी. राधाकृष्णन ने प्रदान किया। इस अवसर पर समिति के सदस्यों एवं कार्यालयों के प्रधानों सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

23 कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

भारत के राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन ने के० रि० पु० बल के 23 कार्मिकों को राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक तथा शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है, इन कार्मिकों को यह सम्मान पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों के विरुद्ध दिखाई गयी उत्कृष्ट वीरता, साहस व कर्तव्य परायणता के लिये दिया गया है।

इन कार्मिकों में से सात को राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से तथा 16 को शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इनमें से सात को मरणोपरांत यह सम्मान मिला है।

राष्ट्रपाते के शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित कार्मिक हैं :—कमान्डेंट जयप्रकाश (7 बटालियन), द्वितीय कमान अधिकारी स्वर्गीय आर. एस. कोहर (2 बटालियन), स्वर्गीय समिउल्ला खान उप निरीक्षक (7 बटालियन), सिपाही स्वर्गीय अरबिन्दो मंडल एवं सिपाही स्वर्गीय सुरेन्द्र सिंह (8 बटालियन)।

शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित कार्मिकों के नाम इस प्रकार हैं :—

66 बटालियन के कमान्डेंट डी. ए. धनन्जैया, सहायक कमान्डेंट वी. वी. सिंह, उपनिरीक्षक स्वर्गीय आनसिंह, लांस नायक यशवीर सिंह, सिपाही देवेन्द्र पाल, 18 बटालियन के लांस नायक अब्दूल मजिद, 7 बटालियन के सहायक कमान्डेंट एस. सी. भारद्वाज, सिपाही (चालक) स्वर्गीय एम. के. वर्मा, 76 बटालियन के सहायक कमान्डेंट एस. एन. निम्बालकर, सिपाही आर. एस. मीना, 41 बटालियन के हैड कान्स्टेबल बिन्देश्वरी सिंह, 46 बटालियन के उपनिरीक्षक स्वर्गीय सुभाष उपाध्याय, सिपाही प्रहलाद सिंह, 73 बटालियन के सहायक कमान्डेंट एस. इलागो, 75 बटालियन के हैड कान्स्टेबल भैरोसिंह, तथा सिपाही आर. बी. भाभरे।

लोक कथा

उपकार का बदला

प्रस्तुति—अनिल गुप्त

किसी गाँव में एक गरीब लकड़हारा रहता था, एक रात उसके गाँव में जोर का तूफान आया। जोर-जोर से बिजली कड़कने लगी। जंगल में खड़े बड़े-बड़े पेड़ जड़ों समेत उखड़ कर धरती पर जा गिरे। लेकिन सुबह होते ही तूफान का जोर थम गया। हल्की-हल्की बूंदबाँदी के बाद आसमान बिल्कुल साफ हो गया।

बारिश के थमते ही लकड़हारा अपनी झोपड़ी से बाहर निकला और सोचने लगा कि आज तो जंगल में बड़े-बड़े पेड़ गिरे होंगे, अतः उसे आसानी से काफी सारी लकड़ियाँ मिल जाएंगी। ऐसा विचार करके उसने एक पोटली में खाने के लिए सूखी रोटी और अचार बाँधा तथा अपने कंधे पर कुल्हाड़ी और एक मोटा सा बाँस रखकर जंगल की ओर चल दिया।

गाँव से बाहर निकलकर वह जंगल की ओर जाने वाली पगडंडी पर चलने लगा। अभी वह थोड़ी ही दूर चला था कि उसने देखा कि एक बड़ा सा पेड़ धराशायी होकर एक बड़ी सी चट्टान के सहारे टिका था। लकड़हारा मन ही मन खुश होते हुए उस वृक्ष की डालों को काटने के बारे में सोचने लगा। अभी उसने वृक्ष की पहली डाल पर कुल्हाड़ी चलाई ही थी कि उसे एक आवाज सुनाई दी। जब लकड़हारे ने गौर से सुना तो उसे वह आवाज चट्टान से आती हुई प्रतीत हुई। लकड़हारा एक पल को तो डर

गया। लोकेन फिर उसने अपने अन्दर साहस बटोर कर आवाज का रहस्य पता लगाने का निर्णय किया। जब लकड़हारा गौर से उस आवाज को सुनने लगा तो उसे मालूम हुआ कि आवाज चट्टान के अन्दर से नहीं बल्कि नीचे से आ रही थी। आवाज बेहद करुण थी। उस आवाज को सुनकर किसी का भी दिल पसीज सकता था।

आखिर साहस बटोर कर लकड़हारे ने पूछ ही लिया, “तुम कौन हो, और मुझे क्या चाहते हो?”

“ओ दयालु दोस्त,” चट्टान के नीचे से आवाज आई, “मुझे पर दया करो और मुझे यहाँ से बाहर निकाल दो इस उपकार के बदले मैं तुम्हें उचित इनाम भी दूंगा।”

“क्या मैं तुम पर भरोसा कर लूँ” लकड़हारे ने कहा, “और फिर तुम मुझे इसके बदले क्या दोगे?”

“तुम मुझे पर भरोसा कर सकते हो, दयालु आदमी,” चट्टान के नीचे से फिर आवाज आई, “और मैं तुम्हें इसके बदले वही इनाम दूंगा, जो आज तक उपकार के बदले दुनिया देती आई है।”

लोक कथाओं का हमारे जीवन में विशेष स्थान है। लोक कथाएं हमारे जीवन, हमारी संस्कृति और सबसे अधिक मानवीय वृत्तियों का बहुत सीधे साधे ढंग से लेकिन सटीक चित्रण करती हैं। यही कारण है कि कहीं कोई लिखित इतिहास या पांडुलिपियां न होने के बावजूद आज भी नानी दादी बच्चों को वही कहानी सुनाती हैं जो सैकड़ों साल पहले सुनाया करती थीं। सैकड़ों हजारों साल पहले लिखी इन कथाओं के लेखक अनजान हैं, लेकिन अपनी सटीक, मनोरंजक व सीधी सरल शैली और नैतिक मूल्यों के कारण ये कथाएं आज भी बच्चों के साथ-साथ बड़ों का भी मनोरंजन करती हैं।

एक और अद्भुत साम्य विश्व की लोक कथाओं में मिलता है। जो परी कथा अमरीका या आस्ट्रेलिया के बच्चे अपनी नानी दादी से सुनते हैं। वही थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ एशिया में भी दिखाई सुनाई पड़ती हैं। प्रस्तुत लोक कथा भी पौलैंड की एक लोक कथा पर आधारित है। पढ़िये और जरा सोचिए कि क्या कुछ ऐसी ही कथा हम लोगों ने अपने बचपन में नहीं सुनी।

—सम्पादक

कुछ देर अपने सिर को खुजलाने के बाद लकड़हारे ने फिर पूछा, “तुम्हें चट्टान के नीचे से निकालने के लिए मुझे क्या करना होगा।”

“कुछ ज्यादा नहीं, दयालु आदमी, अपने हाथ में पकड़े बांस को चट्टान के नीचे लगा कर, चट्टान को थोड़ा सा खिसका दो, मैं स्वयं बाहर आ जाऊंगा।” आवाज ने उत्तर दिया।

लकड़हारे ने ऐसे ही किया। जैसे ही उसने चट्टान को थोड़ा सा खिसकाया उसके

नीचे से अपनी जोभ लपलपाता हुआ एक विशालकाय अजगर बाहर सरक आया।

पूरी तरह चट्टान के नीचे से बाहर आने के बाद अजगर लकड़हारे के सामने अपना फन फैलाकर खड़ा हो गया और बोला “ओ लकड़हारे मुझे बड़े जोर से भूख लगी है और मेरे सामने तुम्हें खाने के सिवा और कोई चारा नहीं है।”

यह सुनते ही लकड़हारा घबरा गया, उसने सहमते हुए कहा, “लेकिन तुमने तो मुझे इस उपकार का वही बदला देने का वादा किया था, जो आज तक दुनिया देती आई है।”

“अरे मूर्ख मनुष्य, यही वह बदला है, जो आज तक दुनिया उपकार के बदले देती आई है, अतः अब तुम बहस करना छोड़ो और मरने के लिए तैयार हो जाओ।” अजगर ने कहा।

लेकिन लकड़हारे का मन नहीं मान रहा था वह किसी तरह अपनी जान बचाने की तरकीब सोचने लगा। आखिर एक विचार उसके मन में आया और वह अजगर से बोला, “लेकिन तुम मुझे इस तरह नहीं खा सकते। हमें इस सम्बन्ध में किसी तीसरे व्यक्ति से फैसला कराना होगा?”

“ठीक है, मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि अंततः जीत तो मेरी ही होनी है।” ऐसा कह कर अजगर लकड़हारे के साथ जंगल की ओर चल पड़ा। अभी वे थोड़ी ही दूर गये थे कि उन्होंने देखा कि एक बूढ़ा घोड़ा घास चर रहा है। उसे देखते ही अजगर चिल्लाया, “देखो घोड़ा, आओ उसके पास चलें वही हमारा फैसला सुनाएगा।”

“ठीक है, घोड़े के पास चलते हैं।” ऐसा कह कर लकड़हारा अजगर के साथ-साथ घोड़े के पास गया और उसे अपनी पूरी कहानी सुना कर फैसला करने के लिए कहा।

पूरी बात सुनने के बाद घोड़ा लकड़हारे से बोला, “अजगर कुछ गलत नहीं कहता है, दुनिया उपकार का ऐसा ही बदला देती है। मुझे देखो, जब मैं जवान था तो अपने मालिक की खूब सेवा करता था, उसे दूर-दूर तक सैर कराने ले जाता, उसकी बगधी में जुतता था और कई तरह के काम करता था। लेकिन अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मुझसे चला भी नहीं जाता, तो मेरा मालिक मुझे यहाँ जंगल में छोड़ गया है, ताकि भेड़िए आएं और मुझे खा जाएं, सच है, दुनिया उपकार का बदला ऐसे ही देती है।”

घोड़े की बात सुनकर अजगर अत्याधिक प्रसन्न हुआ, लेकिन लकड़हारे ने किसी और भी ऊंची जगह पर अपील करने के लिए उसे राजी कर लिया और वे दोनों आगे जंगल की ओर चल दिए। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें एक बूढ़ा शिकारी कुत्ता दिखाई दिया। अजगर और लकड़हारा दोनों उसके पास गए और उससे अपना मामला निबटाने का अनुरोध किया। पूरा मामला सुनने के बाद कुत्ता लकड़हारे से बोला, “अरे! लकड़हारे, अजगर गलत नहीं कहता, दुनिया उपकार का बदला ऐसे ही देती आई है। अब मुझे देखो, मैं जब छोटा था तो घर पर सब बच्चे मुझसे खेलते थे, जब मैं

बड़ा हुआ तो घर को रखवालों करने लगा और अपने मालिक के साथ शिकार पर भी जाने लगा, लेकिन अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मेरे सारे दांत टूट गए हैं और मुझ से दौड़ा भी नहीं जाता तो मेरे मालिक ने मुझे मरने के लिए जंगल छोड़ दिया है। सच है, दुनिया उपकार का बदला ऐसे ही देती है।”

अब लकड़हारे के पास बचने का कोई उपाय नहीं था, फिर भी उसने अजगर से अंतिम बार किसी से अपने मामले का फैसला कराने का अनुरोध किया। थोड़ी सी नानुकर के बाद अजगर उसकी बात मान गया और वे दोनों आगे की ओर जंगल में चल दिए। थोड़ी देर बाद उन्हें मुर्गे की तलाश में घूमती एक लोमड़ी दिखाई दी। वे दोनों लोमड़ी के पास गए और उससे अपना मामला निबटाने का अनुरोध किया। लोमड़ी ने उनकी बात ध्यान से सुनी और उनका फैसला करने को तैयार हो गई। लेकिन फैसला करने से पहले उसने दोनों से अलग अलग बात करनी चाही।

लकड़हारे को अलग ले जाकर लोमड़ी उससे बोली, “देखो लकड़हारे, अगर तुम मुझे हर हफ्ते एक मुर्गी देने का वादा करो तो मैं तुम्हारी जान बचा सकती हूँ।”

लकड़हारा फौरन इसके लिए तैयार हो गया। अब लोमड़ी अजगर को एक ओर ले गई और बोली, “कैसे अजीब व्यक्ति हो तुम, भला बिना उस स्थान को देखे तथा गवाहों के मैं कैसे न्याय कर सकती हूँ, अतः मुझे उस स्थान पर ले चलो; जहाँ से लकड़हारे ने तुम्हें मुक्त किया था,” अजगर इसके लिये तैयार हो गया और तीनों उस चट्टान की तरफ चल दिए। चट्टान को देखने के बाद लोमड़ी लकड़हारे से बोली, “जरा मुझे एक बार फिर से चट्टान उठाकर तो दिखाओ कि तुमने अजगर को कैसे मुक्त किया था।” लकड़हारे ने चट्टान के एक सिरे पर अपना बांस लगाकर उसे जरा सा उठा दिया। अब लोमड़ी अजगर से बोली, “जरा सा इस चट्टान के नीचे लेट कर तो दिखाओ कि तुम कैसे इस चट्टान के नीचे थे।” लोमड़ी के ऐसा कहने पर बुद्धिहीन अजगर चुपचाप चट्टान के नीचे सरक गया। अजगर के चट्टान के नीचे सरकते ही, लोमड़ी ने लकड़हारे को संकेत किया और लकड़हारे ने चट्टान के नीचे से टेक हटा ली। उसके ऐसा करते ही चट्टान अपनी जगह पर टिक गई और अजगर फिर से चट्टान के नीचे कैद हो गया।

यह देख कर लकड़हारा खुशी से नाचने लगा। फिर थोड़ी देर बाद लकड़हारा लोमड़ी को अपनी झोंपड़ी दिखाने ले गया। ताकि वह हर हफ्ते आकर उससे एक मुर्गी ले जा सके।

धीरे धीरे समय सरकता गया। लोमड़ी हर हफ्ते आती और लकड़हारे से एक मुर्गी ले जाती। एक समय ऐसा आया जब लकड़हारे की सारी मुर्गियाँ समाप्त हो गईं। अब लकड़हारा अपने पड़ोसियों की मुर्गियाँ चुरा चुरा कर लोमड़ी को देने लगा। लेकिन यह काम भी अधिक दिन तक नहीं चल पाया और पड़ोसी सतर्क हो कर अपनी मुर्गियों पर नजर रखने लगे। अब लकड़हारा बड़ा परेशान हुआ। वह दिन रात इसी सोच में धुलता रहता था। आखिर एक दिन उस के दिमाग में एक तरकीब आई उसने अपनी पुरानी बन्दूक उठाई और उस में कारतूस भर कर उसकी अच्छी तरह से जांच

परख कर लो और लोमड़ी के आने का इन्तजार करने लगा।

जिस दिन लोमड़ी को मुर्गी लेने के लिए लकड़हारे के पास आना था उस दिन लकड़हारा अपनी बन्दूक लेकर घर के बाहर आंगन में दीवार के पीछे छिपकर बैठ गया। जैसे ही उसे दूर से लोमड़ी आती दिखाई दी उसने अपनी बन्दूक उठाई निशाना ताका और लगातार दो फायर कर दिए। दोनों गोलियां लोमड़ी के सीने में लगी और वह वहीं खून से लथ पथ हो कर जमीन पर लोटने लगी। जब लकड़हारे ने लोमड़ी को तड़पते देखा तो वह दौड़ा हुआ इसके पास पहुंचा। लकड़हारे को सामने पाकर उसकी तरफ करुणा दृष्टि से देखते हुए लोमड़ी के मुंह से यही शब्द निकले “सच मैं भूल गई थी, दुनिया उपकार का बदला ऐसे ही देती है” और उसने दम तोड़ दिया।

इस दुनिया में किसी दुखी व्यक्ति के लिए थोड़ी सी भी सहायता ढेरों उपदेशों से कहीं अधिक अच्छी है।

—बुलवर



63 बटालियन के का० पी० आर० अर्जुन को मरणोपरांत राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया गया ।
कांस्टेबल अर्जुन की मां श्रीमती मुंदी को पदक प्रदान करते हुए महानिरीक्षक
श्री डी० आर० कार्तिकेयन ।

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा । सम्पादक : अनिल गुप्ता । वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक 1, सी० जी० ग्रो० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा ।

मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, भड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072 ।

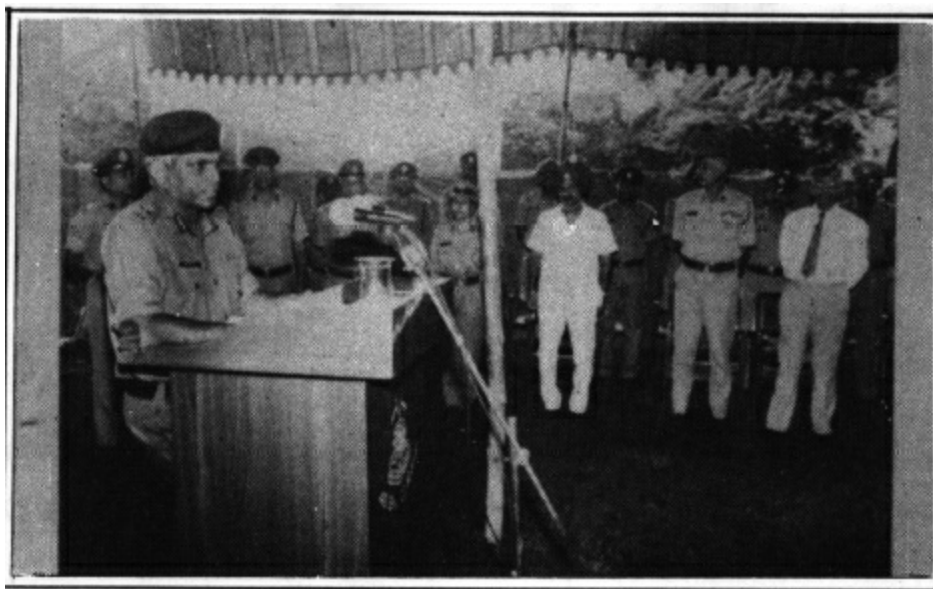
सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-5 अंक-5 मूल्य-1.95 रुपए 31 अगस्त, 1992 9 भाद्रपद, शक 1914



112 बटालियन की दीक्षांत परेड की सलामी लेते हुए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुंदर लाल पटवा

सम्पादकीय सद्भावना दिवस



भारत सरकार ने 20 अगस्त को सद्भावना दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है, इस दिवस का उद्देश्य विभिन्न धर्मों, भाषाओं, राज्यों एवं समुदायों के लोगों के अंदर आपसी सद्भाव तथा भाई चारे की भावना को बढ़ावा देना है। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सदस्यों के लिये तो यह दिवस इस लिये और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि हमारा बल देश में आतंकवाद से सीधे भिड़ने वाला सबसे बड़ा बल है। हमारे जवान रात दिन इस प्रयास में लगे हैं कि हमारे राष्ट्र की जीवनदायिनी धमनियों में से आतंकवाद का जहर दूर हो, ताकि राष्ट्र रूपी इस शरीर के सभी अंग आपसी तालमेल, सद्भाव, प्रेम एवं भाईचारे के साथ रह सकें। एक ऐसे समाज का निर्माण हमारा चिरसिंचित स्वप्न है। अतः देश के प्रति समर्पण एवं कर्तव्यपरायणता की अपनी शपथ को दोहराने के साथ साथ बल के हर सदस्य ने आज यह शपथ भी ली-

‘यह महान देश मुझे अपनी मां के ही समान प्रिय है, एवं इस देश के सभी लोग इस की संतानें हैं। यह मेरा कर्तव्य है कि मैं इस की सहिष्णुता, विभिन्नता में एकता तथा अन्य महान परंपराओं को न केवल बनाए रखूँ अपितु उन्हें और अधिक फलने फूलने में भरपूर योगदान दूँ, एवं उसे विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाने के लिये कोई कसर बाकी उठा कर न रखूँ और इसके लिये मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं इस महान भूमि के लोगों की एकता और भावनात्मक सद्भाव के लिये सदैव सक्रिय रहूँगा। मैं

सभी मतभेदों को ठोस उपायों के साथ दूर करने का प्रयास करूंगा। मैं अपने सभी साथियों को अपना भाई बहन समझूंगा। हमेशा हिंसा से दूर रहूंगा एवं उसे खत्म करने का प्रयास करूंगा। इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये मैं राष्ट्रपिता तथा राष्ट्र सेवा में अपना जीवन होम कर देने वाले व्यक्तियों के बताए मार्ग का अनुसरण करूंगा।'

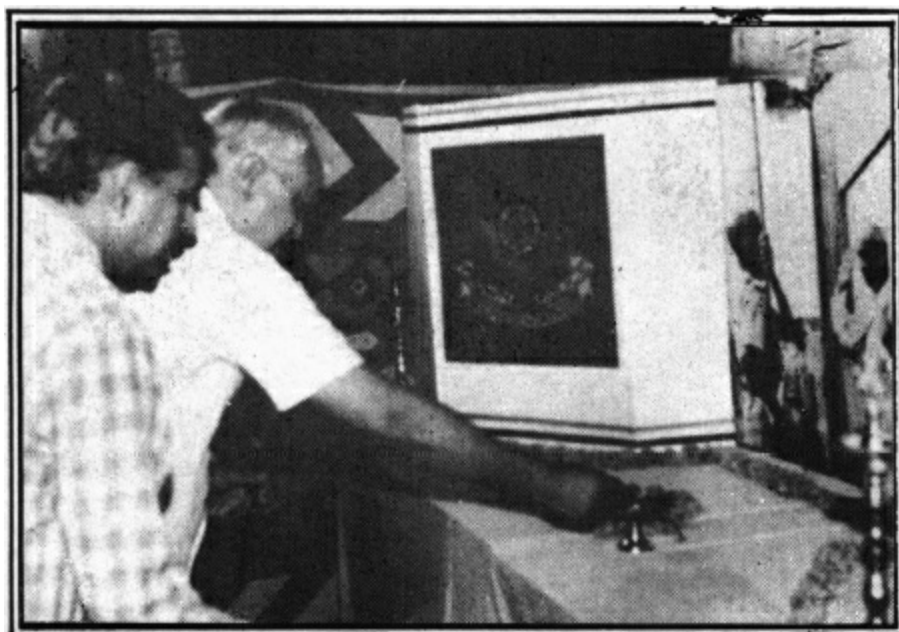
बल की प्रत्येक युनिट एवं कार्यालयों में बल के सदस्यों को यह शपथ उन के अधिकारियों ने दिलायी। महानिदेशालय के कार्मिकों को यह शपथ महानिरीक्षक परिचालन एवं प्रशिक्षण श्री जी.पी. दूबे ने दिलायी।

ज्ञातव्य है कि २० अगस्त स्व. राजीव गांधी का जन्म दिवस भी है। आतंकवाद के विरुद्ध सतत संघर्षरत एवं उसी की बलिवेदी पर बलिदान देने वाले व्यक्ति के लिये इस शपथ से बढ़कर और क्या श्रद्धांजलि हो सकती है।

अ. ना. शर्मा

(अ. ना. शर्मा)

समारोह 53 वां स्थापना दिवस



महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह दीप प्रज्ज्वालेत कर समारोह का उद्घाटन करते हुए



समारोह स्थल पर दो बालिकाओं से पुष्प ग्रहण करते हुए श्री डी.पी.एन. सिंह

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 27 जुलाई 92 को अपना 53 वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर के.रि.पु. बल के कार्मिकों को दिए एक संदेश में बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने कहा कि 'के.रि.पु. बल में हम सब लोगों के लिये यह न केवल एक खुशी का मौका है, अपितु यह एक ऐसा अवसर है, जब कि हम देश की एकता और अखंडता के प्रति प्रतिबद्धता की अपनी प्रतिज्ञा को दोहराते हैं और देश में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिये अपने को सहर्ष अर्पित करने को तत्पर होते हैं। उन्होंने कहा कि के.रि.पु. बल को अपने अतीत और अपनी उपलब्धियों पर गर्व है। हम देश के सम्मुख खड़ी चुनौतियों के प्रति भी सजग हैं। देश द्वारा के.रि.पु. बल के प्रति व्यक्त किए गए विश्वास को पूरा करने के लिये हम अपने उद्देश्य "सेवा एवं भक्ति" को हमेशा दिमाग में रखते हैं। इस मौके पर हम सभी यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि देश की एकता और अखंडता, शांति और सद्भाव को बनाए रखने के लिए हम कोई भी कदम उठाने से चूकेंगे नहीं, ताकि देश शांति और समृद्धि के पथ पर आगे की ओर बढ़ सके।'

53 वर्ष पूर्व 27 जुलाई, 1939 को के.रि.पु. बल का जन्म नीमच में एक बटालियन के रूप में हुआ था। उस समय यह बल क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के नाम से जाना जाता था। स्वतंत्रता के बाद इस का नाम बदल कर सेंट्रल रिजर्व पुलिस कर दिया गया। आज इस में 128 बटालियनें हैं। के.रि.पु. बल के जवान हर उस भूमिका को निभाते हैं जिस की कि एक पुलिस कर्मी एवं प्रशिक्षित व्यावसायिक सैनिक से उम्मीद की जाती है।

इस बल के बहुआयामीय विकास का नया पहलु सांप्रदायिक दंगों से निबटने के

लिए इस के तत्वाधान में गांठें किया गया रोंपेड़ एक्शन फोर्स हैं। वर्तमान में इस के तहत 10 बटालिनियों का गठन किया गया है। के.रि.पु. बल का इतिहास उपलब्धियों एवं सफलताओं का इतिहास है। 1983 से के.रि.पु. बल की मुख्य कार्यस्थली पंजाब रहा है। पंजाब पुलिस के बाद आतंकवाद से सीधे भिड़ने वाला के.रि.पु. बल ही सब से बड़ा बल है। पिछले 9 सालों में (21 जुलाई, 92 तक प्राप्त आंकड़ों के अनुसार) बल के जवानों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 2065 आतंकवादी मारे जा चुके हैं। तथा इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 5088 घातक हथियार बरामद किए हैं। मगर इस सब के एवज में बल को भारी कीमत चुकानी पड़ी है। बल के 177 अधिकारी और जवान कर्तव्य पर लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो चुके हैं। और 468 या तो गंभीर रूप से घायल हुए हैं या शारीरिक रूप से अक्षम हो गए हैं। पंजाब में बल द्वारा निभाई गई साहसपूर्ण भूमिका के लिए बल को अब तक 45 राष्ट्रपति के पुलिस पदक, 144 शौर्यवीरता के पुलिस पदक तथा एक पद्मश्री प्रदान की जा चुकी है।

पंजाब के बाद के.रि.पु. बल सर्वाधिक जम्मू कश्मीर में व्यस्त है। काश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियान में शामिल किए जाने के बाद से अब तक (21 जुलाई, 92 तक प्राप्त आंकड़ों के अनुसार) बल के 97 कार्मिकों ने इस अभियान में अपने प्राणों की आहुति दी है, जबकि 944 या तो गंभीर रूप से घायल हुए हैं या शारीरिक रूप से अक्षम हो चुके हैं। लेकिन दूसरी तरफ आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 195 आतंकवादी मारे गए एवं जवानों ने 972 घातक हथियार बरामद किए।

नवीन परिसर महानिरीक्षक पूर्वी सेक्टर कार्यालय का उद्घाटन



पूर्वी महानिरीक्षक कार्यालय काम्पलैक्स में अधिकारियों एवं अन्य कार्मिकों को संबोधित करते हुए
महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह

बल के पूर्वी क्षेत्र के लिए कार्यालय काम्पलैक्स का उद्घाटन बल के महानिरीक्षक श्री डी.पी.एन. सिंह ने 11 अगस्त, 92 को कलकत्ता में किया। बल के पूर्वी क्षेत्र के मुख्यालय के लिए किसी उचित कार्यालय स्थल की काफी लंबे समय से प्रतीक्षा की जा रही थी।

इस कार्यालय काम्पलैक्स के लिये 23 एकड़ से कुछ अधिक भूमि पश्चिम बंगाल सरकार ने लगभग एक करोड़ 13 लाख रुपये में उपलब्ध कराई है। इस भूमि पर कार्यालय काम्पलैक्स के साथ साथ आवासीय खंडों के निर्माण की भी योजना है।

इस अवसर पर आयोजित एक आकर्षक कार्यक्रम में बल के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों सहित पश्चिम बंगाल पुलिस तथा अन्य विभागों के भी कई वरिष्ठ व्यक्ति उपस्थित थे। इस मौके पर बोलते हुए बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने बल की छवि को निखारने के लिये उच्च श्रेणी के अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, व्यवहार कौशल तथा जन संपर्क पर जोर दिया। महानिदेशक महोदय ने भूमि उपलब्ध कराने के लिये प. बंगाल सरकार को धन्यवाद दिया। साथ ही उन्होंने बल के कार्मिकों के लिये तेजी से आवासीय खंडों को विकसित करने पर भी जोर दिया। उन्होंने कार्यालय काम्पलैक्स के तीव्र निर्माण कार्य के लिये महानिदेशक पूर्वी सेक्टर श्री के.आर.के.

प्रसाद द्वारा दिए गए योगदान की भी प्रशंसा की। महानिदेशक महोदय ने बल के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों के स्वस्थ एवं समृद्ध जीवन हेतु अपनी शुभकामनाएं भी अर्पित की।

नई बटालियन 112 बटालियन की दीक्षांत परेड



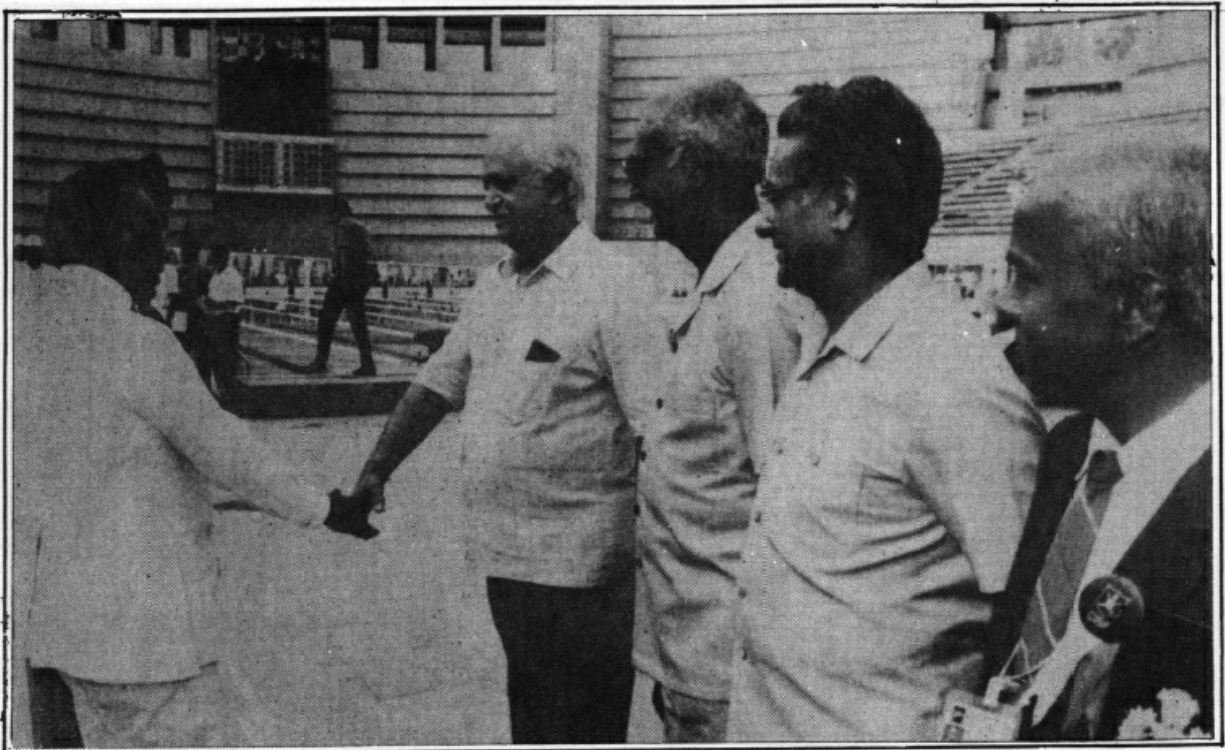
112 बटालियन की दीक्षांत परेड के अवसर पर उपस्थित मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुंदर लाल पटवा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुंदर लाल पटवा ने 19 जून, 1992 को नीमच में बल की नवगठित 112 बटालियन की दीक्षांत परेड की सलामी ली, परेड का नेतृत्व बटालियन के कमांडेंट ओ.डी. माथुर ने किया। इस मौके पर बल के पश्चिमी क्षेत्र के महानिरीक्षक एस.एन. माथुर भी उपस्थित थे।

बटालियन के रंगरूटों ने इस मौके पर आकर्षक परेड का प्रदर्शन किया एवं देश के प्रति निष्ठा एवं कर्तव्य निर्वाह की शपथ ली।

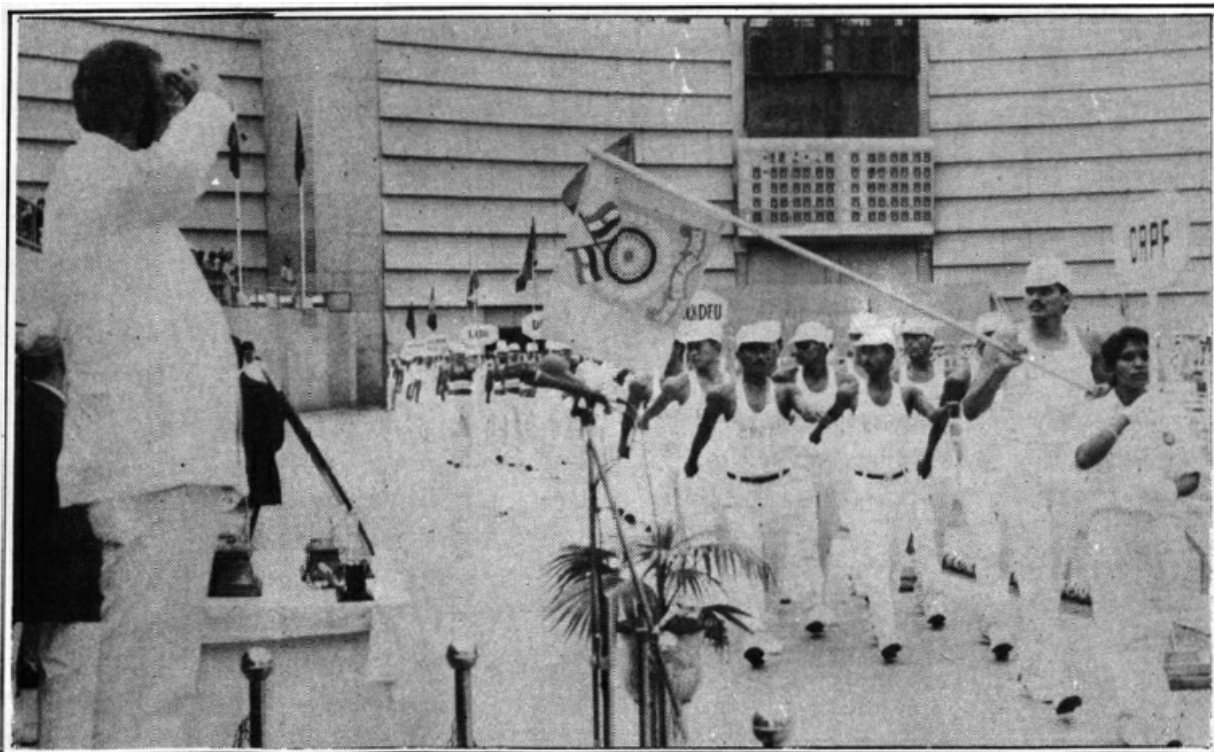
इस मौके पर बोलते हुए मुख्य आतिथे श्री सुंदर लाल पटवा ने जवानों को आकर्षक परेड की प्रशंसा की तथा सर्वश्रेष्ठ जवानों को पुरस्कार भी प्रदान किए। श्री पटवा ने 112 बटालियन के कार्मिकों के कल्याण हेतु मध्य प्रदेश सरकार की तरफ से एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने की भी घोषणा की।

मुख्य मंत्री महोदय ने इस मौके पर स्व. लांस नायक एल.आर. सोर की आश्रिता श्रीमती कानपुरी बाई को एक लाख 25 हजार रुपए तथा स्व. कांस्टेबल हलकूर राम के पिता श्री हजारी लाल को 2 लाख रुपए की अनुदान राशि के चेक भेंट किए। ये चेक क्रमशः जम्मू कश्मीर तथा पंजाब राज्य सरकारों द्वारा आतंकवादियों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए इन कार्मिकों के आश्रितों को अनुदान स्वरूप प्रदान किए गए हैं।

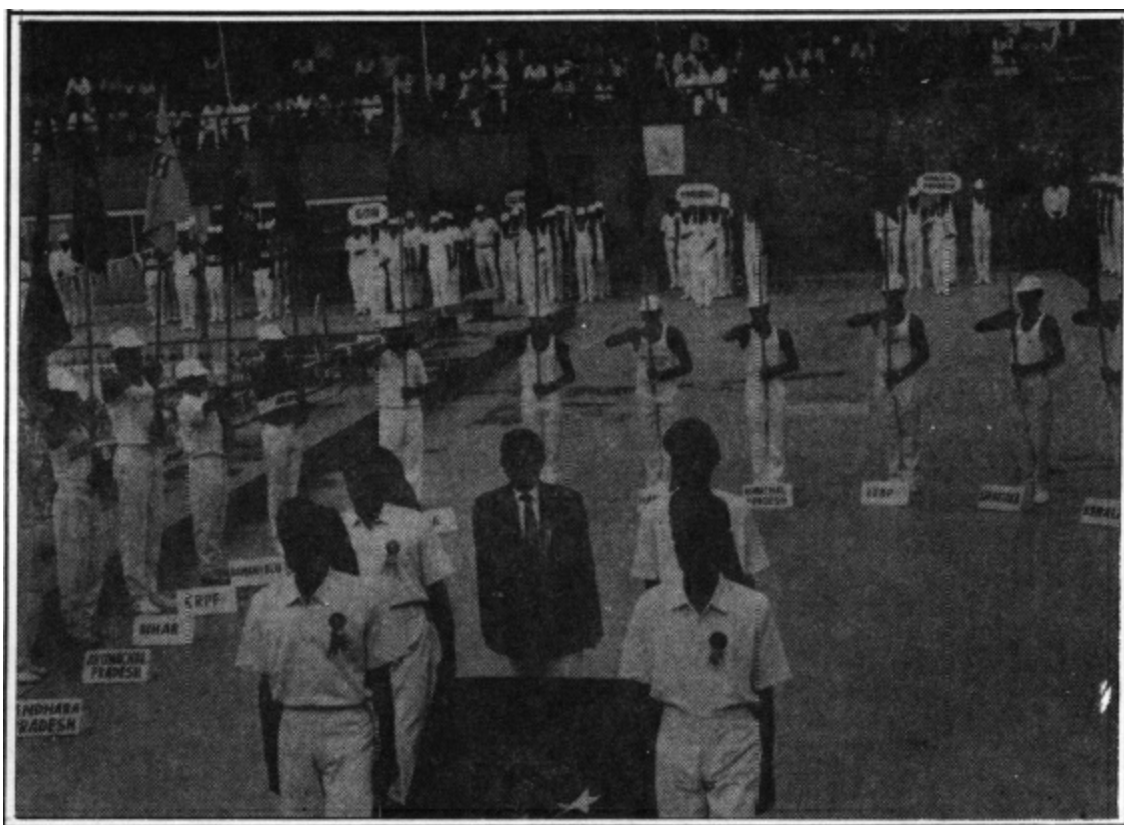
41 वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों की तैराकी प्रतियोगिताएं के.रि.पु. बल को दूसरा स्थान



गृह राज्य मंत्री श्री एम.एम. जैकब से परिचय प्राप्त करते हुए महानिदेशक के.रि.पु. बल श्री डी.पी.एन. सिंह



प्रतियोगी टीमों के मार्च की सलामी लेते हुए गृह राज्य मंत्री श्री एम.एम. जैकब



उद्घाटन समारोह के अवसर पर पंक्तिबद्ध प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीमों

इस वर्ष अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के तैराकों के भरपूर प्रयास के बावजूद बल को प्रतियोगिता में दूसरे स्थान से ही संतोष करना पड़ा।

16 से 20 अगस्त, 1992 तक नई दिल्ली के तालकटोरा तरनताल में हुयी इन प्रतियोगिताओं में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 42 चोटी के तैराकों ने भाग लिया। प्रतियोगिता की चैंपियनशिप सीमा सुरक्षा बल ने 224 अंक प्राप्त कर जीती। जबकि के.रि.पु.बल के तैराक भरपूर जोरआजमाइश के बावजूद मात्र 220 अंक ही बटोर पाए और इस प्रकार उन्हें दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। ज्ञातव्य है कि 1977 से के.रि.पु. बल की टीम का इस चैंपियनशिप पर एकाधिकार रहा है।

क्रास कंट्री दौड़ में भी बल की टीम को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। नायक राम करण भी दौड़ में दूसरा स्थान प्राप्त करने में सफल रहे।

प्रतियोगिता में बल के तैराकों का प्रदर्शन इस प्रकार रहा।

50 मीटर फ्री स्टाइल में सहायक कमांडेंट तथा सहायक कमांडेंट के. सोमेश्वर को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

100 मीटर फ्री स्टाइल में खजान सिंह द्वितीय तथा इंस्पेक्टर प्रेमजीत चौथे स्थान पर रहे।

200 मीटर फ्री स्टाइल में इंस्पेक्टर रंजीत सिंह दूसरे स्थान पर रहे तथा प्रेमजीत को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

400 मीटर फ्री स्टाइल में रंजीत सिंह द्वितीय तथा प्रेमजीत सिंह को चौथा स्थान प्राप्त हुआ।

1500 मीटर फ्री स्टाइल में रंजीत सिंह द्वितीय तथा प्रेमजीत सिंह को चौथा स्थान प्राप्त हुआ।

200 मीटर बैक स्ट्रोक में खजान सिंह दूसरे स्थान पर तथा सब इंस्पेक्टर दिलीप मलिक चौथे स्थान पर रहे।

100 मीटर बैक स्ट्रोक में खजान सिंह प्रथम तथा दिलीप मलिक पांचवे स्थान पर रहे।

200 मीटर बैक स्ट्रोक में एस. राधाकृष्णन प्रथम तथा सब इंस्पेक्टर रविंद्रा सिंह चौथे स्थान पर रहे।

200 मीटर बैक स्ट्रोक में एस राधा कृष्णनन प्रथम तथा हैड कांस्टेबल जी.आर. चैरी तीसरे स्थान पर रहे।

100 मीटर बटर फ्लाय स्ट्रोक में खजान सिंह को प्रथम तथा सब इंस्पेक्टर प्रदीप राणा को पांचवा स्थान प्राप्त हुआ।

200 मीटर बटर फ्लाय स्ट्रोक में रंजीत सिंह तीसरे तथा प्रदीप राणा चौथे स्थान पर रहे।

200 मीटर व्यक्तिगत मेडले में खजान सिंह प्रथम तथा रंजीत सिंह तीसरे स्थान पर

रहे।

400 मीटर व्यक्तिगत मेडले में रंजीत सिंह तीसरे तथा कांस्टेबल गोपा कुमार पांचवे स्थान पर रहे।



4 + 200 मीटर रिले में प्रथम स्थान हासिल करने वाली बल की टीम

4×100 मीटर फ्री स्टाइल रिले में बल की टीम को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ।

4×200 मीटर फ्री स्टाइल रिले में बल की टीम प्रथम स्थान पर रही।

4×100 मीटर फ्री स्टाइल रिले में बल की टीम दूसरे स्थान पर रही।

वाटर पोलो में बल की टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

सम्मान

23 कार्मिकों को पुलिस पदक



महानिरीक्षक श्री आर.के. शर्मा कमांडेंट (121 बटा.) श्री एम.सी. सोम

भारत के उपराष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 23 कार्मिकों को पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इन में से दो कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिये पुलिस पदक प्रदान किया गया है।

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं : महानिरीक्षक (पंजाब व चंडीगढ़) श्री आर.के. शर्मा एवं 121 बटालियन के कमांडेंट एम.सी. सोम। इन दोनों ही अधिकारियों को इस से पूर्व सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदकों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

इस अवसर पर सराहनीय सेवाओं के लिये पुलिस पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं- उपनिदेशक श्री भोलानाथ, कमांडेंट- एस.सी. मिश्रा, सहायक निदेशक (आर.ए.एफ.) सुखजिंदर सिंह, सहायक निदेशक (आई.एस.ए.) जसबीर सिंह, कमांडेंट (66 बटालियन) डी.ए. धनंजैया, कमांडेंट (50 बटालियन) पी.वी. पेडीकेयल, सी.एम.ओ. (बेस अस्पताल-11) डा. एस.एन. पटनायक, उप कमांडेंट (120 बटालियन) एस.एस. सिंह, उप कमांडेंट (79 बटालियन) गुरमीत सिंह, सहायक कमांडेंट (6 बटालियन) एस.आर. तिवारी, सूबेदार मेजर/कार्यालय अधीक्षक (मुख्यालय) कुंदन सिंह बिष्ट, सूबेदार मेजर (92 बटालियन) अर्जुन सिंह, इंस्पेक्टर सुलतान सिंह (60 बटालियन), सब इंस्पेक्टर एस.डब्लू. हुसैन (60 बटालियन), एस.सी. पंत (66 बटालियन), प्रेमनाथ (98 बटालियन), एम.डी. चाको (3 सिगनल), हैड कांस्टेबल जोर्ज इक्का (41 बटालियन), हैड कांस्टेबल बंसीधर राम (98 बटालियन) तथा कुक दिल बहादुर (120 बटालियन), एवं हैड कांस्टेबल (बैंड) अय्या स्वामी (ग्रुप केंद्र पल्लीपुरम)।

के.रि.पु. बल के तीन कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

भारत के राष्ट्रपाते ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के तीन कामैकों को पंजाब में अपने कर्तव्यपालन के दौरान दिखाई गई उत्कृष्ट वीरता, साहस एवं कर्तव्यपरायणता के लिये शौर्यवीरता के लिये पुलिस पदकों में सम्मानित किया है।

76 बटालियन के सहायक कमांडेंट राम पाल सिंह को शौर्यवीरता के लिये पुलिस पदक बार प्रदान किया गया है। श्री राम पाल को इस से पूर्व भी शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है। पुलिस पदक पाने वाले अन्य दो कार्मिक हैं 76 बटालियन के इंस्पेक्टर मोहन सिंह तथा 89 बटालियन के कांस्टेबल धर्मराज।

10 अक्टूबर, 1990 को 76 बटालियन की एक टुकड़ी की पट्टी क्षेत्र में दोवा कैनल, पुल नं. 2 पर आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में तीन कुख्यात आतंकवादी मारे गए। इस मुठभेड़ में सहायक कमांडेंट रामपाल सिंह तथा इंस्पेक्टर मोहन सिंह को अभूतपूर्व वीरता, साहस एवं कर्तव्यपरायणता के लिये यह पदक प्रदान किए गए हैं।

89 बटालियन के कांस्टेबल धर्मराज ने उस समय अभूतपूर्व वीरता का परिचय दिया, जब कि वह गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद दृढ़ता से आतंकवादियों का सामना करता रहा, और उस के द्वारा चलाई गई गोलियों से एक कुख्यात आतंकवादी मारा गया। यह मुठभेड़ 4 अगस्त, 1991 को चाचराड़ी तथा टाखर गांव के पास हुयी।

मणिपुर के मुख्य मंत्री द्वारा के.रि.पु. बल की प्रशंसा

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक एवं उप महानिरीक्षक इम्फाल को भेजे एक पत्र में मणिपुर के मुख्य मंत्री श्री आर.के. दोरेंद्र सिंह ने मणिपुर की जेलों में कैदियों की सुरक्षा एवं निरीक्षण ड्यूटी में तैनात के.रि.पु. बल के कार्मिकों के कार्य की प्रशंसा की है।

मणिपुर के मुख्य मंत्री बल के कार्मिकों की कर्तव्यपरायणता एवं सजगता से अत्यधिक प्रभावित थे तथा इस के लिए उन्होंने मणिपुर में तैनात बल के सभी कार्मिकों की प्रशंसा की है।

प्रधानमंत्री की रजत कप निबंध प्रतियोगिता-1991

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के डिप्टी कमांडेंट श्री रामअनुज को प्रधानमंत्री की रजत कप निबंध प्रतियोगिता-1991 का द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस प्रतियोगिता का आयोजन हैदराबाद स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी ने किया था। प्रतियोगिता के निबंध का विषय था, “कम्युनिटी पार्टिसिपेशन इन बेटर पुलिसिंग।” इस से पूर्व भी श्री रामअनुज इस प्रतियोगिता में पुरस्कार जीत चुके हैं।

प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान हासिल करने पर श्री रामअनुज को 750 रुपए नकद एवं एक प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।

कल्याण गतिविधियां आश्रिताओं को अनुदान



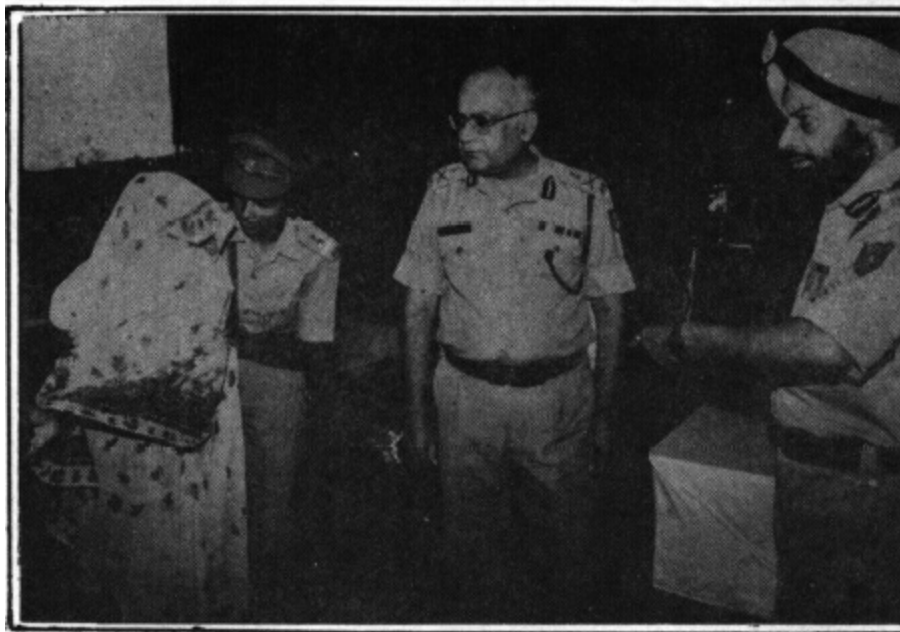
आश्रिताओं को अनुदान राशि के चेक भेंट करने के बाद उनके साथ श्रीमती डी.पी.एन. सिंह

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 13 बटालियन के ला. नायक मथुरा लाल तथा 76 बटालियन के कांस्टेबल महावीर प्रसाद मीणा की आश्रिताओं को 30 जुलाई, 92 को महरौली स्थित 76 बटालियन स्थल पर एक सादे एवं भावभीने समारोह में अनुदान राशि के चेक भेंट किए गए। आश्रिताओं को यह चेक के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह की धर्मपत्नी ने प्रदान किये।

13 बटालियन के लांस नायक मथुरा लाल 18 नवंबर, 1991 को हब्बा कदल श्रीनगर में एक आतंकवादी. हमले का शिकार हो गये। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने आतंकवादियों का डट कर मुकाबला किया। इस मुठभेड़ में एक कुख्यात आतंकवादी मारा गया तथा भारी मात्रा में गोली बारुद बरामद किया गया। लांस नायक मथुरा लाल भी बाद में वीरगति को प्राप्त हुए। जम्मू कश्मीर सरकार ने लांस नायक मथुरा लाल द्वारा दिखाए गए अदम्य साहस एवं वीरता के लिये उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जगदेशी देवी को 1.25 लाख रुपए की अनुदान राशि भेंट की है।

76 बटालियन के कांस्टेबल महावीर प्रसाद मीणा ने 10 जून, 1991 को अमृतसर के भिखीविंड क्षेत्र के थाथली गांव में एक संयुक्त आतंकवाद विरोधी अभियान में आतंकवादियों का सामना करते हुए गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद एक कुख्यात आतंकवादी को मार गिराया। मगर वह स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस मुठभेड़ में तीन कुख्यात आतंकवादी मारे गये तथा भारी मात्रा में गोला बारुद बरामद किया गया। कांस्टेबल महावीर प्रसाद मीणा द्वारा दिखाए गए अदम्य साहस एवं वीरता के लिए पंजाब सरकार ने उन की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी को दो लाख रुपए की अनुदान राशि भेंट की है। साथ ही सेना द्वारा कांस्टेबल मीणा को मरणोपरांत सेना पदक भी प्रदान किया गया है।



श्रीमती सावित्री देवी को चैक भेंट करने के बाद उनसे चर्चा करते हुए श्री सी.एस. द्विवेदी एवं श्री जोगिंदर सिंह

नई दिल्ली, कालकाजी स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 50 बटालियन स्थल पर 13 अगस्त, 1992 को एक सादे एवं भावभीने समारोह में बल के अपर महानिदेशक श्री सी.एस.द्विवेदी ने बल की 14 बटालियन के हैड कांस्टेबल रामदेव दुबे की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी को अनुदान राशि के दो लाख रुपए का चैक भेंट किया।

हैड कांस्टेबल रामदेव दुबे अमृतसर में भूतपूर्व संसद सदस्य डा. बलदेव प्रकाश की निजी सुरक्षा में तैनात थे। 15 नवंबर, 1991 को डा. बलदेव प्रकाश की कार पर आतंकवादियों ने घात लगाकर रिमोट कंट्रोल बम द्वारा हमला किया। इस हमले में कार की अगली सीट पर बैठे रामदेव दुबे वीरगति को प्राप्त हुए। गाड़ी का ड्राइवर तथा पंजाब पुलिस का एक कांस्टेबल भी इस हमले में मारे गए। डा. बलदेव प्रकाश को हल्की चोटें आयीं, जबकि पंजाब पुलिस के तीन जवान घायल हुए तथा दो नागरिकों की मृत्यु हुई।

हैड कांस्टेबल रामदेव दुबे द्वारा दिखाई कर्तव्य के प्रति निष्ठा साहस एवं वीरता के लिए पंजाब सरकार ने उनकी आश्रिता श्रीमती सावित्री देवी को अनुदान स्वरूप दो लाख रुपए भेंट किए हैं।

इस अवसर पर दिवंगत हैड कांस्टेबल राम देव दुबे को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपर महानिदेशक श्री सी.एस.द्विवेदी ने उनके परिवार को हर संभव सहायता

उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।

बल के उत्तरी क्षेत्र के महनिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह ने इस अवसर पर उपस्थित दिवंगत रामदेव दुबे के पुत्र को तत्काल रोजगार देने का आश्वासन दिया।

संक्षिप्त समाचार

के.रि.पु. बल स्कूल में स्वतंत्रता दिवस



बच्चों द्वारा बनाई गई वस्तुओं को देखते हुए अपर महानिदेशक श्री सी.एस. द्विवेदी नई दिल्ली रोहिणी स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल में 14 अगस्त 1992 को स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर के.रि.प.बल के अपर महानिदेशक श्री सी.एस. द्विवेदी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि श्रीद्विवेदी ने इस अवसर पर बच्चों द्वारा लगाई गई एक प्रदर्शनी तथा रंगारंग कार्यक्रम को भी देखा।

झंडा रोहण के बाद बच्चों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने उन से देश की उन्नति के लिये तथा भारत की 'विभिन्नता में एकता' की भावना को बनाए रखने के लिए काम करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर प्रस्तुत सभी कार्यक्रम स्वतंत्र भारत के बच्चों को स्वतंत्र भारत के प्रति भावनाओं को उजागर कर रहे थे।

माह जुलाई, 92 में मृत बल के कार्मिक

माह जुलाई, 1992 में के.रि.पु.बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कां. राजकुमार (121 बटा.), नायक उम्मेद सिंह (18 बटा.), ला. नायक ओमप्रकाश (18 बटा.), इंस्पेक्टर सरदारा सिंह (113 बटा.), का. दर्शन सिंह (49 बटा.), नाई देशाराम (36 बटा.), कां. पी. श्रीनिवास (120 बटा.), ना. ड्रा. सोहन सिंह (आर.टी.सी. IV), कां. जोगिंदर सिंह (13 बटा.), कां. संजीव कुमार (77 बटा.), कमांडेंट (अस्थायी), मोहन सिंह (11 बटा. 126 अगज.), कां. मनोज कुमार चौधरी (98 बटा.), धोबी के. चंदू (ग्रु.के. पल्लीपुरम), है.कां. विजय शंकर रे (98 बटा.), नायक मुंशी राम (5 बटा.), कां. टी. रवि (98 बटा.) नायक सुंदर गिरी (आर.टी.सी.-II), कां. हेमा बोरा (38 बटा.), कां. बालिंदर विश्वकर्मा (53 बटा.), कां. झूठा राम (74 बटा.), कुक अमर सिंह (34 बटा.) कां. दुप्पलापुकी सदुगणाराव (107 बटा.) कां. पी. गणापति (106 बटा.), वाटर कैरियर जगदीश प्रसाद (67 बटा.), कां. हरी सिंह (ग्रु. के. दीमापुर) एवं नायक जगदीश चंदर (109 बटा.)।

इन के अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार सितंबर, 1991 में कां. विनोद कुमार (76 बटा.), मई, 1992 में लांस नायक जी.बी. अनवाल (14 बटा.), तथा जून, 1992 में लांस नायक चमनलाल बाली (54 बटा.) की भी मृत्यु हुई।

के.रि.पु. बल के जवान ने वृद्धा को बचाने के प्रयास में जान दे दी

पंजाब में आतंकवादियों से जूझ रहे केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों को कई बार दूसरों की जिंदगी बचाने के प्रयास में अपनी जान की बाजी भी लगानी पड़ जाती है। इसी कड़ी में के.रि.पु. बल के एक नायक को 75 वर्षीय वृद्ध महिला की जान बचाने के प्रयास में अपनी जान गंवानी पड़ी।

के.रि.पु. बल के नायक घनश्याम देव प्रसाद की अमृतसर में तहसीलपुरा रेलवे क्रासिंग पर 75 वर्षीय शंप्पा रानी को रेल से कटने से बचाने के प्रयास में मृत्यु हो गई। यह महिला रेल लाइन के किनारे चल रही थी कि वह फ्रंटियर मेल के इंजन की चपेट में आ गई। महिला ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। नायक घनश्याम देव प्रसाद ने महिला को बचाने का प्रयास किया। इस प्रयास में वह स्वयं बुरी तरह जखमी हो गया और अस्पताल में उसने दम तोड़ दिया।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल केंद्रीय जोखिम निधि से माह जुलाई 92 में मृत्यु के 22

मामलों में कुल 7,70,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इन में प्रांते मामला 10,000 रुपए की केंद्रीय कल्याण निधि एवं सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के पांच मामलों में कुल 75,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

के.रि.पु. बल ने 218 आतंकवादी गिरफ्तार किये

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह जुलाई, 92 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ों में 218 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई 193 मुठभेड़ों में 67 आतंकवादी मारे गए तथा दो गंभीर रूप से घायल हुए। इन में पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर में हुई मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

मारे गये आतंकवादियों में लोक मुक्ति फोर्स का जगतार सिंह उर्फ जोरा उर्फ जनरल जोरा सिंह, लोक मुक्ति फोर्स जब्बल का एरिया कमांडर मुख्तियार सिंह, भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान (मनोचहल) का स्वयंभू ले. जनरल सरवन सिंह उर्फ सूमा, पट्टी क्षेत्र का एरिया कमांडर गुरदर्शन सिंह उर्फ बिट्टा तथा उत्तर प्रदेश का एरिया कमांडर सुखवंत सिंह उर्फ गुक, खालिस्तान कमांडो फोर्स (जप्फरवाल) का स्वयंभू ले. जन. गुरमीत सिंह उर्फ गीता, 'बी' श्रेणी का छिंदर सिंह उर्फ चीना, भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान (मनोचल) का एरिया कमांडर सुरजीत सिंह, खालिस्तान कमांडो फोर्स (जप्फरवाल) का परमजीत सिंह उर्फ पम्मा, बाबा वाधवा सिंह जत्येबंदी आफ खालिस्तान का चीफ जनरल अमरीक सिंह, डिप्टी चीफ हरींदर सिंह उर्फ रंधावा एवं एरिया कमांडर निशान सिंह उर्फ काकू, भिंडरावाला टाइगर्स फोर्स का एरिया कमांडर जसपाल सिंह पाला (मारी), खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजावर) का एरिया कमांडर हरीश सिंह तथा खालिस्तान लिबरेशन फ्रंट का मुखिया गुरजंत सिंह बुध सिंह वाला उर्फ निछत्तर सिंह जैसे कुख्यात आतंकवादी भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 90 घातक हथियार तथा 1215 सजीव गोली बारुद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में 25 ए.के. 47 राइफलें, तीन ए.के. 56 राइफलें, तीन राकेट लांचर, तीन एस.एल.आर., एक एल.एम.जी., एक जी.पी.एम.जी., 6 राइफलें, 6 माउजर तथा 23 पिस्तौलें शामिल हैं।

मगर इस सब के एवज में बल के 10 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 48 गंभीर रूप से घायल हुए।

नदियों से चलते रहना सीखो!!!

पृथ्वी से सहना सीखो, नदियों से चलते रहना सीखो।

वायु से मृदुलता और तेजी, पानी से शीतलता सीखो।

श्वान से भाक्ते और काक से चेष्टा, दुश्मन से सावधान रहना सीखो।
चतुरों से चतुराई सीखो, मित्रों से कुर्बानी सीखो।

कष्टों को सहना सीखो, विपदाओं में रहना सीखो।
फूलों से कोमलता और मां से अपनी ममता सीखो।

पत्नी से प्यार, बच्चों से व्यवहार, सारस से प्रयास सीखो।
समुद्र से गहराई, और चीते से चतुराई सीखो।

कोयल से मीठी वाणी और लताओं से मिलन की आस सीखो।
औरों को जीने दो, और औरों के लिए जीना सीखो।

खिलाड़ी से जीतना सीखो, गिर कर फिर उठना सीखो।
दीपक से आशा सीखो, घोर तिमिर में जलना सीखो।

आशा सीखो, ईमानदारी सीखो, दलितों का सहारा बनना सीखो।
आतंक और भय के घटाटोप में, बन शमशीर चमकना सीखो।

उ.नि. मीनाराम यादव
71 वीं बटा. के.रि.पु.बल

दहेज का कहर

कब खत्म होगा ये दहेज का कहर,
किसी को आग लगाना किसी को देना जहर,
बूढ़ी होते ही औरतें भूल जाती हैं यह अहसास,
कल तक वो भी बहू थीं जो आज बनी हैं सास,
ननदें ये क्यों नहीं सोचती, जैसे वो अपनी मां को प्यारी हैं,
उनके घर में जो भाभी आई वो भी किसी की दुलारी है,
इस बात को ये कब समझेंगी, इसी बात का रोना है,
आज भाभी पर जो कर रही, कल तुझ पर भी वो होना है,
सात भांवरे ली जिससे, और प्यार की नगरी बसाई है,

देवता समझा था जिसे अपना, वो निकला एक कसाई है,
देवर लोगों तुम भी समझो, तुमसे बस यह कहना है,
जिस भाभी पर अत्याचार किया, वो भी तो किसी की बहना है।

रमेश चन्द्र यादव
121 बटा. के.रि.पु.बल

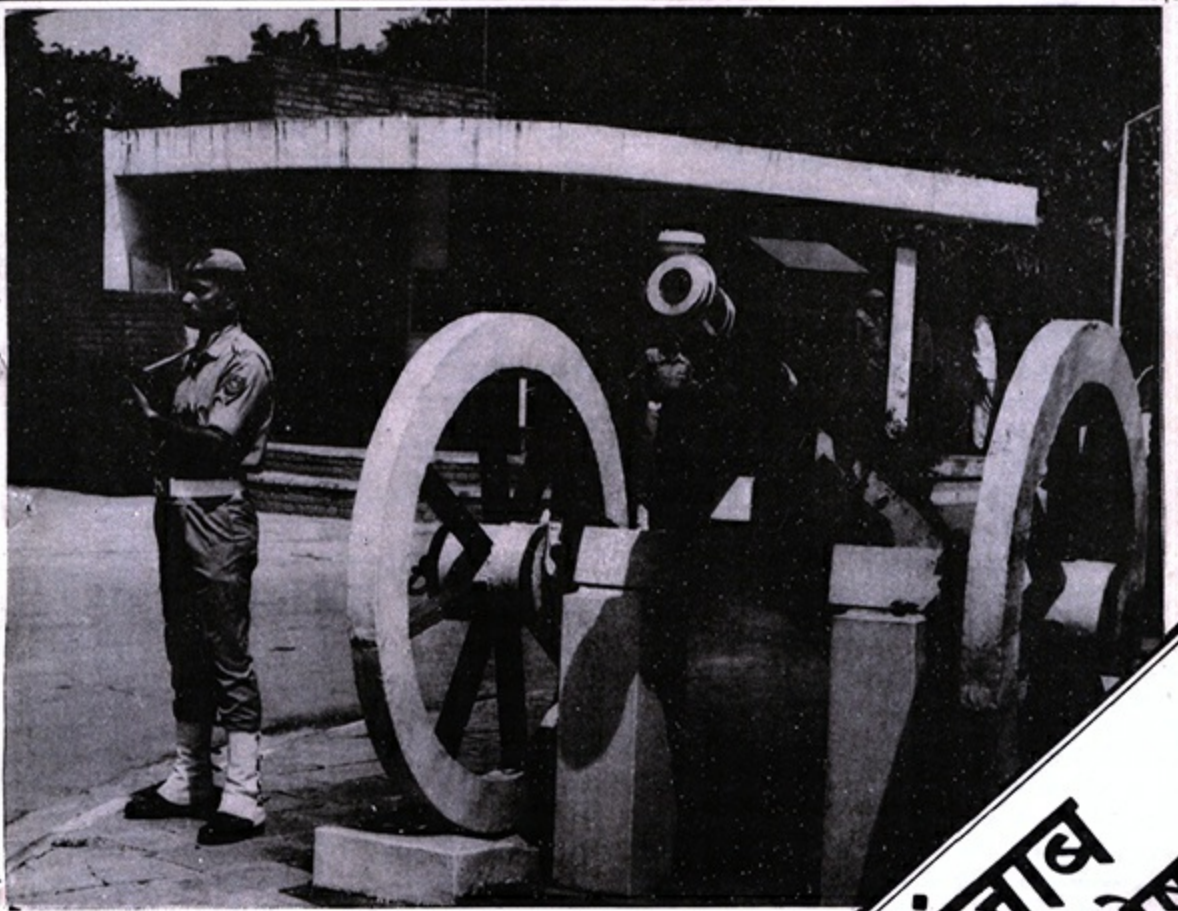


महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह महानिरीक्षक पूर्वी कार्यालय का उद्घाटन करते हुए।

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, 1, सी० जी० ओ० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ोदा कलां, नई दिल्ली-110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : फ्लेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3275184, 3266571

सौ.आर.पौ.एफ. समाचार

खंड-5 अंक-6 मूल्य-1.95 रुपए 30 सितम्बर, 1992 8 अश्विन, शक 1914



पंजाब राजभवन के बाहर सुरक्षा पर तैनात बल का जवान

पंजाब
पर विशेष

रेपिड एक्शन फोर्स अधिकारियों हेतु कोर्स



कोर्स में शामिल अधिकारियों को संबोधित करते हुए कोर्स निर्देशिका श्रीमति सान्याल.

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के तत्वाधान में सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए गठित किए गए रेपिड एक्शन फोर्स के अधिकारियों के लिए रोहिणी स्थित राष्ट्रीय अपराध शास्त्र एवं विधि विज्ञान संस्थान द्वारा आयोजित समकालीन सामाजिक स्थितियां एवं जागरुकता विषय कोर्स 21 सितंबर, 1992 को विधिवत रूप से प्रारंभ किया गया। इस कोर्स का संचालन डा. (श्रीमति) एस. सान्याल ने किया।

कोर्स का उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने रेपिड एक्शन फोर्स का संक्षिप्त परिचय देते हुए कोर्स में भाग ले रहे अधिकारियों से अपने अंदर नेतृत्व के गुणों को विकसित करने के लिए कहा। उन्होंने अधिकारियों का आह्वान किया कि वे अपने कार्य को एक मिशन की तरह लेकर आगे बढ़ें। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे समस्याओं एवं स्थितियों से निबटते समय पूर्वाग्रहों से दूर रह कर एक संतुलित सीमा अपनाएं, यही देश हित में भी होगा। उन्होंने आर.ए.एफ. के गठन, इसके उद्देश्य एवं भूमिका के विषय में जानकारी भी दी।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रख्यात विधि विशेषज्ञ तथा भारतीय विधि आयोग के सदस्य प्रो. पी.एन. बक्शी ने रेपिड एक्शन फोर्स तथा मानव अधिकारों से जुड़े मुद्दों पर प्रकाश डाला। इस एक सप्ताह के कोर्स में अपने अपने क्षेत्रों के विद्वान शिक्षाविदों एवं समाज शास्त्रियों ने समकालीन सामाजिक स्थितियां एवं जागरुकता विषय के विभिन्न पहलुओं से अधिकारियों को अवगत कराया।

ज्ञातव्य है कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 10 बटालियनों को सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए बनाए गए रेपिड एक्शन फोर्स में परिवर्तित कर दिया गया है। इस फोर्स का गठन इस प्रकार किया गया है कि यह

फोसे एक पुलिस फोसे से अधिक राहत, एवं बचाव दल के रूप में कार्य करे।

जोखिम निधि लाभ

के.रि.पु. बल जोखिम निधि से माह अगस्त, 1992 में मृत्यु के 11 मामलों में कुल 3,85,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रत्येक मामला 10,000 रुपए की केंद्रीय कल्याण निधि एवं सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के 5 मामलों कुल 75,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

विविध

के.रि.पु. बल स्कूल में वार्षिक उत्सव



महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह बच्चों द्वारा बनाई गई वस्तुओं को देखते हुए

नई दिल्ली, रोहिणी स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने 30 सितंबर, 1992 को हर्षोल्लास के साथ अपना वार्षिक उत्सव मनाया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों ने जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी एक प्रदर्शनी का भी

आयोजन किया, जिसमें बच्चों ने अपने हाथों से बनाई वस्तुएं प्रदर्शित की थी। यह प्रदर्शनी वार्षिक उत्सव समारोह का मुख्य आकर्षण थी।

प्रदर्शनी का उद्घाटन के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने किया। इस अवसर पर श्री डी.पी.एन. सिंह ने अपनी अपनी कक्षाओं में सर्वोत्तम स्थान हासिल करने वाले तथा बोर्ड की परीक्षाओं में विशिष्टता प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कार भी वितरित किए।

इस मौके पर बोलते हुए श्री सिंह ने स्कूल में शिक्षा के स्तर तथा बच्चों की प्रतिभा की भरपूर प्रशंसा की। उन्होंने बच्चों को उनके प्रदर्शन के लिए बधाई देने के साथ साथ उन्हें शिथिलता से दूर रहने की भी सलाह दी ताकि उनकी कार्यकुशलता प्रभावित न हो।

इस मौके पर बच्चों ने एक रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

आश्रिता को अनुदान

84 बटालियन के कमांडेंट एस.एस. गिल ने 22 बटालियन के कांस्टेबल मासा सिंह के आश्रितों को 50,000 रुपये की अनुदान राशि का चेक भेंट किया। ये चेक सिपाही मासा सिंह की माता श्रीमती सुरजीत कौर ने प्राप्त किया।

कांस्टेबल मासा सिंह 7 दिसंबर, 1991 को मणिपुर इम्फाल के एक बैंक से ले जाई जा रही नकदी की सुरक्षा टीम में शामिल थे। जैसे ही यह पार्टी लाकचो के नजदीक पहुंची, उस पर आधुनिक शस्त्रों से लैस विद्रोहियों ने हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद मासा सिंह दृढ़ता के साथ आतंकवादियों का सामना करता रहा। मगर शरीर में चार गोलियां लगी होने के कारण उसने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया।



श्री गिल कांस्टेबल मासा सिंह की माता को अनुदान राशि का चेक भेंट करते हुए

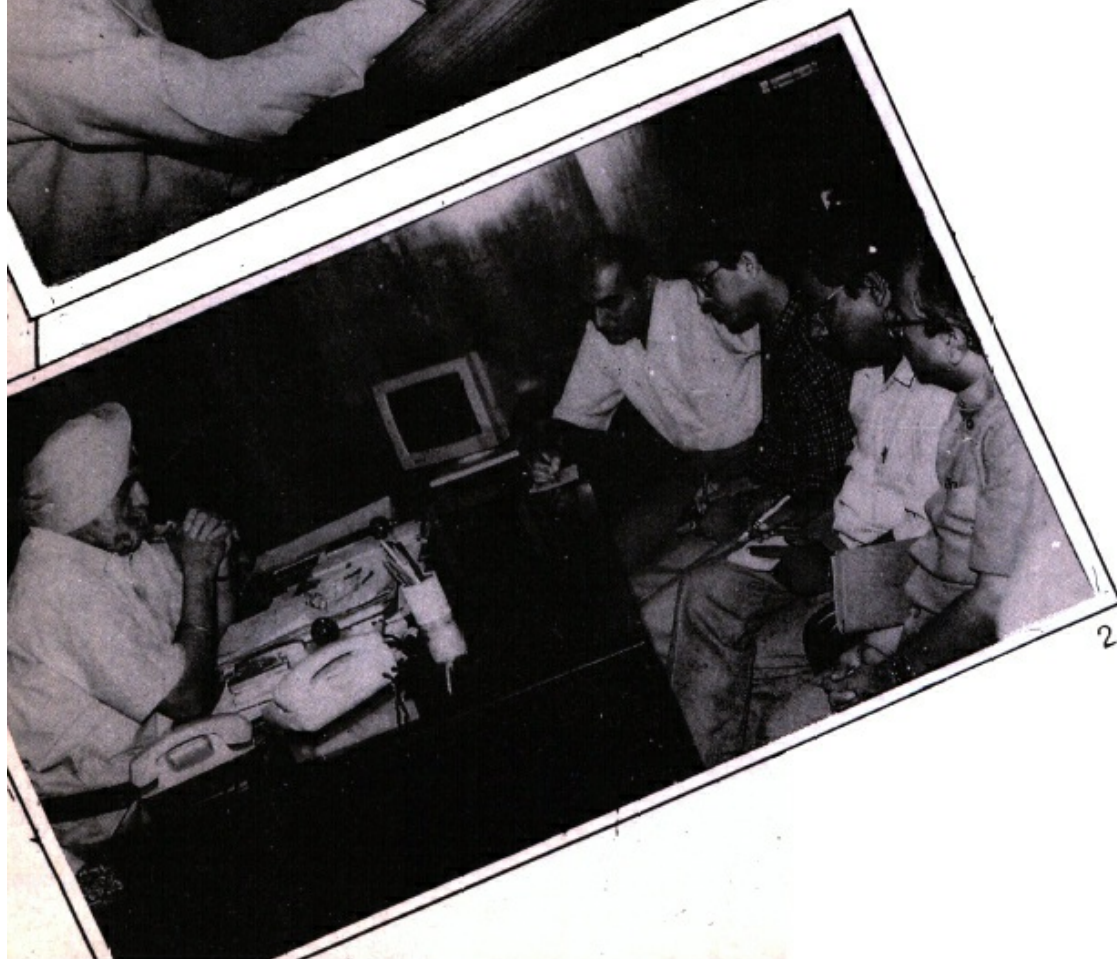
पंजाब बाजी अब हमारे हाथ में

लेख-अ.ना. शर्मा छाया : सतीश खन्ना

पंजाब से आतंकवाद का सफाया करने के लिए शुरू किए गए संयुक्त अभियान “ऑपरेशन नाइट डामिनेंस” की वजह से अब खाड़कूओं की जान सांसत में पड़ गई नजर आती है। सरक्षा बलों की संयुक्त कार्रवाई की वजह से एक ओर रात के अंधेरे में खाड़कू कोई वारदात करने का साहस नहीं कर पा रहे हैं तो दूसरी ओर स्थानीय निवासी रात में बिना किसी खौफ के घर से निकलने की हिम्मत जुटाने लगे हैं।



1.



2.

1. दिल्ली से आए पत्रकारों से बातचीत करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह।
2. पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री के.पी.एस. गिल पत्रकारों को पंजाब के हालात की जानकारी देते हुए।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, सेना और पंजाब पुलिस का एक संयुक्त अभियान राज्य में स्थिति पूरी तरह 'सामान्य होने तक चलता रहेगा। बेहतर तालमेल के साथ अब गांव-गांव में घात लगाकर खाड़कुओं का सफाया किया जा रहा है। कुछ समय पहले तक सुरज ढलते ही वीरान हो जाने वाली सड़कों और बाजारों में फिर से गहमागहमी शुरू हो गई है।

हमारे साथ दिल्ली से आए पत्रकारों को पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री के.पी.एस. गिल ने बताया कि वह चाहते हैं कि राज्य में स्थायी रूप से पूरी तरह शांति का माहौल बने। इसी लक्ष्य को शीघ्र हासिल करने के लिए ही स्थायी रूप से "आपरेशन नाइट डामिनेंस" चलाया जा रहा है।

श्री गिल ने बताया कि राज्य में कई प्रमुख खाड़कू मारे जा चुके हैं। राज्य में जनता से बेहतर और ठोस सूचनाएं मिलने की वजह से सुरक्षा बलों का खाड़कुओं पर दबाव बढ़ गया है। राज्य की स्थिति को पहले से काफी बेहतर बताते हुए उन्होंने कहा कि इसका मुख्य कारण अर्द्धसैनिक बल के रूप में अब यहां सिर्फ केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की तैनाती भी है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए पुलिस महानिदेशक ने कहा कि इस समय सिर्फ एक अर्द्धसैनिक बल होने की वजह से सेना, अर्द्धसैनिक बल और पंजाब पुलिस में बेहतरीन तालमेल भी हो रहा है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिरीक्षक (पंजाब) तथा पंजाब पुलिस के अतिरिक्त महानिदेशक आर.के. शर्मा ने वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यदि बेहतर हथियार तथा सुविधाएं उपलब्ध हो जाएं तो खाड़कुओं का अधिक प्रभावी तरीके से खात्मा किया जा सकता है।



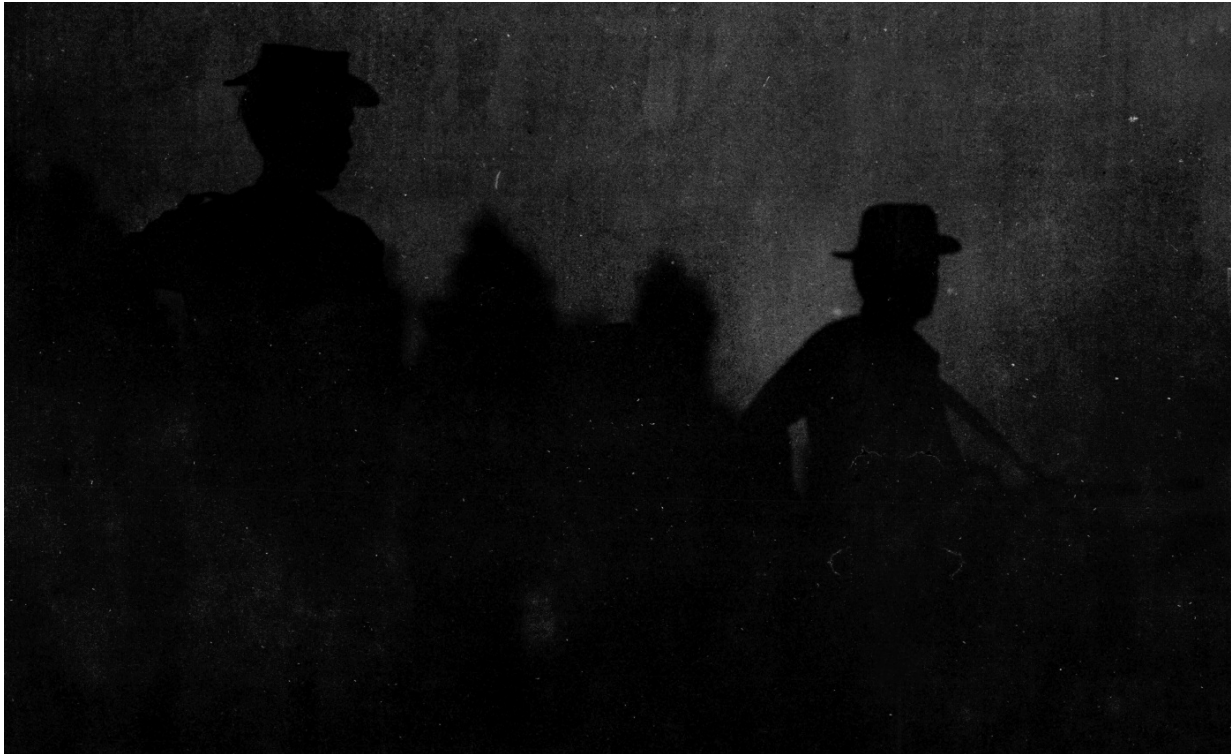


पंजाब में आतंकवादियों के विरुद्ध कार्रवाई में रत बल के जवान।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की आवश्यकताओं के बारे में उन्होंने कहा कि उसे राकेट लांचर, मीडियम मशीन गन, बुलेट प्रूफ वाहनों और जैकेटों की आवश्यकता है। राकेट लांचर होने पर इमारतों के भीतर से मोर्चा लेने वाले खाड़कुओं से लंबे समय तक चलने वाली मुठभेड़ की अवधि कम हो जाएगी तथा सुरक्षा बल के जवानों का मनोबल भी ऊंचा रहेगा। उन्होंने कहा कि लड़ाई के दौरान इस तरह की सुविधाओं में विलंब कई बार घातक भी हो सकता है।

श्री शर्मा ने कहा कि इस समय खाड़कुओं के खिलाफ मिली महत्वपूर्ण बढ़त को बरकरार रखने के उद्देश्य से केंद्रीय रिजर्व पुलिस की कंपनियों की संख्या बढ़ा कर 468 की जा रही है। संचार व्यवस्था में भी सुधार किया जा रहा है।

“आपरेशन नाइट डामिनेंस” के तहत खाड़कुओं के खिलाफ की जा रही कार्रवाई पत्रकारों के इस दल ने स्वयं भी देखी। रात के अंधेरे में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के काफिले के साथ इस दल को खाड़कुओं के वर्चस्व वाले अमृतसर के खतरनाक क्षेत्रों में ले जाया गया।



आपरेशन नाइट डामिनेंस में बल के जवान

इस अभियान के तहत गन्ने तथा धान के खेतों में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और पंजाब पुलिस के जवान मुस्तैदी से खाड़कुओं की तलाश में घात लगाए रहते हैं। एक निश्चित दायरे के भीतर कच्ची-पक्की सड़कों पर रास्ता साफ करके सुरक्षा बल मोर्चा बांधता है। इसके बाद अलग-अलग टुकड़ियों में आधुनिक हथियारों से लैस ये जवान और इनके अधिकारी गश्त लगाते हैं।

रात के अंधेरे में खाड़कुओं की गतिविधियों तथा उनकी मौजूदगी का पता लगाने के लिए विशेष किस्म के उपकरणों की मदद ली जा रही है। मामूली-सा संदेह होने पर 30 सैकेंड तक रोशनी करने वाली गोली और मोर्टार के गोले दागे जाते हैं ताकि आसपास के इलाके में सब कुछ साफ नजर आ सके।

इस अभियान के नतीजे अब सामने आने लगे हैं। दिन ढलते ही आतंक और भय से वीरान-से हो जाने वाले इस सीमावर्ती राज्य में एक बार फिर से रौनक और चहल-पहल नजर आने लगी है। अमृतसर, जालंधर, गुरदासपुर, बटाला, तरनतारन तथा अन्य स्थानों पर अब लोग रात में निकलने का साहस करने लगे हैं।

अमृतसर में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 43वीं बटालियन के कमांडेंट एम.एस. सिद्ध ने बताया कि जनता से अब अधिक ठोस जानकारी मिलने की वजह से सुरक्षा बलों को खाड़कुओं के खिलाफ कार्रवाई में सफलता मिल रही है। श्री सिद्ध तथा अन्य अधिकारियों का कहना था कि लगभग सभी गुटों के अनेक प्रमुख खाड़कुओं का सफाया किया जा चुका है।

इस अभियान के तहत 14 सितंबर की रात को मजीठा के कथूनांगल थानांतर्गत

भत्तेवाल गांव के एक फाम हाउस में हुई मुठभेड़ में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और पंजाब पुलिस के जवानों ने खालिस्तान कमांडो फोर्स के पांच खाड़कओं को मार गिराने में सफलता हासिल की। घर की महिलाओं को आतंकित करके इन खाड़कओं ने पहले खाना बनवाया था। खाना खाकर दो कमरों में खाड़कू आराम कर रहे थे कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने धावा बोल दिया। इस मुठभेड़ में हिस्सा लेने वाली बटालियनों को 18 सितंबर को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिरीक्षक ने नकद पुरस्कार दिए।

इसी तरह की एक अन्य मुठभेड़ में तरनतारन के सरहली थानातर्गत खारा गांव के निकट सेना, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और पंजाब पुलिस की टुकड़ियों ने 18 सितंबर को तड़के खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजवार) के स्वयंभू ले. जनरल सुखदेव सिंह उर्फ सुक्खा तथा उसके एक अन्य साथी को मार गिराया।

“आपरेशन नाइट डामिनेंस” के तहत सरहली में सेना, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और पंजाब पुलिस ने तीन ओर से घात लगा रखी थी। इस तरह से घात लगाकर खाड़कूओं का इंतजार करना सुरक्षा बलों का एक दैनिक कार्यक्रम बन गया है। घात लगाने के स्थानों का चयन, स्थिति तथा पहले से प्राप्त जानकारी के हिसाब से किया जाता है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के वरिष्ठ अधिकारियों के मुताबिक पंजाब में महिलाओं और लड़कियों के अपहरण, बलात्कार और उनकी हत्या की बढ़ती घटनाओं की वजह से अब लोग खाड़कूओं के खिलाफ हो रहे हैं तथा सुरक्षा बलों और पुलिस को इनके बारे में पुख्ता सूचनाएं भी उपलब्ध करा रहे हैं।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की भूमिका का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इस साल के प्रथम आठ महीनों में हुई 121 मुठभेड़ों में 366 खाड़कू मारे गए तथा 95 गिरफ्तार किए गए। इनसे 152 ए.के. 47 और ए.के.-75 राइफल्स, सात जी.पी. मशीन गन, दो हल्की मशीन गन, 13 सेल्फ लोडिंग राइफल्स, 14 राकेट लांचर, 45 बम और 129 रिवाल्वर एवं पिस्तौल सहित बड़ी मात्रा में गोला बारूद बरामद किया गया।

इस दौरान राज्य में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के नौ तथा पंजाब पुलिस के 94 जवान मारे गए।

कैमरे में कैद के.रि.पु. बल



हाल ही में दूरदर्शन द्वारा के.रि.पु. बल की 53वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक फिल्म का निर्माण कार्य शुरू किया गया। श्री शरद दत्त के निर्देशन में बनने वाली इस फिल्म का छायांकन कर रहे हैं छायाकार बी.के. मुंजाल। श्री प्रदीप माथुर इस फिल्म के साथ सहायक निर्देशक के रूप में जुड़े हैं। फिल्म निर्माण के प्रथम चरण में के.रि.पु. बल की माऊंट आबू स्थित आंतरिक सुरक्षा अकादमी में चल रहे सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के प्रशिक्षण एवं अकादमी की अन्य गतिविधियों की शूटिंग की गई। प्रस्तुत है इसी शूटिंग के दौरान लिए गए कुछ चित्र।

चित्र : अनिल गुप्ता



सी.आर.पी.एफ. समाचार, सितम्बर 1992 (8)

शौर्य गाथाएं

सात कामैकों को शौये वीरता के पुलिस पदक



कां. एस. सरगुरु



कां. पी. देंगिन्जिया



कां. गोवर्धन साहू



कां. विजेंद्र सिंह

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सात कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया है। इन कार्मिकों को यह सम्मान पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों के विरुद्ध संघर्ष में दिखाई गई अतुलनीय वीरता, साहस एवं कर्तव्यपरायणता के लिए दिया गया है। इनमें से दो कार्मिकों को यह सम्मान मरणोपरांत दिया गया है।

पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं 60 बटालियन के कांस्टेबल एस. सरगुरु एवं पी. देंगिन्जिया, 5 बटालियन के कांस्टेबल विजेंद्र सिंह, 43 बटालियन के कांस्टेबल गोवर्धन साहू, 58 बटालियन के कांस्टेबल अलफद्दीन (मरणोपरांत) एवं कांस्टेबल निर्मल सिंह (मरणोपरांत), और 2 बटालियन के कांस्टेबल आर.एन. घोष। जिन घटनाओं में दिखाई गई वीरता के लिए इन कार्मिकों को सम्मानित किया गया है, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

60 बटालियन के कांस्टेबल एस. सरगुरु तथा कांस्टेबल पी. देंगिन्जिया ने 11 फरवरी, 1991 को श्रीनगर में अत्यधिक भीड़भाड़ वाले इलाके में अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए दो आतंकवादियों का पीछा कर उनमें से एक को गिरफ्तार कर लिया। उनके इस प्रयास से रैनावारी पुलिस स्टेशन पर गोलाबारी कर रहे आतंकवादी भागने पर मजबूर हो गए।

12 दिसंबर, 1990 को 5 बटालियन के कांस्टेबल विजेंद्र सिंह तथा उनकी पार्टी ने सफलतापूर्वक भारी हथियारों से लैस आतंकवादियों का पीछा कर, सफाकदल पुलिस थाने के इलाके में हमला करने की उनकी योजना को धूल में मिला दिया। भागते हुए आतंकवादी अपने हथियार भी पीछे छोड़ गए। इस मुठभेड़ में कांस्टेबल विजेंद्र सिंह ने उत्कृष्ट वीरता एवं साहस का परिचय दिया।

43 बटालियन के कांस्टेबल गोवर्धन साहू ने 18 नवंबर, 1991 को पंजाब में फतेहपुर ग्राम में एक फार्म हाउस में छापे के दौरान आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ में उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया। इस मुठभेड़ में चार आतंकवादी मारे गए

तथा भारी मात्रा में गोली बारूद बरामद किया गया।

58 बटालियन के कांस्टेबल अलफुद्दीन एवं कांस्टेबल निर्मल सिंह 6/7 मई, 1991 की रात को अमृतसर में आतंकवादियों के विरुद्ध चलाए गए एक अभियान में वीरतापूर्वक आतंकवादियों का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इस मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गए तथा भारी मात्रा में गोलीबारूद बरामद किया गया।

2 बटालियन के कांस्टेबल आर.एन. घोष अपने टुकड़ी कमांडर के साथ 10 सितंबर, 1991 को इस्लामिया कालेज डाउन टाउन श्रीनगर में पेट्रोल ड्यूटी पर थे, जबकि उन्होंने पुलिस पिकेट पर गोलियां चलाने के बाद शीश बाग इलाके की तरफ भागते हुए आतंकवादियों को देखा। अपने अधिकारी को सूचित करने के बाद उन्होंने गलियों में भागते आतंकवादियों का पीछा करना शुरू किया। स्वयं को संकट में पाकर आतंकवादियों ने गोलियां चलानी शुरू कर दी। कांस्टेबल घोष पेट में गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए, मगर बावजूद इसके वह आतंकवादियों पर लगातार गोलियां चलाते रहे, जिससे एक आतंकवादी घायल हो गया। जिसे बाद में गिरफ्तार कर लिया गया।

संक्षिप्त समाचार

के.रि.पु.बल ने 136 आतंकवादी पकड़े

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने माह अगस्त, 92 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी 117 मुठभेड़ों में 26 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इन मुठभेड़ों में 81 आतंकवादी मारे गए। इनमें पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

मारे गए आतंकवादियों में खालिस्तान कमांडो फोर्स पंजावर गुट का स्वयंभू ले. जन. बलदेव सिंह भटिंडा, डिप्टी चीफ नवरूप सिंह धोता, एरिया कमांडर मनजीत सिंह उर्फ कातन, स्वयंभू ले. जनरल निवैल सिंह उर्फ माटा तथा मेजर सिंह साहिब गुट का एरिया कमांडर कुलदीप सिंह, भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स मनोचल गुट का राजा सांसी का रनजीत सिंह, 'बी' श्रेणी का असर सिंह, सांगा गुट का एरिया कमांडर परविंदर सिंह तथा स्वयंभू ले. जनरल हरिंदर पाल सिंह, बब्बर खालसा का स्वयंभू ले. जनरल सुखदीप सिंह उर्फ भीमा, भूपिंदर सिंह, एरिया कमांडर डा. प्रताप सिंह, स्वयंभू ले. जनरल सुखपाल सिंह उर्फ पाला तथा चीफ सुखदेव सिंह उर्फ सुख, खालिस्तान कमांडो फोर्स के जफ्फरवाल गुट का गुरजिंदर सिंह उर्फ जिंदा, पंजावर गुट का हरदीप सिंह उर्फ दीपा, पंजावर गुट का स्वयंभू ले. जनरल हरजिंदर सिंह उर्फ जालंधर तथा सुखविंदर सिंह उर्फ हीरा, खालिस्तान लिबरेशन फ्रंट गुरजंट सिंह बुद्ध सिंह वाला गुट का एरिया कमांडर बलदेव सिंह उर्फ घुकर आफ मजीठा, भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान चीता गुट का एरिया कमांडर राजसिंह

उर्फ राजा, एरिया कमांडर सकात्तन सिंह उर्फ सत्ता तथा सांगा गुट का ले. जनरल गुरमैल सिंह उर्फ काला जैसे दुर्दांत आतंकवादी भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 114 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में 26 ए.के. 47 राइफलें, आठ ए.के. 56 राइफलें, तीन राकेट लांचर, चार एस.एल.आर., एक एल.एम.जी., एक जी.पी.एम.जी., तीन कारबाई, दो स्टेनगन; 17 राइफलें, तीन माउजर पिस्तौलें तथा 26 पिस्तौलें शामिल हैं।

मगर इस सब के एवज में बल के आठ कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 40 गंभीर रूप से घायल हुए।

द्वितीय इंटर सेक्टर वालीबाल प्रतियोगिता

द्वितीय इंटर सेक्टर वालीबाल टूर्नामेंट-92,31 जुलाई से 5 अगस्त, 92 तक ग्रुप केंद्र मोकाघाट में संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में बल की दक्षिण, उत्तर, बिहार, केंद्रीय, उत्तर पश्चिम, स्पेशल, उत्तर पूर्वी तथा पूर्वी सेक्टर की टीमों ने भाग लिया। पश्चिम सेक्टर तथा आर.ए.एफ. की टीमों इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकी।

प्रतियोगिता का उद्घाटन महानिरीक्षक श्री सी. पाल सिंह ने 31 जुलाई, 1992 को किया। प्रतियोगिता के मैच लीग कम नाक आउट आधार पर खेले गए।

10 अंक प्राप्त कर दक्षिण सेक्टर की टीम ने यह प्रतियोगिता जीत ली। उत्तर सेक्टर 6 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रहा, जब कि बिहार सेक्टर को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

प्रतियोगिता के समापन पर बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किये।



प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री डी.पी.एन. सिंह.

माह अगस्त 92 में मृत बल के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की माह अगस्त, 1992 में मृत्यु हुयी। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल टेलर बी.एम. मगर (5 बटा.), कां. लखविंदर सिंह (87 बटा.), का. एस. जस्टिन (58 बटा.), ला.ना. देवराज सिंह (47 बटा.), कां. अमृत भाई (47 बटा.), कां. किशन लाल (ग्रु. कें. गांधीनगर), इंस्पेक्टर गिरराज प्रसाद (60 बटा.), सफाई कर्मचारी सी. राजामन्नार (ग्रु. कें. आवड़ी), वाटर कैरियर हरदेवलाल (97 बटा.), नायक के.डी. महातो (43 बटा.), नायक महेश्वर सिंह (75 बटा.), उ.नि. मोहन लाल कुकरेती (62 बटा.), नायक घनश्याम देव प्रसाद (28 बटा.), कां./ ड्रा. कालू राम केदार (100 बटा.), कां. शिव कुमार भदौरिया (121 बटा.), कां. अजय कुमार झा (121 बटा.), उ.नि. दलीप सिंह (44 बटा.), है. कां. टेलर रमेश चंद्रा (123 बटा.), का. ए.के. बिंदू (10 बटा.), है. कां. फिटर के.सी. दास (87 बटा.), कां. सुखन चंद्र सेन (61 बटा.), इंस्पेक्टर (मि.) जोगिंदर नाथ (ग्रु. कें. दुर्गापुर), कां. आर.एन. तिवारी (52 बटा.), कां. (महिला) पुण्या देवी (88 बटा.), उ.नि. हरपाल सिंह (60 बटा.), कां. गुरपाल सिंह (22 बटा.), कां. राम कुमार (23 बटा.), कां. गुलाम मोहम्मद लोने (98 बटा.) एवं धोबी पी.जे. वेंकटेशन (78 बटा.)।

इन के आंतोरेक्ट देर से प्राप्त सूचना के अनुसार 124 बटालेयन के वाटर कैरेयर अनिल कुमार यादव की मृत्यु भी जुलाई, 92 माह में हुयी।

नीमच में बल के कार्मिकों द्वारा सराहनीय कार्य

इस वर्ष जुलाई तथा अगस्त माह में नीमच में हुयी धुआंधार वर्षा के कारण नीमच के निचले इलाकों में स्थित कई कालोनियों तथा बस्तियों में पानी भर गया जिससे ये इलाके नीमच के बाकी हिस्सों से बिल्कुल कट गए। इस मौके पर नीमच स्थित बल की यूनिटों तथा संस्थाओं के सदस्यों ने स्थानीय प्रशासन को बचाव तथा राहत सहायता प्रदान की। इन सदस्यों के प्रयासों से पानी में फंस लोगों को जल्दी से सुरक्षित स्थानों में पहुंचाया गया, जिससे कोई बड़ा हादसा नहीं हो पाया।

बल के सदस्यों के इस कार्य की स्थानीय प्रशासन तथा नागरिकों ने भरपूर प्रशंसा की है।

हास परिहास

* एक भिखारी सड़क के किनारे खड़ा था। तभी एक साहब को देखते ही बोला—‘भगवान के नाम पर कुछ दे दे।’

‘तुम्हारे पास कोई काम धंधा नहीं है जो भीख मांग रहे हो? कुछ काम करो और अपनी मेहनत की खाओ।’

‘क्या यह मेहनत का काम नहीं है?’

‘इसमें क्या मेहनत है?’

‘अच्छा, तो लो यह कटोरा और कुछ देर भीख मांग कर दिखाओ। अभी पता चल जाएगा।’

* लड़के वाले लड़की देखने आए। लड़की का पिता अपनी लड़की के बारे में बताने लगा—‘हमारी लड़की लाखों में एक है। हीरा है हीरा। इसकी आवाज कोयल जैसी है। बड़ी-बड़ी आंखें, हिरणी जैसी चाल, मोरनी जैसी....।’

लड़के का बाप बीच में बोल पड़ा—‘ये तो खैर सब ठीक है, लेकिन यह बताइए लड़की में कोई इंसानों वाले गुण भी हैं?’

* एक महिला घबराई हुई एक दुकान में गई और बोली—‘मैं अभी कुछ देर पहले यहां आई थी। जाते समय अपना पर्स यहीं छोड़ गई.....’।

दुकानदार ने पर्स देते हुए कहा—‘यह लीजिए।’

देवी जी ने पर्स खोलकर देखा और बोली—‘लेकिन इसमें ५०० रूपए का एक नोट था, अब उसकी जगह दस-दस के ५० नोट हैं।’

दुकानदार ने कहा—‘मैडम, पिछली बार भी आप अपना पसं भूल गई थीं। वापस लेते समय आपके पास धन्यवाद देने के लिए छोटे नोट नहीं थे।’

* डाक्टर—देखो, एक बात याद रखो, बार-बार अपने मन में दोहराते रहो कि मैं सिगरेट पीना नहीं चाहता।’

रोगी—‘इससे कुछ नहीं होगा डाक्टर साहब। मैं जानता हूं कि मैं कितना झूठा हूं।’

* ग्राहक : ‘बैरा, खाने की ये सारी चीजें कम क्यों लग रही हैं?’

बैरा : ‘सिर्फ नजरों का फर्क है साहब। पहले हमारा रेस्तरां छोटा था, इसलिए चीजें बड़ी लगती थी। अब रेस्तरां बड़ा हो गया है, इसीलिए चीजें छोटी दिखाई पड़ती हैं।’



आंतरिक सुरक्षा अकादमी, माऊंट आबू में फिल्म की शूटिंग

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक-। सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : फलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3275184, 3266571

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड V अंक 7 मूल्य 1.95 रुपये 9 अग्रहायण शक 1914 30 नवम्बर 1992



गृहमंत्री श्री एस.वी. चव्हाण आर.ए.एफ. के उद्घाटन समारोह के अवसर पर प्रस्तुत परेड का निरीक्षण करते हुए.

-छाया डी.एन. तिवारी

सम्पादकीय



अब से 33 वर्ष पूर्व 21 अक्टूबर, 1959 को उत्तर पूर्वी लद्दाख की बर्फीली चट्टानों पर के.रि.पु. बल के 10 वीर जवानों ने अपनी वीरता की एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी थी, जो आज तक देश के सभी पुलिसकर्मियों के हृदय में प्रेरणा की मशाल बन कर धधक रही है।

ये जवान सीमा पर आजादी के सुरक्षा प्रहरी के रूप में तैनात थे, उनकी राष्ट्रभक्ति किसी मामले में कम नहीं थी, युद्ध क्षेत्र में पीठ दिखाने की अपेक्षा उन्होंने अपने प्राण न्यौछावर कर देना कहीं बेहतर समझा। और उन्होंने हंसते हंसते अपने प्राण दे दिए ताकि हम लोग जी सकें। वह स्थान जहां वे शहीद हुए, एक स्मारक बन गया। और हर वर्ष इस दिन पूरे देश में अर्द्धसैनिक बलों तथा अन्य पुलिस बलों की एक प्रतिनिधि टुकड़ी इस तीर्थस्थल पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने जाती है। इन बहादुर वीरों ने बलिदान का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर देश के सामने अनुकरण के लिए एक आदर्श स्थापित किया और यह साबित कर दिया कि आजादी की कीमत सतत-सजगता है। उन के बलिदान की यह गाथा अन्यो के लिए एक अनुकरणीय सबक है।

21 अक्टूबर का यह दिन पुलिस और नागरिकों के बीच सहृदय संबंधों को स्थापित करने के लिए सीमेंट का काम भी करता है। यदि एक बार नागरिक पुलिस कर्मियों की अत्याचारी छवि की अपेक्षा मानवीय पक्ष को भी समझ लें, खूनी मुठभेड़ों में उन्होंने देश सेवा में जो अपना लहू बहाया है उसे भी देख लें, नागरिकों की आजादी की सुरक्षा तथा अराजक तत्वों के प्रति उसकी कार्रवाइयों से भी अवगत हो लें, तो यह बात दोनों को करीब लाने में सहायक होगी। नागरिक और पुलिसकर्मियों का सहयोग एक नए युग का सूत्रपात कर सकता है। मगर इस सारी प्रक्रिया में ध्यान एक ऐसे

समाज पर केंद्रित होना चाहिए, जिस में मूल्यबोध हो और जिसका अस्तित्व एक स्वच्छ और उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत कर रहा हो।

अ. ना. शर्मा

(अ. ना. शर्मा)

सम्मान पुलिस ड्यूटी मीट-92 में पदक विजेताओं का सम्मान



पदक विजेताओं के साथ महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह तथा अन्य उच्च अधिकारी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने 19 नवम्बर, 1992 को महानिदेशालय में आयोजित एक समारोह में अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट-92 में पदक जीतने वाली बल की वायरलैस, क्रिप्टोग्राफी तथा कम्प्यूटर टीमों को सम्मानित किया।

29 अक्टूबर से 3 नवम्बर, 1992 तक शिमला में आयोजित की गई इन प्रतियोगिताओं में बल की वायरलैस टीम ने टीम प्रतियोगिताओं में चार तथा व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं में एक स्वर्ण पदक जीतकर प्रथम स्थान हासिल किया।

व्याक्तिगत प्रातियोगिता का स्वर्ण इंस्पेक्टर रोडियो आपरेटर बलबोर सिंह ने जीता।

बल की क्रिष्टोग्राफी टीम, टीम प्रतियोगिताओं में चौथे स्थान पर रही, जबकि व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं में बल को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। सहायक सब इंस्पेक्टर रमेश कुमार ने कांस्य पदक जीतकर तीसरा स्थान हासिल किया।

बल की कम्प्यूटर टीम ने दो रजत पदक जीते।

ज्ञातव्य कि के. रि. पु. बल की वायरलैस टीम 1958 से लगातार इन प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीतती रही है। अब तक इस टीम ने इन प्रतियोगिताओं में 32 स्वर्ण, 24 रजत तथा 12 कांस्य पदक टीम प्रतियोगिताओं में तथा 7 स्वर्ण, 24 रजत तथा 1 कांस्य पदक व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं में जीता है। इसी प्रकार बल की क्रिष्टोग्राफी टीम ने इन प्रतियोगिताओं में अब तक टीम प्रतियोगिताओं में 10 स्वर्ण, 12 रजत तथा चार कांस्य पदक जीते हैं और व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं में तीन स्वर्ण, सात रजत तथा आठ कांस्य पदक जीते

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने 28 बटालियन के नायक घनश्याम दास प्रसाद को मरणोपरांत महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया है।

ज्ञातव्य है कि नायक घनश्याम दास ने 8 अगस्त, 1992 को अमृतसर रेलवे स्टेशन के पास एक वृद्धा को फ्रंटियर मेल रेल की चपेट में आने से बचाने के प्रयास में अपने प्राण दे दिए थे।

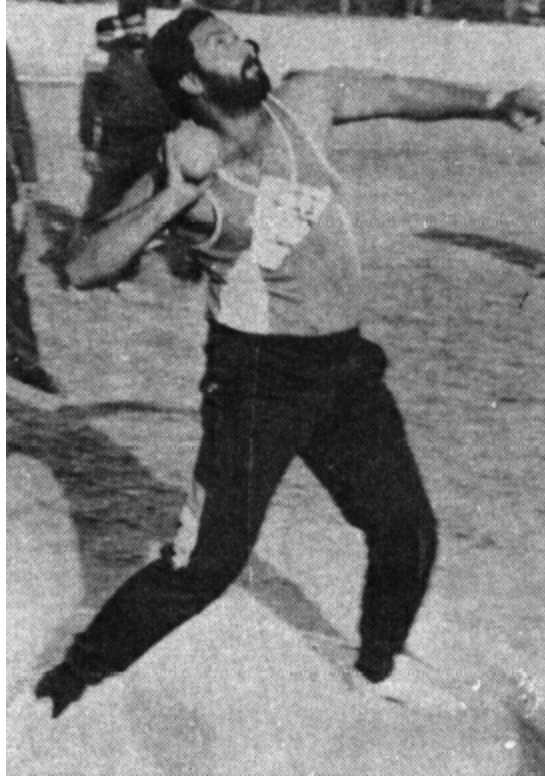
द्वितीय इंटर सेक्टर एथलेटिक्स प्रतियोगिता 92 दक्षिण सेक्टर ने खिताब जीता



श्री बी.एन. भगवत खिलाड़ियों द्वारा प्रस्तुत मार्चपास्ट की सलामी लेते हुए

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के दक्षिण सेक्टर ने द्वितीय इंटर सेक्टर एथलेटिक प्रतियोगिता 208 अंकों के साथ जीत ली। उत्तरी सेक्टर 117 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रहा, जबकि स्पेशल सेक्टर को 115 अंक प्राप्त करने पर तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

इन प्रतियोगिताओं का उद्घाटन 27 अक्टूबर, 1992 को भारत सरकार के खेल एवं युवा कल्याण विभाग के सचिव तथा भारतीय खेल प्राधिकरण के महानिदेशक श्री बी.एन. भगवत ने किया। ग्रुप केंद्र नई दिल्ली में आयोजित इन चार दिवसीय प्रतियोगिताओं में शामिल खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए श्री भगवत ने राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में सहयोग देने के लिए के.रि.पु. बल की सराहना की तथा विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में भी के.रि.पु. बल देश को चोटी के खिलाड़ी प्रदान करता रहेगा।



नायक रघुबीर सिंह-शाट पुट में नया रिकार्ड

इन प्रतियोगिताओं में बल के 9 सेक्टरों की टीमों के 400 खिलाड़ियों ने 22 स्पर्धाओं में भाग लिया।

प्रतियोगिता का समापन 30 अक्टूबर को एक आकर्षक समारोह के बीच किया गया। इस अवसर पर दिल्ली के उपराज्यपाल श्री पी.के. दवे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने प्रतियोगियों को पुरस्कार भी प्रदान किए। प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ धावक का पुरस्कार दक्षिण सेक्टर के लांस नायक ए.डी. गणपति को दिया गया।

प्रतियोगिता के संपूर्ण परिणाम इस प्रकार रहे-

लॉग जम्प-(1) लांस नामक ए.डी. गणपति, दक्षिण सेक्टर, (6.67 मीटर), (2) लांस नायक रघुबीर सिंह, स्पेशल सेक्टर (6.65 मीटर), (3) कांस्टेबल जितभान ओरेन, बिहार सेक्टर (6.57 मीटर)।

10000 मीटर दौड़-(1) नायक धीरज सिंह, उत्तर पश्चिम जोन 30.50.0 मिनट, (2) नायक रामकरन, स्पेशल सेक्टर 30.52.0 मिनट, (3) कांस्टेबल जे. मंजुनाथ, दक्षिण सेक्टर, 32.02.4 मिनट

200 मीटर दौड़-(1) हैड कांस्टेबल सुरजीत सिंह, उत्तरी सेक्टर, 22.75 सैंकड, (2) कांस्टेबल एस. के. मंडल, बिहार सेक्टर, 22.90 सैंकड, (3) कांस्टेबल इनोबा सिंह, दक्षिण सेक्टर, 23.22 सैंकड।

800 मीटर दौड़-(1) हैड कांस्टेबल अजर अहमद, उत्तरी सेक्टर 1.57.65 मिनट, (2) हैड कांस्टेबल चंदूवीर सिंह, उत्तर सेक्टर, 1.58.50 मिनट, (3) कांस्टेबल देवेंद्र सिंह,

उत्तर पश्चिम जोन, 1.58.90 मिनट

जैवलिन थ्रो—(1) कांस्टेबल रामेश्वर । सिंह, दक्षिण सेक्टर, 60.84 मीटर, (2) कांस्टेबल गुरदीप सिंह, स्पेशल सेक्टर, 59.34 मीटर, (3) सब इंस्पेक्टर रामशंकर, उत्तरी सेक्टर, 59.10 मीटर।

5000 मीटर दौड़—(1) इंस्पेक्टर शम्सुद्दीन, उत्तरी सेक्टर, 14.57.20 मिनट, (2) नायक रामकरन, स्पेशल सेक्टर, 14.57.81 मिनट (3) कांस्टेबल आर. के. जेना, पूर्वी सेक्टर, 15.21.46 मिनट।

1500 मीटर दौड़—(1) सब इंस्पेक्टर करतार सिंह, उत्तरी सेक्टर, 4.01:50 मिनट, (2) हैड कांस्टेबल आई. डी. उमेश, उत्तर पश्चिम जोन, 4.02.42 मिनट, (3) हैड कांस्टेबल चांदवीर सिंह, उत्तर सेक्टर 4.06.33 मिनट।

400 मीटर बाधा दौड़—(1) हैड कांस्टेबल राम जैकब, दक्षिण सेक्टर, 55.00 सैकंड, (2) सब इंस्पेक्टर सतीश कुमार सिंह, केंद्रीय सेक्टर, 55.62 सैकंड, (3) कांस्टेबल हरमन दास, पूर्वी सेक्टर, 55.91 सैकंड।

शाट पुट—(1) नायक रघुबीर सिंह, स्पेशल सेक्टर 15.10 मीटर (नया रिकार्ड), (2) कांस्टेबल देवानीश टोपो, बिहार सेक्टर, 12.94 मीटर, (3) डिप्टी कमांडेंट एस. एस. बल, स्पेशल सेक्टर 12.76 मीटर।

ट्रिपल जम्प—(1) सब इंस्पेक्टर नवरीत सिंह, उत्तर पश्चिम जोन, 14.51 मीटर, (2) कांस्टेबल के. तुलसीधरन, दक्षिण सेक्टर, 13.95 मीटर, (3) कांस्टेबल एन. सी. शाजी, केंद्रीय सेक्टर 13.76 मीटर।



सुरजीत सिंह-100 मीटर में स्वर्ण

मैराथन-(1) हैड कांस्टेबल जीतराम, उत्तर पश्चिम जोन, 2.32.29, (2) कांस्टेबल पी. सी. पाणिग्रही, पूर्वी सेक्टर, 2.33.09, (3) कांस्टेबल वी.पी. विजय, पूर्वी सेक्टर, 2.34.05।

400 मीटर दौड़-(1) हैड कांस्टेबल परमजीत सिंह, उत्तर पश्चिम जोन, 49.83 सैकंड (2) हैड कांस्टेबल के.पी. विल्सन, दक्षिण सेक्टर, 50.02 सैकंड, (3) कांस्टेबल बी. पी. सिंह, पूर्वी सेक्टर 52.78 सैकंड।

पोल वाल्ट-(1) लांस नायक एम. पी. शाजी मोन, दक्षिण सेक्टर, 3.75 मीटर, (2) हैड कांस्टेबल सुभाष सिंह, स्पेशल सेक्टर, 3.60 मीटर, (3) कांस्टेबल के. गोकुल दास, दक्षिण सेक्टर, 3.50 मीटर.

हाई जम्प-(1) नायक हरमोहन मेहतो, उत्तर सेक्टर, 1.90 मीटर (2) कांस्टेबल कांगामरांडी, पूर्वी सेक्टर, 1.85 मीटर, (3) कांस्टेबल गोकुल चंद्रा, पूर्वी सेक्टर, 1.85 मीटर।

3000 मीटर स्टीपल चेस-(1) इंस्पेक्टर समशुद्दीन, उत्तर पश्चिम सेक्टर, 9.12.31 सैकंड, (2) नायक धीरज सिंह, उत्तर पश्चिम सेक्टर, 9.13.20 सैकंड, (3) सब इंस्पेक्टर करतार सिंह, उत्तर सेक्टर, 9.22.12 सैकंड।

14×100 मीटर रिले—(1) दक्षिण सेक्टर, 42.50, (2) स्पेशल सेक्टर, - 43.90, (3) बिहार सेक्टर, 44.23

110 मीटर हरडल—(1) इंस्पेक्टर के. शिमोधनन, पश्चिम सेक्टर, 14.90 सैकंड, (2) कांस्टेबल पी. सदानंदन, दक्षिण सेक्टर, 16.16 सैकंड, (3) कां. पी. डी. प्रदीप, दक्षिण सेक्टर 16.26 सैकंड।

4×100 मीटर—(1) दक्षिण सेक्टर, 3.26.13 मिनट, (2) उत्तर पश्चिम जोन, 3.29.65 मिनट, (3) बिहार सेक्टर 3.31.50 मिनट।

उद्घाटन समारोह

आर.ए.एफ. से समाज को बहुत आशाएं हैं

—गृहमंत्री

केंद्रीय गृहमंत्री श्री एस. बी. चव्हाण ने विश्वास व्यक्त किया है कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के तत्वाधान में गठित रेपिड एक्शन फोर्स देश और समाज की आशाओं पर पूर्ण उतरेगा।

गृहमंत्री 7 अक्टूबर, 1992 को रेपिड एक्शन फोर्स के उद्घाटन समारोह के अवसर पर दिल्ली, वजीराबाद स्थित आर. ए. एफ. की 103 वीं बटालियन स्थल पर एक शानदार समारोह में बोल रहे थे। गृहमंत्री महोदय ने इस अवसर पर एक भव्य परेड का निरीक्षण किया और उसकी सलामी ली।

इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि सांप्रदायिक दंगों से निबटने की जो नई जिम्मेदारी के. रि. पु. बल को सौंपी गई है, उसकी तैयारियों को देखते हुए हमें विश्वास है कि आर. ए. एफ. नित खड़ी हो रही सांप्रदायिकता की समस्याओं को हल करने में कामयाब होगा।

उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में जातिवाद की समस्या ने उग्र रूप धारण किया है, आर. ए. एफ. के गठन को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए।

उन्होंने आर. ए. एफ. के जवानों का आह्वान किया कि उनकी शौहरत इतनी फैले कि प्रभावित क्षेत्रों में उनके पहुंचने भर से दंगई भयभीत हो जाएं और निर्दोष समझने लगे कि अब उन्हें कोई खतरा नहीं है।



40 बटालियन के कमांडेंट श्री बराड़ गृहमंत्री से सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी प्राप्त करते हुए.



पदक विजेताओं तथा बल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ केंद्रीय गृहमंत्री श्री एस.बी. चव्हाण



आर.ए.एफ. के सदस्य निहत्थे युद्ध कौशल की कला का प्रदर्शन करते हुए.



साम्प्रदायिक दंगों के समय उन्हें नियंत्रण में लाने के अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए आर.ए.एफ. के सदस्य.



दंगों के उपरान्त भड़की आग को शांत करते आर.ए.एफ. के जवान.

गृहमंत्री महोदय ने कहा कि के.रि.पु. बल ने पूरे देश में बहुत शानदार ढंग से काम किया है। साम्प्रदायिक दंगों से निबटने को यह नई जिम्मेदारी भी बल को इसी विश्वास के साथ दी जा रही है कि वह समाज को यह विश्वास दिला पाएगा कि उसकी दिलचस्पी केवल शांति बनाए रखने में ही है।

गृहमंत्री महोदय ने इस अवसर पर एक कबूतर उड़ाकर विधिवत् रूप से आर. ए.

एफ. का उद्घाटन किया।

इससे पूर्व गृहमंत्री महोदय का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने आर. ए. एफ. के गठन, उसके स्वरूप, प्रशिक्षण तथा उपकरणों आदि के विषय में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर आर. ए. एफ. के सदस्यों ने दंगों पर काबू पाने के अपने कौशल तथा निहत्थे लड़ाई के अपने जौहर भी दिखाए।

इससे पूर्व गृहमंत्री श्री एस. बी. चव्हाण ने के. रि. पु. बल की 40 बटालियन को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ बटालियन टाफी भी प्रदान की। 40 बटालियन के कमांडेंट श्री सी. एस. बराड़ ने यह टाफी ग्रहण की। गृहमंत्री ने सराहनीय सेवाओं के लिए 33 अधिकारियों तथा जवानों को पुलिस पदक भी प्रदान किए। पदक प्राप्त करनेवाले कार्मिक हैं- अपर उप महानिरीक्षक गुरमोहन सिंह, अपर उप महानिरीक्षक इंदरजीत सिंह, उपनिदेशक (संचार) के. आर. आर. कुरूप, कमांडेंट जयकरण चौधरी, सहायक निदेशक (प्रशासन) बी. एल. टकियार, कमांडेंट डी. के. खुराना, सहायक निदेशक (संभरण) राजेंद्र सिंह, कमांडेंट मोलक सिंह सिद्धू, कमांडेंट नरेंद्र पाल, सहायक निदेशक जे. एस. ढिल्लन, डिप्टी कमांडेंट एम. एस. डोगरा, डिप्टी कमांडेंट सूरत सिंह, सहायक कमांडेंट अदालत सिंह, कमांडेंट नरेंद्र कुमार, कमांडेंट आर. एस. डोगरा, डिप्टी कमांडेंट अन्तरसिंह, एस.एम. पी. के. पटनायक, इंस्पेक्टर के. एल. थामस, इंस्पेक्टर हिम्मत सिंह, इंस्पेक्टर जी. सी. शर्मा, सब इंस्पेक्टर नत्थुराम, सब इंस्पेक्टर अब्दुल रजाक, सब इंस्पेक्टर जनार्दन सिंह, हैड कांस्टेबल दलीपसिंह, हैड कांस्टेबल दूधनाथ, नायक जमादार सिंह, लांस नायक वी. गोपाल कृष्णन, कांस्टेबल त्रिलोक सिंह, वाटर कैरियर रामदे, सब इंस्पेक्टर मोहालाल, नायक ब्रिज बिहारी मिश्रा तथा कांस्टेबल मल. सिंह।

महानिदेशक का संवाददाता सम्मेलन

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने 5 अक्टूबर, 1992 को एक संवाददाता सम्मेलन में पत्रकारों को आर.ए.एफ. के विषय में जानकारी दी। 103 बटालियन वजीराबाद, नई दिल्ली में पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने बताया कि सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के तत्वाधान में गठित किए गए द्रुत कार्रवाई बल की बटालियनें अब अपनी तैनाती के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।



बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए.

महानिदेशक महोदय ने पत्रकारों को बताया कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 10 बटालियनों को द्रुत कार्रवाई बल की बटालियनों में परिवर्तित कर दिया गया है।

इन बटालियनों को सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। उनके प्रशिक्षण में प्राथमिक उपचार, अग्निशमन तथा अन्य राहत कार्य भी शामिल हैं। इस प्रकार यह बल प्रभावित क्षेत्रों में पीड़ित मानवता के लिए राहत और शांति का पैगाम ले कर पहुंचेगा।

इसके लिए इस बल को रबड़ की गोलियां, शाक बैटन, पारदर्शी शील्ड तथा अन्य अत्याधुनिक अस्त्र शस्त्र उपलब्ध कराए गए हैं।

इस बल के सदस्यों को विशेष मनोवैज्ञानिक परिक्षण के बाद चुना गया है। तथा इस बात पर पूरा ध्यान दिया जाएगा कि इस बल के सदस्य जब तैनात न हों, तो सतत प्रशिक्षण में रहें तथा नियमित समयांतराल के बाद उनकी बदली होती रहे, ताकि फोर्स सदैव युवा रहे।

प्रारंभ में आर. ए. एफ. की बटालियनों को दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, इलाहाबाद, जमशेदपुर, हैदराबाद, अहमदाबाद तथा जयपुर में तैनात किया जा रहा है।

इस अवसर पर नई दिल्ली स्थित आर. ए. एफ. की 103 बटालियन के सदस्यों ने दंगों पर काबू पाने के अपने कौशल तथा निहत्थे लड़ाई के अपने जौहर भी पत्रकारों को दिखाए।

दीक्षांत समारोह तमिलनाडु की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता द्वारा के.रि.पु. बल की प्रशंसा

तमिलनाडु की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता ने देश के प्रति केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की निष्पक्ष, धर्मनिरपेक्ष, अनुशासित तथा विश्वसनीय सेवा के लिए प्रशंसा की है। साथ ही उन्होंने श्री राजीव गांधी की हत्याकांड से जुड़ी जांच तथा लिब्रेशन टाइगर्स आफ तमिल ईलम के आतंकवादियों की गतिविधियों पर काबू करने के प्रयासों में बल द्वारा की गई सहायता की भी सराहना की।

वह ग्रुप केंद्र आवड़ी में के.रि.पु. बल के 252 कांस्टेबलों तथा 37 सब इंस्पेक्टरों की दीक्षांत परेड के अवसर पर आमंत्रित एक भव्य समारोह में बोल रही थीं। 24 अक्टूबर, 1992 को आयोजित इस समारोह में तमिलनाडु के लगभग सभी मंत्री, कई विधायक, संसद सदस्य, वरिष्ठ नागरिक तथा पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर सुश्री जयललिता ने एक आकर्षक परेड की सलामी भी ली। परेड को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि किसी भी वर्दीधारी फोर्स के लिए उच्च कोटि का प्रशिक्षण उसकी सफलता की कुंजी है। उन्होंने बल के नवीन सदस्यों से बल के उद्देश्य वाक्य 'सेवा एवं भक्ति' की कसौटी पर खरे उतरने का आह्वान किया। उन्होंने बल के सदस्यों को याद दिलाया कि केवल कड़ी मेहनत तथा अनुशासन से ही किसी व्यक्ति की उन्नति संभव है। उन्होंने कहा कि बल के सदस्यों को सदैव शारीरिक रूप से चुस्त तथा मानसिक रूप से सजग रहना चाहिए। उन्हें अपने अंदर साहस और नैतिक बल को संगठित करना चाहिए। ताकि वे विपरीत स्थितियों में दृढ़ता से काम कर सकें। उन्होंने बल के सदस्यों का आह्वान किया कि वे संकीर्ण मानसिकता से ऊपर राष्ट्र के प्रति अपनी भक्ति के नए कीर्तिमान स्थापित करें।



जवानों की परेड की सलामी लेते हुए सुश्री जयललिता

इस अवसर पर उन्होंने बल के 36 कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किए। पदक ग्रहण करने वालों में पहली बटालियन के कमांडेंट साधुसिंह सहगल तथा 109 बटालियन के कमांडेंट पी. एस. सायरस भी शामिल थे। कमांडेंट साधुसिंह सहगल को यह सम्मान पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंतसिंह की सुरक्षा में उनके द्वारा दिए गए योगदान के लिए दिया गया। जबकि श्री पी. एस. सायरस को यह पदक पंजाब में स्वर्ण मंदिर की सुरक्षा में उनके योगदान के लिए दिया गया। इससे पूर्व मुख्यमंत्री महोदया ने सब इंस्पेक्टर एस. सुरेश को बेस्ट आल राउंडर, गोपाल कुमार को बेस्ट आऊटडोर तथा अजय को बेस्ट इनडोर विषयों के लिए ट्राफियां प्रदान कीं।

इससे पूर्व माननीय मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने कहा कि विपरीत स्थितियों से निबटने की उनकी क्षमता निश्चित ही बल के सदस्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। बल के दक्षिण क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री डी. आर. कार्तिकेयन ने बाद में मुख्य अतिथि महोदया का धन्यवाद अदा किया।

संक्षिप्त समाचार

के.रि.पु. बल में बाल दिवस

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल के बच्चों ने 14 नवम्बर, 1992 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर ग्रुप केंद्र नई दिल्ली के अपर उप महानिरीक्षक श्री बी. एस. रेखी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

समारोह का प्रारंभ बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों एवं अन्य हस्तकला की वस्तुओं की

प्रदर्शनों के उद्घाटन के साथ हुआ। इसके बाद बच्चों ने दौड़कूद की प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

इस मौके पर बच्चों को संबोधित करते हुए श्री रेखी ने आशा व्यक्त की कि ये बच्चे पंडित नेहरू के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए देश का नाम रोशन करेंगे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने बाद में मुख्य अतिथि को धन्यवाद देते हुए उन्हें विश्वास दिलाया कि इस विद्यालय के बच्चे अवश्य ही अपनी प्रतिभा के बल पर आगे चलकर अपने विद्यालय और देश का नाम ऊंचा करेंगे।

के.रि.पु. बल को राजभाषा शील्ड

सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग का जायजा लेने पर गृह मंत्रालय ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्य को सर्वोत्तम पाया है। अतः वर्ष 1990-91 के लिए गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड इस विभाग को दी जा रही है।

18 वीं हिन्दी कार्यशाला

भारत सरकार द्वारा निर्धारित मानिट्रिंग व निरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत के. रि. पु. बल की रविन्द्र रंगशाला स्थित बटालियनों में 12 से 16 अक्टूबर 92 तक एक 5 दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में के.रि.पु.बल के मुख्यालय सहित उक्त बटालियनों के 56 कार्मिकों ने भाग लिया। हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए 40 वीं बटा. के कमांडेंट श्री सी. एस. बरार ने कहा कि “हिन्दी आज अपनी व्यापकता के कारण सारे देश में प्रचलित है और विविधता में राष्ट्रीय एकता का यह एक सशक्त सूत्र है”।

हिन्दी कार्यशाला में प्रतिदिन के कामकाज से संबंधित शब्दावली, नोटिंग/ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया गया तथा राजभाषा अधिनियम, नियम व संवैधानिक व्यवस्थाओं से कार्मिकों को परिचित कराया गया। कार्मिकों का उत्साह बढ़ाने व प्रेरणा देने के लिए फिल्म प्रभाग बम्बई से प्राप्त विडियो कैसेट उद्यांजली, देश की वाणी, हिन्दी सब संसार आदि फिल्मों का प्रदर्शन भी किया गया।

ग्रुप केंद्र हैदराबाद सर्वश्रेष्ठ

वर्ष 1991-92 के लिए ग्रुप केंद्र हैदराबाद को सर्वश्रेष्ठ पाया गया है। अतः इस वर्ष की वार्षिक परेड के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र की ट्राफी ग्रुप केंद्र हैदराबाद को प्रदान की जाएगी।

माह अक्टूबर' 92 में मृत बे के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की माह अक्टूबर' 92 में मृत्यु हुई। सी. आर. पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

इंस्पेक्टर रतनासिंह (7 बटा.), उप निरीक्षक (मि.) जी. बाबा साहब (ग्र. के. II अजमेर), कां. रमेशचन्द्र (ग्र. के. गुवाहटी), नायक/रे. आ. युद्धवीर सिंह यादव (5 सिग.), नायक एस. बी. खिल्लपा (16 बटा.), कां. सुरेश कुमार मिंज (120 बटा.), कां. ईश्वरईया (63 बटा.), लां. नायक प्रेमसिंह (75 बटा.), कां. (बैंड) डी. थेलन (ग्र. के. इम्फाल), नायक/रेडियो आपरेटर पी. जी. हरीदास (2 सिग.), नायक रोदाससिंह (53 बटा.), नायक प्रभुदास यादव (53 बटा.), लां. नायक रंजीत राम (77 बटा.), कां. ड्राइवर चिनैय्या (58 बटा.), है. कां. शिवराम सिंह (25 बटा.), ला. नायक रामदेव सिंह (124 अगज.), सब इंस्पेक्टर निवुट्टी चाम्भेर (106 बटा.), नायक रेडियो आपरेटर एम. वी. कृष्णन (4 सिग.), ला. नायक के. पी. तिवारी (42 बटा.), कां. विजय शिंदे (10 बटा.), है. कां. चेत नारायण सिंह (43 बटा.), नायक/ड्राइवर सरयूज राम (87 बटा.), स. उप निरीक्षक (मि.) अशोक कुमार (123 बटा.), कां. थनककुमार नायक (91 बटा.) तथा इंस्पेक्टर वी. बी. सिंह (119 बटा.)।

इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार 83 बटा. के कां. ड्राइवर निरंजन बोरा की मृत्यु भी अगस्त '92 माह में हुई।

जोखिम निधि लाभ

माह अक्टूबर 92 में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से मृत्यु के 31 मामलों में कुल 10 लाख 85 हजार रुपए देने स्वीकृत किए गए।

इनमें प्रति मामला 10,000 रुपए की केंद्रीय कल्याण निधि तथा सी. बी. एफ. की राशि भी शामिल है।

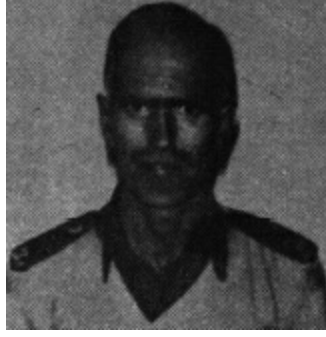
इसी प्रकार अक्षमता के सात मामलों में कुल एक लाख पांच हजार रुपए देने स्वीकृत किए गए।

के.रि.पु. बल ने गुरू नानक जन्मदिवस मनाया

दिल्ली स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की सभी युनिटों ने ग्रुप केंद्र झड़ौदा कलां में हर्षोल्लास के साथ गुरू नानक देव का जन्म दिवस मनाया। इस अवसर पर गुरू नानक देव की शिक्षा एवं जीवन पद्धति पर प्रकाश डालते हुए कई विद्वानों ने उनकी प्रासंगिकता पर जोर दिया। इस मौके पर शबद कीर्तन का भी आयोजन किया गया। समारोह के अंत में लंगर का आयोजन भी किया गया।

एक युवती को बचाने के लिए के.रि.पु. बल के एक जवान ने जान दी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की अमृतसर, सरचक स्थित 14 बटालियन के सब इंस्पेक्टर प्रेम सुख ने सूचना मिलने पर न केवल एक युवती का बलात्कार होने से बचाया, अपितु बंदूक की नोक पर उसके साथ दुर्व्यवहार करने का प्रयास कर रहे पांच व्यक्तियों को मौके पर गिरफ्तार कर स्थानीय पुलिस को भी सौंप दिया।



इन अराजक तत्वों को पुलिस में सौंपने के बाद जब सब इंस्पेक्टर प्रेम सुख अपने साथियों के साथ अपनी सुरक्षा में उस युवती तथा उसके अभिभावक को उनके गांव बरतवाल छोड़ने जा रहे थे, तो रास्ते में आतंकवादियों ने उन पर हमला कर दिया। गोलीबारी में प्रेम सुख के सिर पर गोली लगी तथा वह घटनास्थल पर ही मारे गए। जबकि आक्रमणकारी आतंकवादी अंधेरे का लाभ उठाकर भाग खड़े हुए।

के. रि. पु. बल ने 96 आतंकवादी गिरफ्तार किए

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अक्टूबर, 1992 में देश भर में 96 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान आतंकवादियों के साथ हुई 59 मुठभेड़ों में 41 आतंकवादी मारे गए। इन में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुई मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

मारे गए आतंकवादियों में उल्फा का स्वयंभू वित्त सचिव प्रदीप बोरा उर्फ चित्राबन हजारिका, भिंडरांवाले टाइगर्स फोर्स (मनोचहल) का एरिया कमांडर नारायण सिंह नरना उर्फ छोटा गलाना, एरिया कमांडर अवतार सिंह उर्फ चीरे, खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजावर) का एरिया कमांडर नेब सिंह उर्फ बेबा उर्फ डाक्टर, खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजावर) का ले. जन. तरसेम सिंह, जप्फरवाल गुट का ले. जन. संतोक सिंह एरिया कमांडर गुरपाल सिंह उर्फ पाला, एरिया कमांडर बलविंदर सिंह, डिप्टी चीफ जस्सा सिंह उर्फ छोटा उर्फ भोला, ले. जन. मनजीत सिंह उर्फ थोतियान तथा ले. जन. लखवीर सिंह उर्फ लक्खा उर्फ मेजर ले. जन. मनजीत सिंह उर्फ धमाका उर्फ दुर्गा तथा एरिया कमांडर जोगिंदर सिंह जैसे खतरनाक आतंकवादी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 83 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में 10 ए. के. 47 राइफलें, 15 ए. के. 56 राइफलें, दो ए. के. 74 राइफल, दो एस. एल. आर. तीन राकेट लांचर, एक जी. पी. जी. 11 राइफलें, 24 पिस्तौलें, तथा चार माउचर पिस्तौलों सहित 1376 सजीव गोली बारूद शामिल हैं।

मगर इन मुठभेड़ों में बल के नौ जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 44 गंभीर रूप से घायल हुए।

मनोरंजन

* एक बहुत बूढ़ा व्यक्ति वकील के पास तलाक के कागजात लेने पहुंचा। वकील बोला—“आप इस उम्र में तलाक ले रहे हैं?”

“नहीं”, जवाब मिला, “यह कागज तो मैं अपने पिता जी के लिए ले जा रहा हूं।”

* ग्राहक—“कोई बल्ब देना।”

दुकानदार—“यह लीजिए, चांदनी बल्ब। यह कम वोल्टेज पर तो जलता ही है, बिजली न हो तब भी जलता है।”

* “यह मिठाई किसलिए बट रही है?”

“आज हमारी फिल्म की हीरोइन ठीक समय पर आई है।”

“ठीक समय पर? अरे, इस शूटिंग पर तो उन्हें कल आना था।”

“तुम्हें कैसे मालूम?”

“क्योंकि मैं उनका सेक्रेटरी हूं।”

* “बीवी और घड़ी में क्या फर्क है?”

“घड़ी बिगड़ जाए तो वह बंद हो जाती है। और अगर बीवी बिगड़ जाए तो वह शुरू हो जाती है।”

* हर औरत अपनी उम्र में से जितने साल घटाती है, उन्हें बेकार नहीं जाने देती, बल्कि दूसरी औरत की उम्र में जोड़ देती है।

* हर आदमी की जिंदगी के दो पहलू होते हैं। एक तो वह जिसे पत्नी जानती है और दूसरा वह जिसके बारे में वह समझती है कि पत्नी नहीं जानती।

संकलन
—कांस्टेबल गोविंद सिंह
जनसंपर्क शाखा
के.रि.पु. बल महानिदेशालय



दिल्ली के उपराज्यपाल श्री पी.के. दवे उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह को द्वितीय इंटर सेक्टर एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं की ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी प्रदान करते हुए.

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक क० रि० पु० बल, ब्लाक-। सी० जी० ओ० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली- 110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली- 110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : पलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002 फोन : 3275184, 3266571

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड - 5 अंक - 8 31 दिसंबर, 1992 10 पीष, शक 1914



शांति दूत-रेपिड एक्शन फोर्स के जवान

53 वें वार्षिकोत्सव पर विशेष



के.रि.पु. बल के जवान उत्तरी-पूर्वी राज्यों में गश्त करते हुए

सी. आर. पी. एफ.
समाचार

खंड-V अंक- 8
31 दिसंबर, 1992
10 पौष, शक 1914

मुख्य संपादक
ए.एन. शर्मा

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र संकलन एवं आवरण चित्र
सतीश खन्ना

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1 सी.जी. ओ. काम्पलैक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से ए.एन. शर्मा

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
पलेम ग्राफिक्स, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002, फोन-3275184, 3266571



संदेश

संपादकीय

के.रि.पु.बल-उपलब्धियां

श्री द्विवेदी को विदाई

दक्षिण सेक्टर

जम्मू कश्मीर

केंद्रीय सेक्टर

स्पेशल सेक्टर

आर.ए.एफ.

उत्तर पूर्वी सेक्टर

पंजाब

पूर्वी सेक्टर

बिहार सेक्टर

के.रि.पु.बल में हिंदी

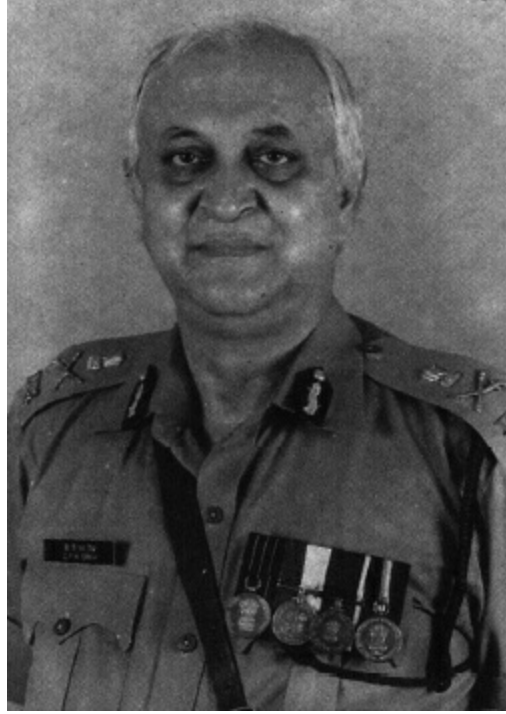
के.रि.पु. बल में खेलकूद

एक अनूठा पुलिस संग्रहालय

संक्षिप्त समाचार

मनोरंजन

सन्देश



इस वर्ष केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी 53 वीं वर्षगांठ मना रहा है। के. रि. पु. बल में हम सब लोगों के लिए यह न केवल एक खुशी का मौका है, अपितु यह एक ऐसा अवसर भी है, जब हम देश की एकता और अखंडता के प्रति प्रतिबद्धता की अपनी प्रतिज्ञा को दोहराते हैं और देश में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए अपने को पुनः सहर्ष अर्पित करते हैं।

1939 में “क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस” के रूप में गठित किया गया केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल देश के विभिन्न भागों में डकैत गिरोहों, अलगाववाद, उग्रवाद एवं आतंकवाद के उन्मूलन के लिए सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। विदेशी आक्रमणों के समय भी बल ने भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिला कर दुश्मनों के दांत खट्टे किये। साम्प्रदायिक दंगों और प्राकृतिक विभीषिकाओं के संकट में भी जनता के समक्ष के. रि. पु. बल हमेशा राहत और शांति का पैगाम लेकर पहुंचता रहा है।

33 वर्ष पूर्व, 21 अक्टूबर, 1959 को लद्दाख “हौट स्प्रिंगज” में बल की एक टुकड़ी पर चीनी सैनिकों ने घात लगाई। संख्या में बहुत कम होने के बावजूद केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान बहादुरी के साथ लड़े और 10 जवान देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। बाकी जवानों को भी दुश्मन तब तक हाथ नहीं लगा सका, जब तक उनके पास एक भी गोली रही। इन शहीदों की याद में पूरे देश के पुलिस बल तबसे 21 अक्टूबर को “शहीद दिवस” मनाते रहे हैं।

1965 में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने एक बार फिर इतिहास की रचना की, जबकि बल की एक छोटी सी टुकड़ी एक पाकिस्तानी ब्रिगेड के साथ भिड़ी। बंगलादेश आपरेशन के दौरान भी के. रि. पु. बल ने अपने जौहर दिखाए। श्री लंका में भारतीय शांति रक्षक सेना के अंग के रूप में के. रि. पु. बल की टुकड़ियाँ भी शामिल थीं। हमारे कार्मिकों को भारी तादाद में शौर्य एवं युद्ध पदक मिले हैं। के. रि. पु. बल देश की विभिन्नता में एकता का प्रतीक बन गया है। इसे अपने धर्मनिरपेक्ष एवं सार्वदेशिक रूप पर गर्व है। हमारे जवान देश के हर वर्ग, क्षेत्र, धर्म एवं जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं, हर वर्ग को बल में उचित प्रतिनिधित्व मिला है, और इस प्रकार के. रि. पु. बल की हर बटालियन सही अर्थ में हमारे देश का एक छोटा सा प्रतिरूप है। हमारे लिये यह गौरव का विषय है कि हमारे बल के एक तिहाई से अधिक सदस्य अल्पसंख्यक समुदायों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों से आते हैं। पूरे देश में केवल हमारा बल ही एक मात्र ऐसा केंद्रीय बल है, जिसके पास एक महिला बटालियन है। यह बटालियन पूरे विश्व के सामने यह सिद्ध करती है कि भारत की नारी किसी प्रकार किसी से पीछे नहीं है। इसी तरह हमें ही आर. ए. एफ. की 10 बटालियनों को गठित करने का गौरव प्राप्त हुआ है। यह दल अपना कार्य बड़े सुचारू रूप से कर रहा है।

इस मौके पर मुझे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी के शब्द याद आते हैं। उन्होंने कहा था, “केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का एक ऐसी फोर्स की मूलभूत जरूरत को पूरा करता है, जिसमें कि विभिन्न धर्मों, विभिन्न राज्यों एवं विभिन्न भाषाओं में बात करने वाले लोग एक साथ काम करते हों। हमने देखा है कि जहां कहीं भी के. रि. पु. बल गया है, लोगों ने इसमें विश्वास व्यक्त किया है और इन्होंने (के. रि. पु. बल के जवानों ने) भी अत्यधिक साहस और समर्पण के साथ काम किया है।”

53 वर्ष पूर्व केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का जन्म नीमच में एक बटालियन के रूप में हुआ। आज इसमें 129 बटालियनें हैं। इसके कार्य के महत्व एवं भूमिका की विभिन्नता को इतने थोड़े में ही नहीं बताया जा सकता। फिर भी के. रि. पु. बल के जवान हर उस भूमिका को निभाते हैं, जिसकी एक पुलिस कर्मी एवं प्रशिक्षित समर्पित सैनिक से उम्मीद की जाती है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल इस समय उग्रवादियों एवं आतंकवादियों द्वारा देश की एकता और अखंडता के सम्मुख खड़ी की जा रही चुनौतियों से निबटने में तल्लीन है। इस कार्य में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने भारी संख्या में अपने प्राणों की आहुति दी है। हम अपने इन बहादुर साथियों को प्रणाम करते हैं। मेरा हृदय शहीद हुए जवानों के परिवारों के प्रति श्रद्धा एवं स्नेह से उमड़ा पड़ता है। मैं इन परिवारों को विश्वास दिलाता हूँ कि हम हमेशा उनके साथ हैं और वे हमें अपने किसी भी संकट में अपने से दूर नहीं पाएंगे।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को अपने अतीत और अपनी उपलब्धियों पर गर्व है। हम देश के सम्मुख खड़ी चुनौतियों के प्रति भी सजग हैं। देश द्वारा केंद्रीय रिजर्व पुलिस

बल के प्राप्ति व्यक्त किए गए विश्वास को पूरा करने के लिए हम अपने जवानों को सघन प्रशिक्षण दे रहे हैं, अपनी क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं और अपने जवानों को नई चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बना रहे हैं। हम अपने उद्देश्य "सेवा एवं भक्ति" को हमेशा याद रखते हैं।

आइये, इस मौके पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में हम अपनी प्रतिज्ञा दोहराएँ कि देश की एकता और अखंडता, शांति और सद्भाव को बनाए रखने के लिए हम कोई भी बलिदान देने में नहीं चूकेंगे।

जय हिंद !



(डी. पी. एन. सिंह)
महानिदेशक, के. रि. पु. बल

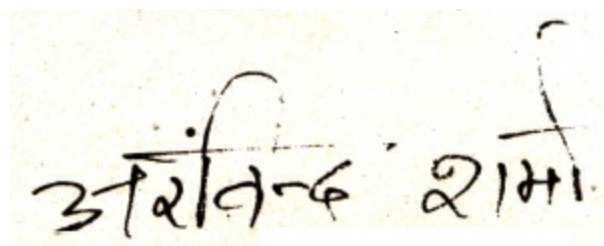
सम्पादकीय

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का गठन जिन उद्देश्यों के लिए किया गया है, उनका दायित्व वह बड़ी मुस्तैदी तथा सफलता के साथ निभा रहा है। चाहे वह जम्मू-कश्मीर के दुर्लभ पहाड़ी इलाके हों या पंजाब में मंड की दल-दली जमीन या उत्तर-पूर्व के दुर्गम रास्ते अथवा अयोध्या जैसे विवादास्पद धार्मिक स्थल, हर स्थान पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने बड़े धैर्य के साथ कार्य किया, अपितु इन स्थानों में अपनी उपस्थिति को वहां के लोगों को अनुभव कराया है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नवगठित दल आर. ए. एफ. की तो यह प्रतिष्ठा है कि उसके नाममात्र से ही जनता में खुशी की लहर तथा उपद्रवियों में भय की भावना उत्पन्न हो उठती है। अपनी नई वर्दी में वे बड़े प्रभावी लगते हैं। उन्हें देख कर ही सारी जनता प्रभावित हो जाती है। इसी तरह डांगरी में जब उनके कमांडो दस्ते जन-कार्य के लिए सफेद जिप्सियों में एम्बुलेंस तथा आग बुझाने वाली दमकलों के साथ साइरन बजाते निकले हैं तो उपद्रवी भाग खड़े होते हैं और जनता में विश्वास पैदा हो जाता है कि अब उनकी रक्षा होगी और उन्हें कोई तंग नहीं कर सकेगा। रेपिड एक्शन फोर्स ने बिहार के सीतामढ़ी इलाके में जहां दंगा भड़क गया था, को बड़े ही सुनियोजित ढंग से नियंत्रित कर आम

जनता को राहत पहुँचाई। उनके इस कार्य को प्रशंसा बिहार के मुख्यमंत्री ने भी की।

इसी तरह इस वर्ष हमने पंजाब पुलिस से पूर्ण सहयोग करके पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल के नेतृत्व में आतंकवादियों के छक्के छुड़ा दिए। “नाइट डौमिनेन्स योजना” अत्यंत सफल रही। इससे पंजाब के शहरों में जन-जीवन सामान्य सा हो गया। सुनसान पड़ी सड़कें फिर से गूंज उठी। लोगों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

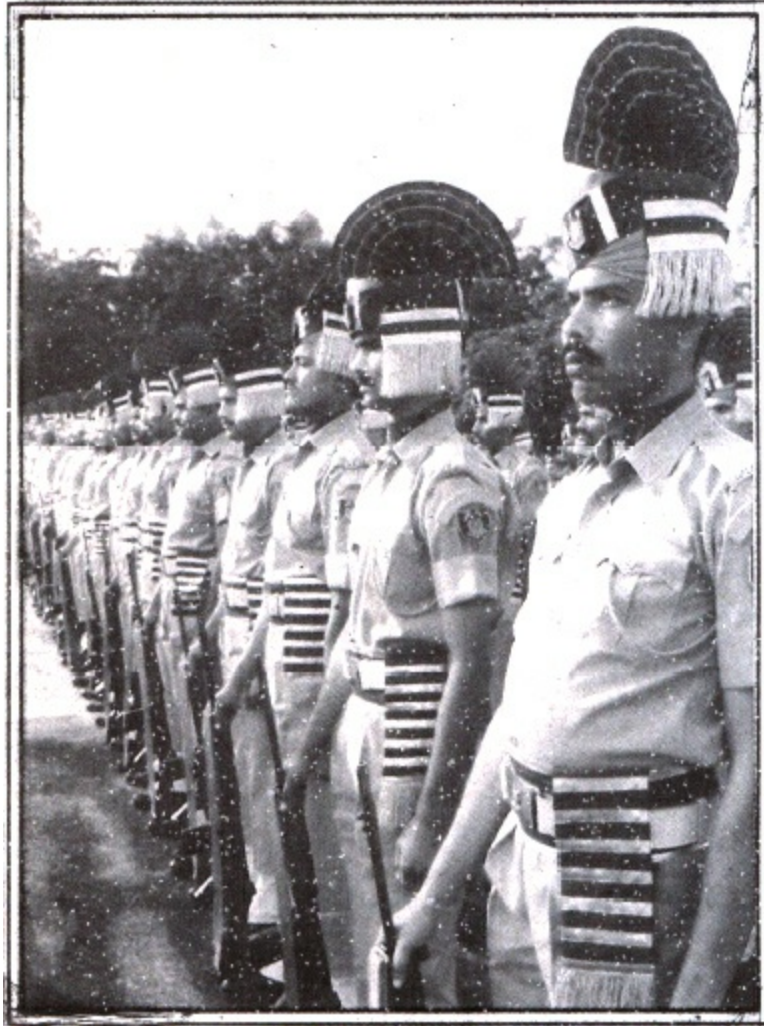
अभी हाल ही में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने त्रिपुरा में भी अपनी कर्तव्यपरायणता का उत्कृष्ट उदाहरण दिया था। जबकि, वहां की पुलिस ने विद्रोह कर सारे राज्य को दूविधा में डाल दिया था। ऐसे समय में हमारी ही फोर्स ने त्रिपुरा सरकार का साथ दिया और पुलिस का कार्य निष्ठा के साथ निभाकर वहां के अशांत माहौल को संभाला। कहने का अर्थ है कि सरकार की कठिन से कठिन परिस्थितियों में हमारे बल ने कर्तव्य का निर्वाह कर देश की एकता और अखंडता को बिगड़ने नहीं दिया है। हम आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास करते हैं कि भविष्य में भी केरिपुबल इसी तरह अपने कर्तव्यों को निभाता रहेगा।

A handwritten signature in black ink on a light-colored background. The signature is written in Devanagari script and appears to read 'अरिन्द शर्मा' (A. N. Sharma).

(ए. एन. शर्मा)

**केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल उपलब्धियां इतिहास हैं, शहादतें
प्रमाण हैं**





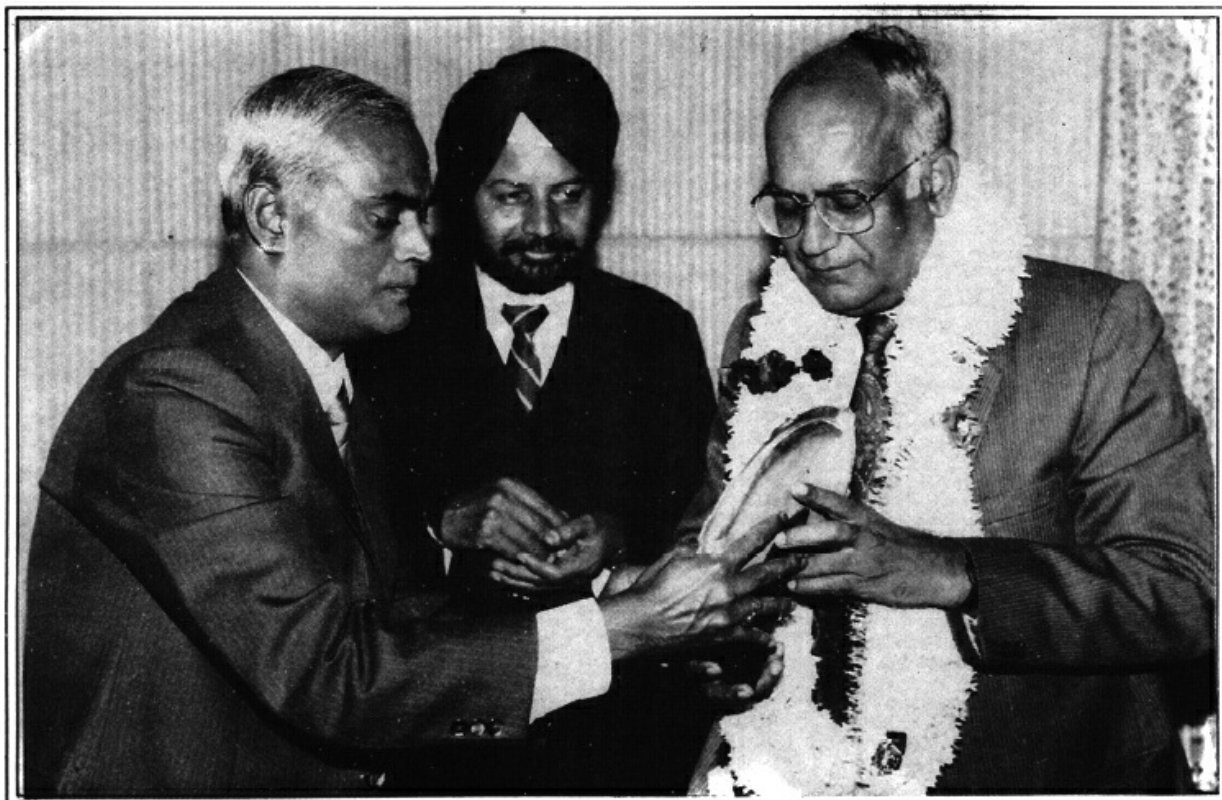
27 जुलाई, 1939 को मुख्यतः देशी रजवाड़ों में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए गठित किया गया केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, जो तब क्राउन रिप्रजेंटेटिव पुलिस के नाम से जाना जाता था, आज 129 बटालियनों वाला देश का सबसे बड़ा केंद्रीय पुलिस संगठन है, आज इसके परिवार के सदस्यों की संख्या डेढ़ लाख को भी पार कर गई है। नीमय में एक बटालियन से शुरू हुआ यह बल आज देश के चप्पे चप्पे पर कानून व व्यवस्था बनाए रखने में अपना योगदान दे रहा है।

21 अक्टूबर, 1959 को हाट स्प्रिंगज लद्दाख में चीनी सैनिकों से लड़ते हुए बल के 10 जवानों ने अपनी शहादत दे कर जो परंपरा शुरू की थी, वह आज तक अक्षुण्ण चली आ रही है। पंजाब, जम्मू कश्मीर और उत्तर पूर्वी राज्य आज बल के जवानों को बल मुख्य कर्मस्थली हैं। जहाँ शहादतें बल की कर्मशीलता और कर्तव्य परायणता का प्रमाण बनती हैं, वहीं बल अपनी उपलब्धियों को इतिहास मानता है। यहां उसकी ईति नहीं होती, अपितु इस इतिहास को रोशनी बल के जवानों के लिए भविष्य में सफलता के नए आयाम स्थापित करती है।

अकेले इसी वर्ष 15 दिसंबर, 92 तक उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार बल के सात

कामेकों को राष्ट्रपाते का शोयवोरता का पुलेस पदक तथा 28 को शोयवोरता का पुलिस पदक प्रदान किया गया। इस वर्ष पूरे देश में बल के जवानों ने 2078 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा इस दौरान हुयी मुठभेड़ों में 646 आतंकवादी मारे गए। इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 1080 घातक हथियार बरामद किए। इस वर्ष आतंकवादियों के साथ हुयी कुल 1041 मुठभेड़ों में बल 60 कार्मिकों ने कर्तव्य पर लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी, जब कि 345 गंभीर रूप से घायल हुए।

अपर महानिदेशक श्री सी. एस. द्विवेदी को बल से विदाई



श्री द्विवेदी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए महानिरीक्षक मुख्यालय श्री झा।
छाया-डी.एन. तिवारी

30 नवंबर, 92 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री सी. एस. द्विवेदी को बल के मुख्यालय में भावभीनी विदाई दी गई। श्री द्विवेदी ने 33 वर्ष की भारतीय पुलिस की अपनी सेवा से अवकाश ग्रहण किया। भारतीय पुलिस सेवा के 1959 बैच के मध्य प्रदेश काडर के श्री द्विवेदी 1986 में महानिरीक्षक उत्तर पूर्वी सेक्टर के रूप में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के परिवार में शामिल हुए। इसके बाद वह

उत्तरी क्षेत्र एवं के. रि. पु. बल के मुख्यालय में महानिरीक्षक भी रहे। 1990 में पदोन्नति के बाद श्री द्विवेदी ने बल के उत्तर पश्चिम जोन के अपर महानिदेशक का पदभार संभाला और 31, जनवरी 92 से श्री द्विवेदी के. रि. पु. बल मुख्यालय में अपर महानिदेशक के पदभार को संभाले हुए थे।

श्री द्विवेदी को 1978 में विशिष्ट सेवाओं के लिए तथा 1987 में सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया जा चुका है।

इस अवसर उन्हें विदाई देने के लिए आयोजित समारोह में उन्हें स्मृति चिह्न भेंट किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री द्विवेदी ने बल में अपने कार्यकाल के दौरान उन्हें मिले सहयोग तथा प्रेम के लिए बल के अधिकारियों तथा अन्य कार्मिकों के प्रति आभार प्रकट किया।

दक्षिण सेक्टर कल्याण कार्यक्रमों में अग्रणी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के दक्षिण सेक्टर के प्रशासनिक नियंत्रण में हैदराबाद, मद्रास तथा नीमच रेंज आती हैं। श्री जे. आर. कार्तिकेयन इस सेक्टर के महानिरीक्षक हैं। इसी सेक्टर के अंतर्गत पड़ने वाले ग्रुप केंद्र हैदराबाद को वर्ष-1991 के लिए सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र घोषित किया गया है। इस वर्ष इस सेक्टर के 6 कार्मिकों की शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। इनमें से 58 बटालियन के का. अल्फुद्दीन को यह सम्मान मरणोपरांत दिया गया। 65 बटालियन के डिप्टी कमांडेंट श्री ओमकार सिंह को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया, जबकि आठ कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किए गए। 78 बटालियन के सब इंस्पेक्टर करण सिंह को प्रधान मंत्री का जीवन-रक्षा पदक प्रदान किया गया। कार्यालय में हिंदी के कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए पल्लिपुरम के अपर महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की गई तथा पल्लिपुरम ग्रुप केंद्र को ही केरल हिंदी प्रचार सभा द्वारा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रशंसा पत्र, शील्ड तथा विशिष्टता प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए।

परिचालन की दृष्टि से इस सेक्टर के अंतर्गत आंध्रप्रदेश, तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, पांडिचेरी तथा लक्षद्वीप आते हैं। इस सेक्टर की युनिटों के जवानों ने वर्ष 92 में 30 नवंबर तक भारी संख्या में गोलीबारूद तथा विस्फोटकों के अतिरिक्त 178 घातक हथियार भी बरामद किए। साथ ही आतंकवादियों के साथ हुयी विभिन्न मुठभेड़ों में इस सेक्टर की युनिटों के जवानों ने 169 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा इन मुठभेड़ों में 130 आतंकवादी मारे गए।

खेल के क्षेत्र में भी इस सेक्टर ने विशेष सफलता प्राप्त की है। परिचालन के क्षेत्र में

भारों प्रतिबद्धताओं के बावजूद भी इस सेक्टर के जवान इंटर सेक्टर एथलीटेक्स प्रतियोगिता की चैंपियनशिप जीतने में सफल रहे। इसके अतिरिक्त इस सेक्टर के जवानों ने फर्स्टएड प्रतियोगिता, शूटिंग प्रतियोगिता तथा वालीबाल प्रतियोगिता की चैंपियनशिप भी जीती।

कल्याण कार्यक्रमों में भी यह सेक्टर इस अवधि में काफी अग्रणी रहा। इस वर्ष ग्रुप केंद्र हैदराबाद में डिश एंटेना लगाया गया, बेस अस्पताल-2 में एक दंत चिकित्सा युनिट के अतिरिक्त कुछ अन्य अत्याधिक सुविधाओं की भी व्यवस्था की गई।

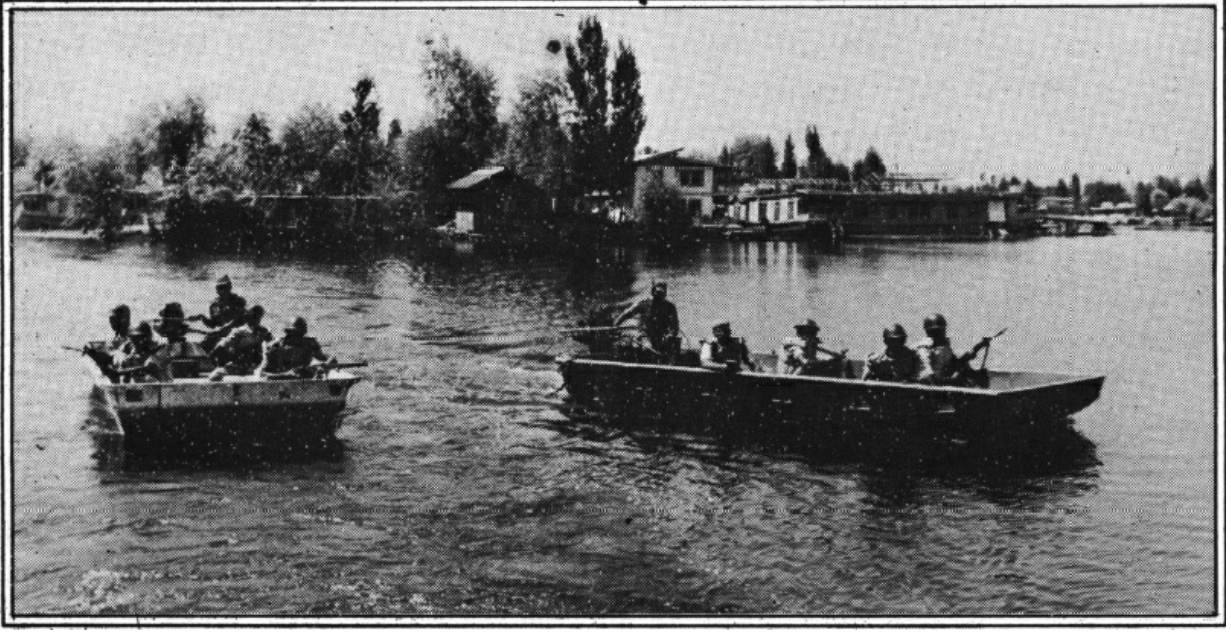
113 बटालियन की दीक्षांत परेड में आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री महोदय ने बल के सदस्यों के कल्याण कार्यक्रमों हेतु 5 लाख रूपए के अनुदान की घोषणा की। इस राशि का उपयोग कर्मचारियों की मेस के स्तर को उठाने के लिए किया जाएगा।

आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री ने हैदराबाद में आर. ए. एफ. की युनिटों के लिए 50 एकड़ भूमि देने की घोषणा की है।



63 बटालियन के का. पी. आर. अर्जुनन को मरणोपरान्त राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया गया। दक्षिण सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी. आर. कार्तिकेयन से पदक ग्रहण करती हुयी कां. अर्जुनन की मां।

जम्मू कश्मीर
प्रतिबद्धताओं के साथ साथ जिम्मेदारियां भी बढ़ी हैं



डल झील में पैट्रोलिंग करते बल के जवान

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि किसी भी फोर्स की कार्यकुशलता उसके प्रशिक्षण, अनुशासन, नैतिक बल तथा अच्छे नेतृत्व पर निर्भर करती है। जम्मू कश्मीर में तैनात बल की सभी युनिटों के संदर्भ में इन सभी तथ्यों की ओर भरपूर ध्यान दिया गया है। जम्मू कश्मीर में तैनात बल की लगभग सभी युनिटों की क्षमता अंतिम छोर तक पूर्ण हैं। राज्य सरकार फिलहाल बल की युनिटों को प्रशिक्षण के लिए फौरी तौर पर फारिग करने की स्थिति में नहीं है, अतः जम्मू कश्मीर में तैनात बल के जवानों के लिए उनकी युनिटों में ही प्रतिदिन कुछ घंटों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है। ताकि वे शारीरिक रूप से पूर्णतया चुस्त रहें। उन्हें अत्याधुनिक शस्त्रों के परिचालन की भी ट्रेनिंग दी जा रही है। फील्ड तथा योजनाओं के स्तर पर भी उन्हें सजग रखा जा रहा है।

सदस्यों में अनुशासन को बनाए रखने के लिए उन्हें सीधे महानिरीक्षक परिचालन, उप महानिरीक्षक, परिचालन, जम्मू कश्मीर तथा उप महानिरीक्षक श्रीनगर के अनुशासनिक नियंत्रण में रखा गया है।

देश की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए आतंकवाद से ऊब चुके 23 आतंकवादियों को, जिनके विरुद्ध कोई गंभीर आरोप नहीं थे, 2 अक्टूबर को रिहा किया गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में इन आतंकवादियों ने देश के प्रति निष्ठा की शपथ भी ली।

फील्ड में काम करने वाली प्रत्येक कम्पनी को 50 बुलेट प्रूफ जैकेटें तथा आधुनिक बुलेट प्रूफ वाहन उपलब्ध कराए गए हैं, ताकि आतंकवादियों से मुठभेड़ के समय अपनी क्षति कम से कम हो।

इस क्षेत्र में बल की दक्षता को बढ़ाने के लिए महानिरीक्षक जम्मू कश्मीर के

कायालय में एक इंटेलीजेंस सेल की स्थापना की गई है तथा फोल्ड में कार्य कर रहे जवानों की मदद तथा विशेष अभियानों के लिए चुनिंदा अधिकारियों तथा जवानों की एक टास्क फोर्स भी तैयार की गई है। जनवरी, 92 से 20 नवंबर, 1992 तक उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार इस क्षेत्र में इस दौरान बल के जवानों की आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 41 आतंकवादी मारे गए तथा 956 को गिरफ्तार किया गया। प्रारंभिक जांच के बाद इनमें से 533 को रिहा कर दिया गया, जबकि 410 को टाडा के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। इनमें एक डिस्ट्रिक्ट चीफ, 20 एरिया कमांडर, एक जोनल कमांडर, 31 बेस कमांडर, पांच युनिट कमांडर, एक रीजनल कमांडर, एक डिस्ट्रिक्ट प्रेसीडेंट, एक मिलिट्री एडवाइजर, एक पब्लिशर तथा एक डिस्ट्रिक्ट ओर्गेनाइजर शामिल है।



श्रीनगर लालचौक में तैनात बल के जवान

इन मुठभेड़ों में भारी मात्रा में गोली बारूद तथा अन्य विस्फोटकों के अतिरिक्त बल के जवानों ने तीन राकेट लांचर, सात राकेट, तीन राकेट बूस्टर, एक राकेट लांचर की नाईट एमिंग डिवाइस, दो जी. पी. एम. जी., 32 ए. के. 47 राइफलें, 88 ए. के. 56 राइफलें, एक देशी पिस्तौल, चार. 22 पिस्तौल, 35 अन्य भिन्न प्रकार की पिस्तौलें, सात रिवाल्वरें, 80 ग्रिनेड, पांच स्टिक ग्रिनेड, 6 बम, पांच एंटी पर्सनल-टैंक माईन, भारी मात्रा में विस्फोटक पाउडर तथा 41 मोटर प्यूज वायर भी बरामद किए।

मगर इन सब उपलब्धियों के लिए बल के जवानों को भारी कीमत अदा करनी पड़ी। आतंकवादियों से लड़ते हुए के. रि. पु. के 30 वीर जवान जम्मू कश्मीर में शहीद

हुए। इनमें एक राजपात्रित अधिकारी, चार एस. ओ. 10 एन. सी. ओ. तथा 15 कांस्टेबल शामिल हैं।

नीति रत्न

गृहस्थ आश्रम परम पवित्र है।
घर सदा तीर्थ के समान है।

—पद्म पुराण

जिम्मेदारियां बढ़ी हैं

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का केन्द्रीय सेक्टर सबसे नवीन सेक्टर है। इस क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री एस. सी. चौबे ने अप्रैल, 1991 में कार्य भार ग्रहण किया और जुलाई, 91 से यह सेक्टर, जिसका मुख्यालय लखनऊ है, पूरी तरह से गतिविधि में आ गया। इस सेक्टर के अन्तर्गत बल की रामपुर तथा इलाहाबाद रेंज आती हैं। पूरे उत्तर प्रदेश को इस सेक्टर के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत रखा गया है।

उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों तथा कई क्षेत्रों की साम्प्रदायिक संवेदनशीलता को देखते हुए इस सेक्टर का दायित्व अत्यधिक बढ़ जाता है। इन क्षेत्रों में इस सेक्टर के जवानों ने विशेष उपलब्धियां हासिल की हैं। इस वर्ष इस सेक्टर की अधिकांश बटालियनें पंजाब, जम्मू कश्मीर, असम तथा त्रिपुरा में तैनात रहीं। जहां उन्होंने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं। परिचालन के क्षेत्र में अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद इस सेक्टर ने इंटर बटालियन प्रतियोगिता का आयोजन किया तथा इस सेक्टर की टीमों ने इंटर सेक्टर प्रतियोगिता में भी भाग लिया। इस सेक्टर की टीम इंटर सेक्टर कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम तथा कुश्ती प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर रही। इस वर्ष सेक्टर ने खेलकूद कोटे से 26 खिलाड़ियों की भर्ती की।

ग्रुप केन्द्र रामपुर में इस सेक्टर के तत्वाधान में उत्तर प्रदेश पुलिस के जवानों को आतंकवाद विरोधी तकनीकों की जानकारी देने के लिए एक विशेष कार्यक्रम भी चलाया गया। इस कार्यक्रम के तहत अब तक उत्तर प्रदेश के 440 कर्मियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

अयोध्या स्थित विवादित धर्मस्थल की सुरक्षा में भी इस सेक्टर का विशेष योगदान रहा है।

स्पेशल सेक्टर नई बटालियनों का दायित्व

अर्द्धसैनिक बलों की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए सरकार ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए वर्ष 1991 में 20 नई बटालियनों के गठन की स्वीकृति दी। ये सभी बटालियनें प्रारंभ में अलग अलग महानिरीक्षकों के दायित्व क्षेत्र में आती थीं, मगर बाद में प्रशासनिक नियन्त्रण के लिए एक नए सेक्टर का निर्माण किया गया, यही सेक्टर स्पेशल सेक्टर कहलाता है। इस का मुख्यालय दिल्ली में है तथा इस के महानिरीक्षक श्री जी. झा हैं।

इन सभी बटालियनों ने अपना प्रशिक्षण 1992 के मध्य में सम्पूर्ण किया। अतः इन बटालियनों की समापन एवं दीक्षांत परेड़ सम्पन्न हुई। अपनी दीक्षांत परेड़ों के बाद इन सभी बटालियनों को पूरे देश में अलग अलग परिचालन कार्यों में तैनात कर दिया गया। वर्तमान में ये सभी बटालियनें देश की आतंकवाद विरोधी मुहिम तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने में अपना योगदान दे रही हैं। केवल 124 और 128 बटालियन के जवानों को पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में कार्यरत बटालियनों में रिक्त पड़े स्थानों में स्थानांतरित कर दिया गया है। वर्तमान में ये दोनों ही बटालियने एक-एक हजार रंगरूटों को प्रशिक्षण दे रही हैं।

बेसिक ट्रेनिंग के दौरान भी इस सेक्टर की कुछ बटालियनों को देश के आम चुनावों तथा पंजाब विधान सभा के चुनावों के समय कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया था। अपने पांच-छः महिने के संक्षिप्त कार्यकाल में ही इन जवानों ने पंजाब में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। इन बटालियनों के जवानों ने विभिन्न मुठभेड़ों में 15 से अधिक खूंखार आतंकवादियों को मार गिराया। इन मुठभेड़ों में इन जवानों ने 12 ए. के. 47 राइफलें, चार ए. के. 56 राइफलें, आठ अन्य राइफलें, तथा 12 बोर गनों सहित भारी मात्रा में असला भी बरामद किया।

आर. ए. एफ.

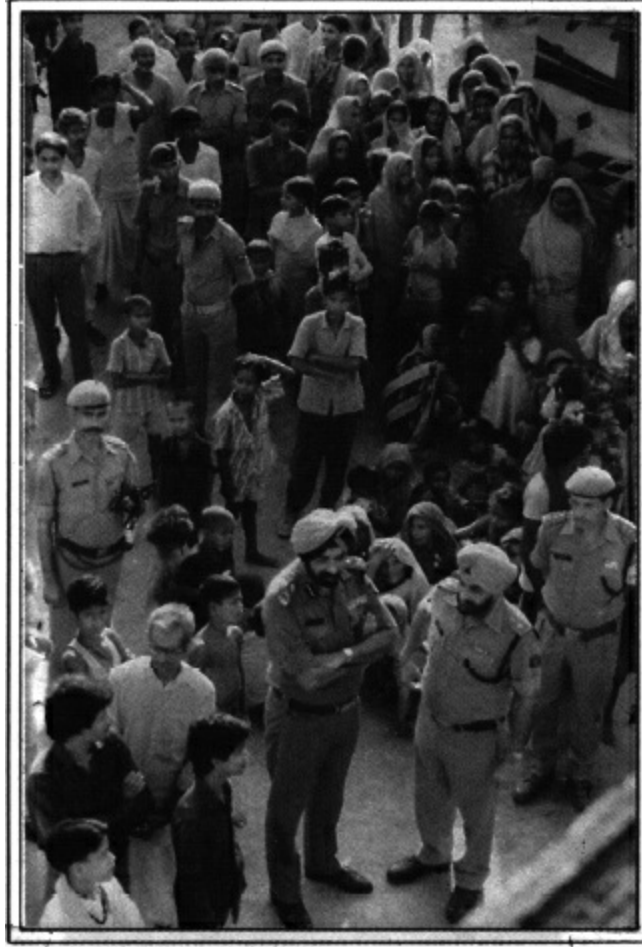
सीतामढ़ी आर. ए. एफ. की प्रथम परीक्षा स्थली

6 अक्टूबर, 1992 को अचानक साम्प्रदायिक दंगों की आग में धधक उठने वाले

सीतामढ़ी शहर के लिए रेपिड एक्शन फोर्स के जवान शांति के फारेस्ट बनकर अवतरित हुए। ज्ञातव्य है कि साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 10 बटालियनों को रेपिड एक्शन फोर्स में परिवर्तित किया गया है। इन बटालियनों के जवानों को साम्प्रदायिक दंगों की प्रवृत्ति तथा स्थितियों को दृष्टि में रखकर विशेष प्रकार का प्रशिक्षण तथा उपकरण उपलब्ध करा गए हैं। इस बल की बटालियनों में प्राथमिक उपचार पर विशेष जोर दिया गया है, ताकि दंगों की आग से झुलसी पीड़ित मानवता को शीघ्रातिशीघ्र चिकित्सकीय तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें। इस बल को इस प्रकार प्रशिक्षण दिया गया है कि इस बल के कार्मिक एक पुलिस बल से अधिक राहत एवं सहायता दल के रूप में काम करते हैं।

इस बल का उद्घाटन 7 अक्टूबर, 92 को ही नई दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री श्री एस. बी. चव्हाण ने किया था। अपने अस्तित्व के मात्र चार दिन बाद ही आर. ए. एफ. को अपनी प्रथम परीक्षा स्थली सीतामढ़ी से बुलावा आ गया। इलाहबाद स्थित आर. ए. ए. की 101 बटालियन को तत्काल सीतामढ़ी की ओर कूच करने के आदेश हुए और बटालियन के सदस्य अपने कमांडेंट श्री संतिंदर सिंह के नेतृत्व में तत्काल सीतामढ़ी पहुंच गए।

यह वह समय था, जब सम्पूर्ण सीतामढ़ी दंगों की आग में धधक रहा था। नफरत की आग चारों तरफ भड़की हुयी थी। पीड़ित मानवता किसी अप्रत्याशित सहायता की आस में इंतजार की घड़ियां गिन रही थी। ऐसे दुविधापूर्ण तथा तनावभरे माहौल में आर. ए. एफ. के जवान शांतिदूत बनकर अवतरित हुए। क्रोध और हिंसा से तपते सीतामढ़ी पर उनके आगमन मात्र से शांति की शीतलता पसरने लगी।



दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करते हुए आर. एफ. के महानिरीक्षक श्री सी. पाल सिंह

10 अक्टूबर, 92 को प्रातः 10 बजे आर. ए. एफ. के जवानों का सीतामढ़ी में आगमन हुआ। अपने सारे साजो सामान को ट्रकों में लदा छोड़कर ही आर. ए. एफ. के जवान तत्काल अपने अस्त्र शस्त्रों के साथ पूरे शहर में फैल गए। उनकी उपस्थिति मात्र से पूरे शहर में शांति व्याप्त हो गई। बल के जवान घंटों शहर की गश्त लगाते रहे। लोग उन्हें अचरज और कौतुक के साथ देख रहे थे। उनके लिए यह एक नयी प्रकार की पुलिस थी। अब तक पुलिस उनके मन में भय उत्पन्न करती थी, मगर इस बल के जवान उनके साथ सहानुभूति पूर्वक पेश आ रहे थे। ज्यों ज्यों स्थिति सामान्य की ओर लौटने लगी, बल के जवानों ने अन्य राहत कार्यों की ओर ध्यान देना भी शुरू किया। बल के डाक्टरों तथा जवानों ने मेडिकल शिविरों का आयोजन किया, जिनमें दो हजार से अधिक लोगों को चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई गयी।

आर. ए. एफ. के महानिरीक्षक श्री सी. पाल सिंह स्वयं सीतामढ़ी गए। उन्होंने दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया। चिकित्सा शिविरों का दौरा किया तथा घायलों को उपलब्ध कराई जा रही चिकित्सा सुविधाओं का जायजा लिया।

पूरे देश के समाचारपत्रों तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया, रेडियो, दूरदर्शन ने सीतामढ़ी

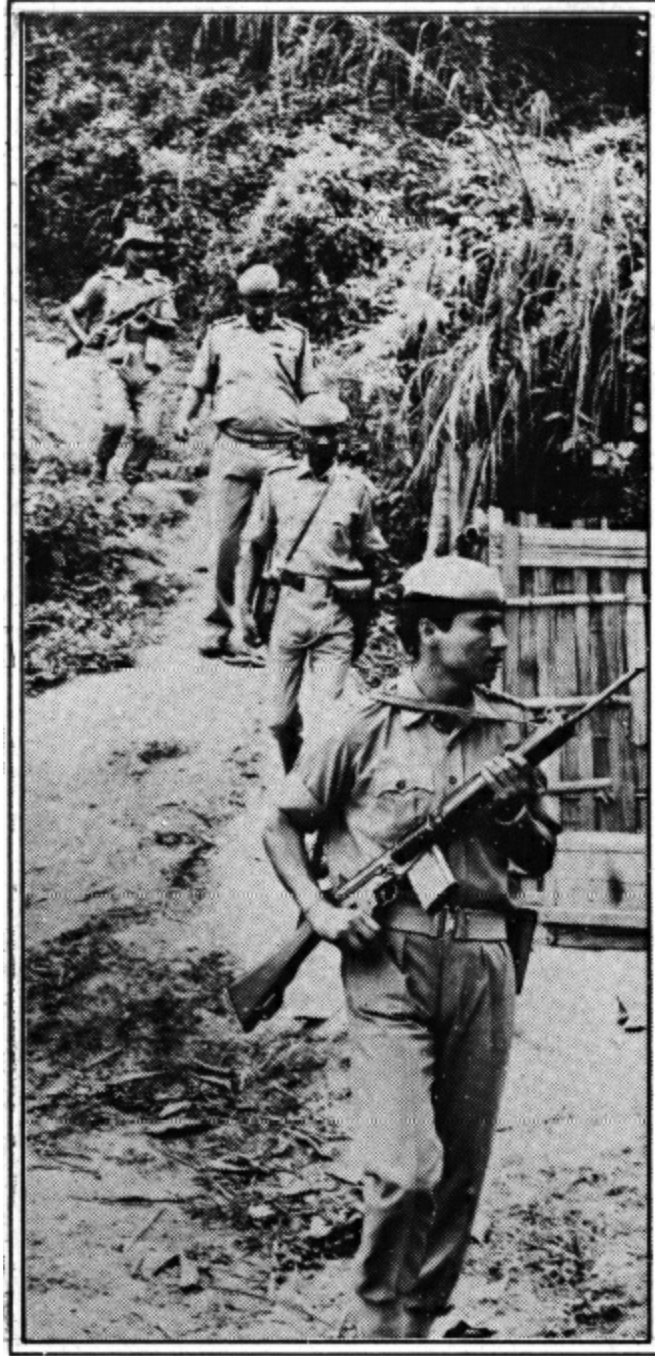
में आर. ए. एफ. के कार्य की भरपूर प्रशंसा की तथा पुलिस बलों के इतिहास में आर. ए. एफ. के गठन को एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। देश के प्रमुख समाचारपत्रों में आर. ए. एफ. सुर्खियों में छाया रहा। इस प्रकार आर. ए. एफ. अपनी प्रथम परीक्षा में न केवल सफल रहा, अपितु उसकी इस सफलता को पूरे देश में मान्यता भी मिली।

उत्तर पूर्वी सेक्टर

उपलब्धियां स्वयं प्रमाण हैं

उत्तर पूर्वी सेक्टर के अंतर्गत पड़ने वाले क्षेत्र, असम, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, नागालैंड आदि काफी लम्बे समय से देशद्रोही गतिविधियों से ग्रस्त रहे हैं। इधर पिछले कुछ वर्षों में भले ही वे प्रदेश देश की मुख्य धारा में शामिल हुए हैं, मगर इन इलाकों में विद्रोही तत्वों का उत्पाद अभी पूर्णतया समाप्त नहीं हुआ है। घोर विपरीत स्थितियों के बावजूद के. रि. पु. बल के जवान इन इलाकों में अपनी बहादुरी और साहस के बल पर विद्रोहियों की गतिविधियों पर काबू बनाए रखने में सफल रहे हैं।

सिर्फ आतंकवाद और विद्रोही गतिविधियां ही नहीं, अपितु प्रत्येक विपरीत स्थिति में, भले वह नागरिक हो या प्रशासनिक बल के जवानों ने स्थिति को बिगड़ने से संभाला है। मेघालय पुलिस द्वारा हड़ताल पर चले जाने के कारण शिलांग में कानून व व्यवस्था को बनाए रखने में जो संकट पैदा हो गया था, उसे दूर करने का पूरा श्रेय बल की 35 बटालियन को जाता है। कमांडेंट एन. के. बर्थवाल के नेतृत्व में बल के जवानों को शिलांग में पुलिस कार्यों की देख रेख हेतु तैनात किया गया था। इस दौरान उनके द्वारा निभाई गयी भूमिका की नागरिक और प्रशासनिक अधिकारियों ने भरपूर प्रशंसा की है। इसी प्रकार जब अगस्त, 92 में पूरा शिलांग जनजातीय युवकों के हिंसक प्रदर्शनों से त्रस्त हो गया था, बल की 128 बटालियन के सदस्यों ने बेहद धैर्य और कुशलता के साथ कम से कम बल का प्रयोग कर स्थिति को सामान्य बनाने में भरपूर योगदान दिया।



त्रिपुरा की एक दुर्गम पहाड़ी ढलान पर बल के जवानों की गश्त ।

छाया-सतीश खन्ना

वर्ष 1992 में 30 नवंबर तक प्राप्त आंकड़ों के अनुसार उत्तर पूर्वी सेक्टर में तैनात बल के जवानों ने उत्पादियों से भारी मात्रा में विस्फोटक पदार्थों के अतिरिक्त 19 रिवाल्वर, दो ए. के. 47 राइफलें, तीन .22 राइफलें, आठ 12 बोर की बंदूकें, चार पिस्तौलें, तीन कारबाइन, दो वायरलेस सैट, 128 पैकेट गांजा तथा 10 पैकेट ब्राउन शुगर सहित अन्य वाहन इत्यादि बरामद किए।

इस अवधि में बल के जवानों ने यहां 140 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया, जब कि बल के जवानों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 19 आतंकवादी मारे गए तथा 44 गंभीर रूप से घायल हुए।

इसके अतिरिक्त उत्तर पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री एम. पी. सिंह ने स्वयं इस क्षेत्र की लगभग सभी युनिटों का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया, तथा कल्याण कार्यक्रमों आदि का निरीक्षण किया। इस अवधि में इस सेक्टर के अंतर्गत आने वाले ग्रुप केंद्रों ने कई कल्याण कार्यक्रम आयोजित किए।

पंजाब

पंजाब

शांति के पथ पर

रिपोर्ट- अनिल गुप्ता
छाया- संजय शर्मा
फोटोग्राफर- हिन्दुस्तान टाइम्स
तथा सतीश खन्ना

पंजाब के अंदरूनी गांवों के दौरों से पूर्व पंजाब के खुशहाल गांवों की जो तस्वीर हमारे मस्तिष्क में थी, उसे धक्का लगा। पंजाब के गांवों में दूर दूर तक फैले हरियाले खेतों में मस्ती से झूमते किसान, अपनी अलहड़ मदमस्तियों में लस्सी और छाछ के मटके लिए खेतों की मुंडेरों पर से गुजरती मासूम बालाओं के दर्शन की हसरत इस पूरे दौरे में कहीं पूरी नहीं हो पायी।

दौरे के पहले चरण में अमृतसर पहुंचते ही उप महानिरीक्षक श्री एस. एस. विवेक ने पंजाब के ताजा हालात के बारे में हमें जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ महिनों में पंजाब में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा पंजाब पुलिस को कई महत्वपूर्ण सफलताएं मिली हैं। इन सफलताओं के चलते इन इलाकों के लोगों में धीरे धीरे फिर से आत्मविश्वास लौटने लगा है। लोग अब अपने घरों से डरे सहमे बाहर नहीं निकलते। इस दौरे में कई गांवों के सरपंचों ने तो यहां तक कहा कि यदि पुलिस इसी प्रकार कार्य करती रही, तो यह असम्भव नहीं कि अगले साल छः महिने के अंदर ही पंजाब एक बार फिर से अपनी उसी पुरानी खुशहाल और मदमस्त जिंदगी में लौट आए। हालांकि आतंकवादियों ने इस इलाके में जो जो कुकर्म किए हैं, उन सदमों से उबरना इतना आसान नहीं है।

खेमकरन सेक्टर में आपरेशन नाइट डामिनेंस के दौरान बल के जवानों को इन इलाकों में गश्त करते देख हैरत होती है, जिन इलाकों में रात तो रात दिन में लोग निकलने में घबराते थे। इस क्षेत्र में बल के जवानों ने हर ऐसी जगह पर नाके लगाए हुए थे, जहां से कि आतंकवादियों का प्रवेश संभव था। पाकिस्तान सीमा से सटे इस इलाके में आपरेशन नाइट डामिनेंस के बाद आतंकवादियों की रात को होने वाली गतिविधियां अब थम सी गई हैं। लोग अब फिर से मुंह अंधेरे पीतल की गागरों में दूध भरे इन गागरों को साईकिलों पर लादे घरों से निकलने लगे हैं।

अगले दिन आतंकवादियों के कुकर्म तथा बल के जवानों की बहादुरी की एक और मिसाल हमें देखने को मिली। 14 बटालियन के कमांडेंट श्री भारद्वाज, जो कि इस सारे दौरे में हमारे साथ के, हमें मजीठा जिले के कलथूंगल थाने के अंतर्गत आने वाले गांव मत्तेवाल ले गए। यह वह गांव है, जहां 15 सितंबर 1992 को 14 बटालियन के सब इंस्पेक्टर हाकिम सिंह ने अपने पांच साथियों के साथ एक बहक में छिपे बैठे पांच आतंकवादियों को घेर लिया था। इस मुठभेड़ में अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस ये पांचों आतंकवादी मारे गए। सब इंस्पेक्टर हाकिम सिंह की जरा सी असावधानी न केवल उन के प्राण ले सकती थी, अपितु ये आतंकवादी उन के दल पर भी भारी पड़ सकते थे।

घर के सभी सदस्यों के चेहरों पर लगभग तीन माह बीत जाने के बाद भी इस हादसे का आतंक झलक रहा था। हालांकि घर की मरम्मत कर ली गई थी, मगर दीवारों पर गोलियों के निशान अभी भी स्पष्ट थे। परिवार के बुजुर्ग लक्खा सिंह ने स्वयं हमें बताया कि वे पांचों आतंकवादी सुबह ही उनके घर पर आ गए थे। उन्होंने घर की औरतों को एक कमरे में बंद कर दिया। और पुरुषों को एक अन्य कमरे में। उन्होंने उसी घर में उनसे खाना बनवाया। जिस वक्त सब इंस्पेक्टर हाकिम सिंह वहां पहुंचा उस समय चार आतंकवादी एक कमरे में ताश खेल रहे थे, तथा एक आतंकवादी एक अन्य कमरे में था।

इन आतंकवादियों ने न केवल इस घर की महिलाओं का अपमान किया अपितु उनके साथ अभद्र व्यवहार भी किया। उस घर के बुजुर्गों और अन्य पुरुषों की

मानासिक स्थिति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, जिन की आंखों के सामने बंदूक की नोक पर उनके घर की महिलाओं का अपमान किया जा रहा हो। पता नहीं कितनी देर तक उन्हें इस नर्क में जीना पड़ता। मगर ऐसे में बल के जवान उनकी रक्षा के लिए देवदूत बन कर अवतरित हुए।



छाया- संजय शर्मा

लक्खा सिंह की मां हरभजन कौर ने अपनी पोपली जबान से इस हादसे को याद करते हुए हमें बताया कि आतंकवादियों ने हमें थप्पड़ मारे, घर की महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया। और हमें एक कमरे में बंद कर दिया। हम लोग बहुत डर गए थे। हमने उन्हें कहा भी कि यह सब करने से अच्छा है कि हमें गोली मार दो, मगर ऐसे में भगवान भी मदद नहीं करता। बाद में फोर्स के लड़कों ने आकर हमें बाहर निकाला। उन्होंने ही बाहर बंधी भैंसों को वहां से हटाया ताकि उन्हें गोली न लगे। उन्होंने भैंसों को पानी भी पिलाया। एक आतंक की छांव में जी रहे इन लोगों के लिए बल के जवानों की उपस्थिति ढाढ़स बंधाती है। बल के जवानों के प्रति उनका आदर भाव पंजाब के गांवों में बदलते माहौल का परिचय है।

90 बटालियन के कमांडेंट श्री एस. एस. सोनी हमें अपने साथ रय्या जिले के मेहता थाने के अंतर्गत आने वाले भोईवाल गांव के पास ले गए। महज पांच दिन पूर्व 10 दिसंबर, 92 को जब इलाके की जांच चल रही थी, तो एक आतंकवादी दौड़ कर बलदेव सिंह की बहक में छिप गया, और उसने बल के जवानों पर फायर करना शुरू कर दिया। बल के जवानों ने जम कर मुकाबला किया। इस गोलीबारी में बलदेव सिंह का पूरा घर तहस नहस हो गया। एक भैंस को भी गोली लगी। वह आतंकवादी तो अंततः मारा ही गया, मगर अपने पीछे छोड़ गया तबाही और बर्बादी के निशान, जो लम्बे समय तक घर वालों के चेहरों पर पड़े जाते रहेंगे। घर के मालिक बलदेव

सिंह के लड़के तेजासिंह ने भरे गले से हमें बताया कि साहब हम तो बबोद हो गए। हमारी एक भैंस गोली लगने से बुरी तरह घायल है। लड़की के दहेज के लिए इकट्ठा किया सारा सामान दो कमरों के साथ जलकर खाक हो गया।

तेजासिंह की हर बात की गवाही दे रही थीं, गोलियों में छलनी हुई घर की दीवारें, जले हुए कमरे, उनमें जले बिस्तर, गोलियों से छलनी कनस्तर परात और संदूक।



पंजाब में आतंकवादियों से बरामद हथियार
छाया-सतीश खन्ना

बल के जवानों को भले ही इस मुठभेड़ में बड़ी उपलब्धि हासिल हुई हो, और उन्होंने 'ए' श्रेणी के आतंकवादी गुरनाम सिंह धमाका को जो कि दशमेश रेजीमेंट ऑफ खालिस्तान का मुखिया था, मार गिराया हो और उस से एक ए. के. 47 राइफल के साथ भारी मात्रा में असला बरामद किया हो, मगर इस उपलब्धि की भारी कीमत बलदेव सिंह के पूरे परिवार को चुकानी पड़ी थी। उन की उम्र भर की कमाई उन की आंखों के आगे राख का ढेर बन कर पड़ी थी। आतंकवादियों के विरुद्ध उन की आंखों में धधकते शोले इस बात का प्रमाण थे कि वे अब आगे इस तरह की कीमत चुकाने के लिए हरगिज तैयार नहीं हैं। उन के स्वर में झलकता यह संकल्प बल के जवानों की एक बहुत बड़ी जीत है और इस जीत का भरपूर श्रेय पंजाब में तैनात बल और पंजाब पुलिस के हर अधिकारी और जवान को अवश्य मिलना चाहिए।

पंजाब हमारी क्षमता, हमारी शक्ति

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कुल 768 कम्पनियों में से 266 कम्पनियां पंजाब में तैनात हैं। पंजाब में आतंकवादियों से सीधे भिड़ने के साथ साथ के. रि. पु. महत्त्वपूर्ण स्थानों, आवासों तथा व्यक्तियों को भी सुरक्षा प्रदान कर रहा है। रात्रि गश्त, संवेदनशील इलाकों में घात, ग्रामीण इलाकों में नाका तथा गश्त आदि तो उस के सामान्य कार्यों में शामिल हैं ही।

सामान्यतः पंजाब में बल के कामेकों को एस. एल. आर., लाइट मशीन गन तथा 2" मोर्टार से लैस किया गया है मगर अब उन्हें कुछ क्षेत्रों में ए. के. 47 राइफलें भी प्रदान की गई हैं। यहां जवानों को 338 बुलेट प्रूफ जैकेटे, 137 बूलेट प्रूफ वाहन तथा 148 नाईट विजन उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं।

कमोबेश पूरे पंजाब में आज हर नागरिक और उद्योगपति आज इसी संकल्प से बंधा है कि हर हालत में पंजाब में आतंकवाद को खत्म होना ही चाहिए। हमने आतंकवाद से सर्वाधिक ग्रस्त तरनतारन, मजीठा, अमृतसर और मंड क्षेत्र के ग्रामीण नागरिकों सरपंचों तथा व्यापारियों से बात की। हर एक के चहरे पर हमें बल के जवानों के प्रति विश्वास और आतंकवादियों के प्रति नफरत के भाव दिखाई दिए। नागरिकों की यह नफरत, अंततः आतंकवादियों के लिए काल बन रही है। जहां कभी उन्हें पनाह मिलती थी, अब वहां से पुलिस को सूचनाएं मिल रही हैं। तरनतारन जिले के एस. पी. आपरेशन श्री खुबीराम ने हमें बताया कि इस वर्ष अकेल तरनतारन में उन्होंने 340 के करीब आतंकवादियों को धराशायी किया है और उन्हें उम्मीद है कि वर्ष के अंत तक आतंकवादियों की यह संख्या 365 को पार कर जाएगी। पुलिस बलों की यह सफलता बिना नागरिक सहयोग के सम्भव नहीं थी। और जिस क्षेत्र के नागरिक आतंकवादियों के विरुद्ध हो जाएं, वहां सुचारू, शांतिपूर्ण कानून व्यवस्था का स्वप्न देखना कोई असम्भव कार्य नहीं होना चाहिए और तरनतारन के बाजारों की चहलपहल इस बात का प्रमाण है कि इस इलाके के नागरिकों का यह स्वप्न अवश्य पूरा होगा। उसे पूरा होना ही चाहिए।

फौरी कार्यवाही दस्ता (क्यू. आर. टी.)

आतंकवादी घटनाओं के समय तत्काल कार्रवाई के लिए अमृतसर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का एक फौरी कार्यवाही दस्ता गठित किया गया है। सामान्य रूप से यह दस्ता क्यू. आर. टी. यानि क्विक रियेक्शन टीम के नाम से जाना जाता है। यह दस्ता अमृतसर स्थित बल की 43 वीं बटालियन के तहत गठित किया गया है, तथा सीधे 43 वीं बटालियन के कमांडेट के तहत कार्य करता है। इस दस्ते के जवान चौबीसों घंटे चौकस और ड्यूटी के लिए तैयार रहते हैं, तथा कहीं से भी सूचना मिलते ही तत्काल घटनास्थल की ओर कूच कर जाते हैं।

इस दस्ते की कमान सहायक कमांडेट श्री संजीव शर्मा के पास है। इस दस्ते में चुन-चुन कर युवा और फुर्तीले जवान रखे गए हैं। उन्हें हर तरह के आधुनिकतम हथियारों के साथ साथ ड्रेगन लाइट इत्यादि भी उपलब्ध कराई गई हैं, ताकि वे रात्रि को भी आसानी से कार्य कर सकें। किसी दुर्घटना की स्थिति में प्राथमिक उपचार कर पाने के लिए आवश्यक सामग्री भी उन्हें उपलब्ध कराई गई है।

और यह स्वप्न पूरा कैसे होगा? इस का पारेचय हमें अपर उप महानिरीक्षक श्री ओ. पी. भट्टा, कमांडेंट श्री नंदलाल और श्री भारद्वाज ने तब दिया, जब वे हमें जफ्फरवाल गांव से होते हुए मंड में ले गए। इस क्षेत्र में बल के जवानों ने हमें जून के अंत में लगातार तीन दिन तक चले एक आपरेशन की पूरी कार्रवाई अभिनीत कर दिखाई। इस मुठभेड़ में पांच कुख्यात आतंकवादी मारे गए थे और उनसे भारी मात्रा में घातक हथियार तथा असला बरामद किया था। बाद में तरनतारन जिले के एक गांव में हुई एक अन्य मुठभेड़ की कार्रवाई भी दिखाई गई, जिसमें दो कुख्यात खाड़कू मारे गए थे। इस गांव से लौटते हुए हमने बड़ी तादाद में बल के और पंजाब पुलिस के जवानों को एक गांव की तलाशी लेते देखा। पता चला कि एक दिन पूर्व कुछ आतंकवादी एक दंपति पर गोलियों की बौछार कर यहीं कहीं छिपे बैठे हैं। इन तीनों कार्रवाइयों में जवानों की कार्यशैली, उनकी हिम्मत, जाबांजी और कर्तव्य के प्रति समर्पण के भाव को देखते हुए हमारा यह विश्वास पुख्ता होता गया कि संभव है पंजाब के गांव के हमारे अगामी दौरे में हमें वह पंजाब अवश्य देखने को मिलेगा, जिसे देखने की तमन्ना लिए हम पंजाब आए थे।



पंजाब की सड़कों पर के.रि.पु. बल की निगरानी
छाया- सतीश खन्ना

पंजाब में उपलब्धियाँ एवं हमारी शहादतें		एस.एल.आर.	28
1 जनवरी 1992 से 30 नवंबर, 1992 तक		ए.के. 47/50/74/96 राइफल	252
मुठभेड़ों की संख्या....307		राकेट लांचर	18
मारे गए आतंकवादियों की संख्या..550		कारबाइन/स्टेन गन	13
गिरफ्तार आतंकवादियों की संख्या..110		पिस्तौल/रिवाल्वर	171
के.रि.पु. बल के शहीद हुए कार्मिक 14		.303/.315 राइफल	69
के.रि.पु. बल के घायल कार्मिक....45		ए.एल.आर.	..4
आतंकवादी मुठभेड़ों में बरामद हथियार		बम	72
1 जनवरी, 1992 से 30 नवंबर, 1992 तक		विध्वंसक सामग्री 743.6 किलो +	
जी.पी.एम.जी.	14	186 स्टिक + 6 पैकेट	
एल.एम.जी.	2	माईन	12
		वायरलैस सैट	9

पूर्वी सेक्टर

सफलताएं उल्लेखनीय हैं ।

इस वर्ष पूर्वी सेक्टर ने परिचालन, प्रशासनिक तथा खेलों के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं । इस सेक्टर की टुकड़ी को वार्षिकोत्सव परेड की सर्वश्रेष्ठ टुकड़ी घोषित किया गया तथा उसे वर्ष 1991 के लिए महानिरीक्षक के बैनर के विजेता का खिताब प्रदान किया गया । इस सेक्टर की 66 बटालियन को पंजाब में परिचालन कार्यों के लिए वर्ष की सर्वश्रेष्ठ बटालियन घोषित किया गया तथा ट्राफी प्रदान की गई ।

पूर्वी सेक्टर को यह जिम्मेदारी सौंपी गई थी कि वह तीन बीघा क्षेत्र को सुचारू रूप से बंगला देश को सौंपने में मदद दे । इस स्थानांतरण में स्थानीय लोग समस्या पैदा न करें इस के लिए पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री के. आर. के. प्रसाद अपने अधिकारियों एवं जवानों के साथ यहां डेरा डाले हुए थे । उन के प्रयासों से यह कार्य शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ । इस में उन्हें अधिक बल का प्रयोग नहीं करना पड़ा । यहां तैनात 18 कम्पनियाँ अपने कार्य को सफलता के साथ अंजाम देने में सफल रहीं

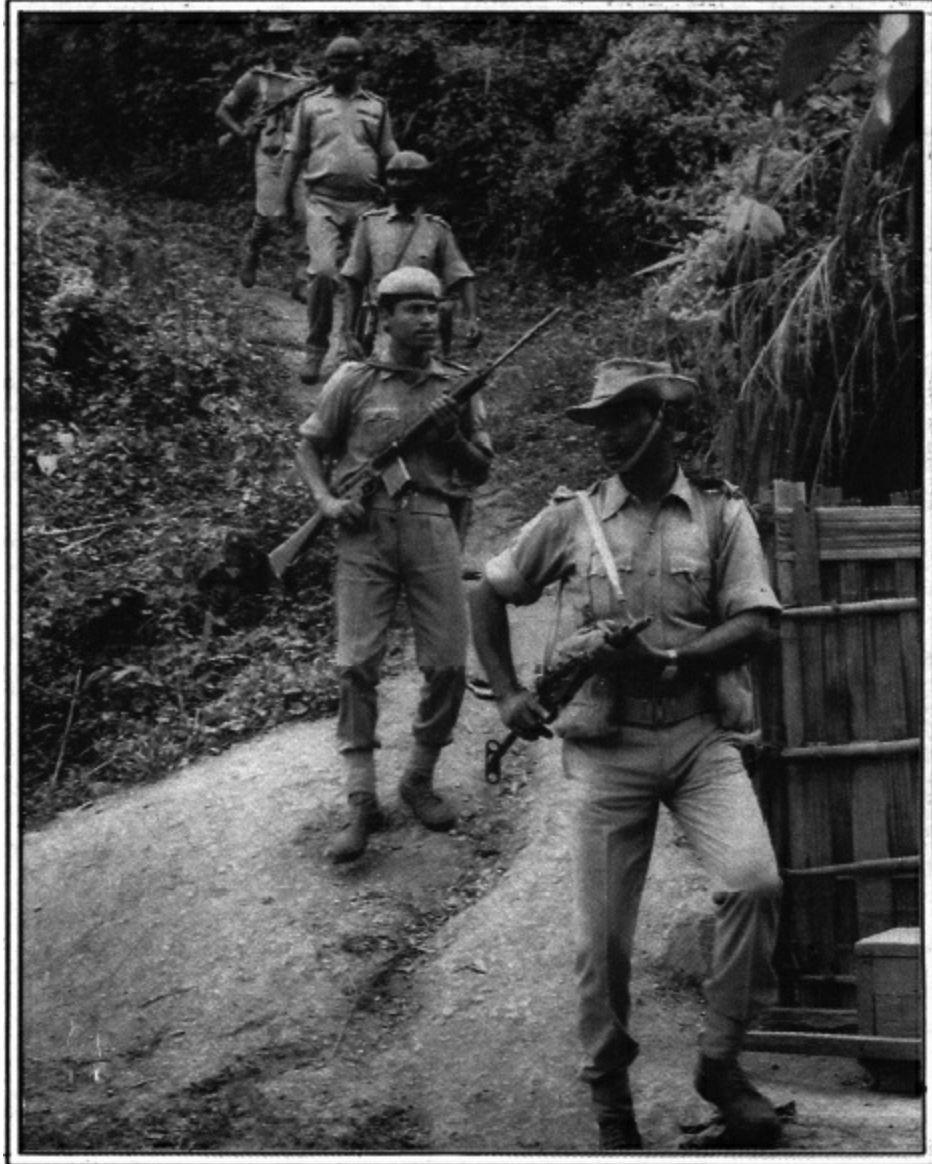
।
त्रिपुरा राज्य विद्रोही गतिविधियों से ग्रस्त है। अतः यहां जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए असम अगरतला राजमार्ग की सुरक्षा का दायित्व इस सेक्टर को सौंपा गया है। इस क्षेत्र में आठ हफ्ते का एक आपरेशन चलाया गया और ए. टी. टी. एफ. के तीन धड़ों को धराशायी कर दिया गया। इस आपरेशन से पैदा हुए दबाव के कारण 160 आतंकवादियों ने बल की पोस्ट पर मुख्यमंत्री के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

दार्जिलिंग में भी बल की गतिविधियों के कारण कई उत्पादियों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा भारी मात्रा में हथियार तथा असला बरामद किया गया।

इस सेक्टर की पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में तैनात बटालिनों ने आतंकवादियों को मार गिराने के साथ साथ भारी मात्रा में विध्वंसक सामग्री बरामद की। इस सेक्टर की 10 बटालियन को पंजाब में मंत्रियों, विधायकों तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस बटालियन के अधिकारियों तथा जवानों ने अपने प्राणों को हथेली पर रख कर इस जिम्मेदारी को निभाया है। इस वर्ष इस क्षेत्र के 7 कार्मिकों का शौर्यवीरता के पुलिस पदक तथा पांच को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किए गए।

खेल के क्षेत्र में भी जिम्नास्टिक तथा फुटबाल की टीमों को इंटर सेक्टर प्रतियोगिताओं का विजेता घोषित किया गया। जबकि हाकी, कबड्डी तथा वाटर पोलो में सेक्टर की टीमें दूसरे स्थान पर रहीं।

11 अगस्त, 92 को बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने कलकत्ता, साल्ट लेक में पूर्वी सेक्टर कार्यालय के नवीन भवन का उद्घाटन किया।



बिहार सेक्टर

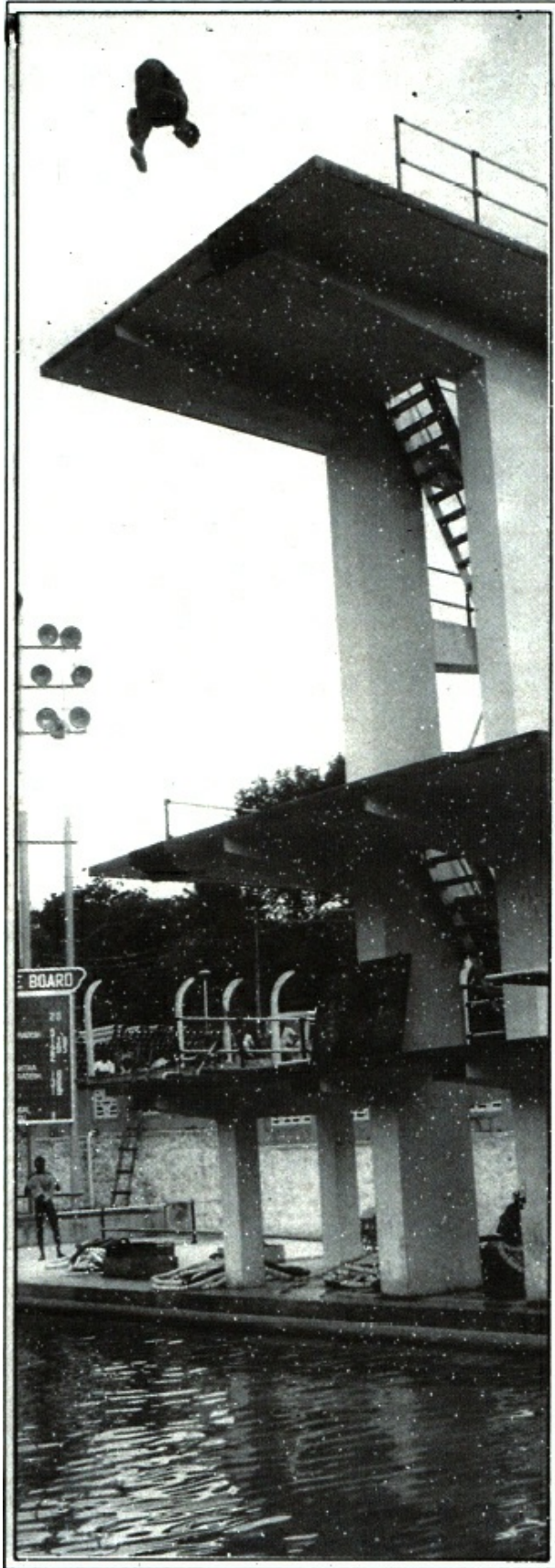
खेल कूद में विशेष उपलब्धियां

बिहार सेक्टर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का नवनिर्मित सेक्टर है। इसके अंतर्गत फिलहाल आठ बटालियनें हैं, अपने लघु स्वरूप के बावजूद खेलकूद के क्षेत्र में बिहार सेक्टर ने इस वर्ष विशेष उपलब्धियां हासिल की हैं। इस वर्ष हुयी विभिन्न

प्रातियोगिताओं में बिहार सेक्टर ने हाकी में प्रथम, कुश्ती में प्रथम, वालोबाल में तृतीय, बास्केटबाल में चतुर्थ, कबड्डी में आठवां तथा जिम्नास्टिक में पांचवा स्थान हासिल किया। इन प्रतियोगिताओं में प्रदर्शन के आधार पर बिहार सेक्टर के कई खिलाड़ियों को केंद्रीय टीम के लिए भी चुना गया।

जमशेदपुर में इस सेक्टर ने 105 एकड़ भूमि बल की युनिटों के लिए अधिगृहित की है। इसी प्रकार मुजफ्फरपुर में भी एक ग्रुप केंद्र के लिए भूमि अधिगृहित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

परिचालन के क्षेत्र में इस सेक्टर की आठ में से छः युनिटें पंजाब तथा चंडीगढ़ में तैनात हैं, जहां उन्होंने आतंकवादियों के विरूद्ध संघर्ष में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। इस सेक्टर की एक बटालियन त्रिपुरा में तैनात है। इन युनिटों ने आतंकवादियों के विरूद्ध संघर्ष में उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की हैं। इन युनिटों के जवानों के साथ हुयी आतंकवादी मुठभेड़ों में 60 आतंकवादी मारे गए तथा 69 को गिरफ्तार किया गया, जबकि चार आतंकवादियों ने बल के इन जवानों के समक्ष आत्मसमर्पण किया। मारे गए आतंकवादियों में 12 आतंकवादी अत्यधिक खूखार आतंकवादियों की श्रेणी में शामिल थे।



इन मुठभेड़ों में इस सेक्टर के जवानों ने 31 ए. के 47 राइफलें, 12 ए. के. 56 राइफलें, एक ए. के 74 राइफल, पांच एस. एल. आर., दस 303 राइफलें, दो कारबाईन, तीन राकेट लांचर तथा 13 हैंड ग्रेनेड सहित भारी मात्रा में इन हथियारों के कारतूस व मैगजीन एवं अन्य विध्वंसक असला भी बरामद किया।

मगर इन सब उपलब्धियों के एवज में इस क्षेत्र के तीन वीर जवानों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

विचार गंगा

भाग्य कुछ नहीं है। भाग्य होता ही नहीं है। भाग्य तो सदा असत है। भाग्य कभी कुछ नहीं करता। यह तो केवल कल्पना की बात है कि भाग्य कुछ करता है।

—योगवशिष्ठ

सदाचार से आयु और कीर्ति में वृद्धि होती है।

—संकलित

श्रद्धा से ही सत्य मिलता है।

—यजुर्वेद

के.रि.पु. बल में हिन्दी

लेख- एस. एन. सिंह/हिन्दी अधिकारी

आज पूरा देश भारत छोड़ो आन्दोलन की स्वर्ण जयन्ती मना रहा है। अच्छा होता अगर इसकी जगह अंग्रेजी छोड़ो आन्दोलन मनाया जाता। राष्ट्रभाषा व राजभाषा प्रेमियों ने इसकी पहल भी की और इलाहाबाद में “अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन” बुलाया भी गया। जिसमें श्रीमती महादेवी वर्मा ने अध्यक्षीय भाषण में कहा था – “राष्ट्र को जैसे अपनी भूमि, अपना ध्वज, अपना आदर्श वाक्य चाहिए, वैसे ही उसके लिए अपनी वाणी की आवश्यकता होती है। वाणी के बिना गूंगे राष्ट्र की प्रतिभा, मौलिक विचार कुंठित हो जाते हैं। अन्य देश की भाषा में उसके जीवन मूल्यों को नहीं बनाए रखा जा सकता और न उसका सांस्कृतिक उत्थान संभव है।”

भाषा शासन और जनता के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है। सरकार की नीतियों को जनता तक पहुंचाने का यह एक सशक्त माध्यम है। देश में प्रजातंत्र की जड़ें जितनी बैठती जा रही हैं, साधारण जनता में प्रशासन के प्रति आस्था और विश्वास

उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि प्रशासन का काम-काज जनता की भाषा में हो। के. रि. पु. का संबंध भी जनता से है और सर्वाधिक जनता की भाषा हिन्दी है, यह इस बात से सिद्ध है कि देश के किसी भी भाग में जाएं तो अपनी बात वहां के निवासियों तक पहुंचाने व उनकी बात समझने में हिन्दी एक पुल का काम करती है आज ही नहीं हिन्दी प्राचीन काल से ही सर्वाधिक प्रचलित भाषा रही है।

जब 8 वीं शताब्दी में संस्कृत जनभाषा नहीं रह गई तथा 19 वीं शताब्दी से पूर्व अंग्रेजी से कुछ लेना नहीं था, अतः उस समय भारत में कोई तो ऐसी भाषा थी जो कश्मीर से कन्याकुमारी तथा रामेश्वरम से बद्रीनाथ तक पूरे देश को एक राजनीतिक व सांस्कृतिक सूत्र में बांधे हुए थी, वह भाषा केवल हिन्दी ही थी। इसलिए सदैव ही हमारे भारतीय मनीषी हिन्दी को सारे भारत की काम-काज की एक भाषा बनाने पर जोर देते रहे हैं। ताकि देश में एकता संपन्न हो सके।

यदि के. रि. पु. के संदर्भ में इस राजभाषा विकास का सिंहावलोकन करें तो पाएंगे कि इस शताब्दी के 7 वें दशक में बल में सरकारी काम-काज में टिप्पण-आलेखन या हिन्दी टाइपराइटर का बिल्कुल भी प्रचलन नहीं था। 1975 के वर्ष में इस और पहली शुरुआत उस समय हुई जब तत्कालीन उप निदेशक (प्रशासन) श्री दयाशंकर भटनागर की पहल पर 26 देवनागरी की टाइपराइटरें एक साथ खरीदी गईं। महानिदेशालय में पहला हिन्दी अनुवादक का पद भी इसी वर्ष बना। जिनका श्रेय तत्कालीन उप निदेशक (प्रशा.) श्री रघुनाथ सिंह को जाता है। उन्हीं की पहल पर सेक्टर कार्यालयों में तथा बाद में ग्रुप केन्द्रों में भी पद सृजित किये गये। आज बल में करीब 30 निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक) एक सूबेदार मेजर (वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक), तथा एक हिन्दी अधिकारी तथा 28 हिन्दी टाइपिस्टों के पद बन चुके हैं। आगे भी इनकी संख्या में वृद्धि के दो प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन हैं। इसके साथ-साथ अन्य आधारभूत सुविधाएं भी बल में जुटाई गई हैं।

आज हिन्दी बल में पल्लवित तथा पुष्पित होकर एक ऐसे विशाल वट वृक्ष का रूप धारण करती जा रही है कि बल का कोई क्षेत्र/पहलू इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है। बल के सभी 8 प्रशिक्षण संस्थानों में, सिवाय आंतरिक सुरक्षा अकादमी के, हिन्दी में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। आंतरिक सुरक्षा अकादमी में अभी कुछ विषयों में प्रशिक्षण मिला जुला हिन्दी-अंग्रेजी (दोनों भाषाओं) में दिया जा रहा है। सभी प्रशिक्षण साहित्य व 21 मैनुअल का हिन्दी अनुवाद हो चुका है। पिछले दस वर्ष के सर्कुलर आर्डर व स्टैंडिंग आर्डर का हिन्दी अनुवाद कर एक पुस्तिका के रूप में संकलित किया जा चुका है। बल के काम-काज में सहायतार्थ “राजभाषा निर्देशिका” निकाली गई है। सभी बोर्ड, रबड़ स्टाम्प, नामपट्ट, सूचना पट्ट, गाड़ियों पर नाम, स्टेशनरी की मढ़ें द्विभाषी बन चुकी हैं।

बल में राजभाषा के प्रचार-प्रसार का जहां तक प्रश्न है “हिन्दी प्रोत्साहन योजना” ग्रुप केन्द्र व सैक्टर स्तर पर लागू हो चुकी है तथा हजारों व्यक्ति इसमें भाग लेकर हिन्दी के चहुंमुखी विकास में योगदान दे रहे हैं। डिक्टेशन योजना का भी प्रतिवर्ष

विस्तार हो रहा है। 1990-1991 में इस योजना के तहत 85 वीं बटा. के सहायक कमांडेन्ट श्री एस. पी. बडौला तथा 1991-92 में बल में पहला पुरस्कार श्री जगजीत सिंह, कमांडेन्ट 71 वीं बटा. को दिया गया तथा “ग” क्षेत्र के निवासियों में श्री जे. एम. एलवर्ट को पहला इनाम अर्थात् सभी को पांच-पांच सौ रूपये के इनाम दिये गये थे। इस वर्ष भी इस योजना का आयोजन सेक्टर स्तर पर किया गया है तथा कई अधिकारियों ने योजना के विकास में अपना सहयोग दिया है। इसी प्रकार पल्लीपुरम (त्रिवेन्द्रम) स्थित हमारे ग्रुप केन्द्र ने लगातार तीन वर्ष तक राजभाषा वैजयन्ती शील्ड प्राप्त की तथा तत्कालीन अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री महेन्द्र प्रसाद को महानिदेशक का पदक भी प्रदान किया गया। समय समय पर केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की प्रतियोगिताओं में सर्वश्री कथूरिया, ओ. पी. भट्टा, महेन्द्र, अपर पुलिस उप-महानिरीक्षकों तथा श्री बी. एल. तकियार, कमांडेन्ट ने अधिकारी पुरस्कार व राजभाषा शील्ड प्राप्त की हैं।

उपर्युक्त उपलब्धियों के फलस्वरूप 1991 के लिए गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड भी के. रि. पु. बल को दी जा रही है, जो इस बात की प्रतीक है बल में दिन प्रतिदिन हिन्दी अपनाने की प्रवृत्ति लोगों में घर करती जा रही है। यहां यह भी उल्लेख करना समीचीन होगा कि बल ने संपूर्ण मंत्रालयों, विभागों व कार्यालयों से एक कदम आगे बढ़कर उल्लेखनीय व्यवस्था भी की है, बल में होने वाली सहायक उप निरीक्षक (मं) की चयन परीक्षा से अंग्रेजी की अनिवार्यता को पूरी तरह से हटा दिया है। अन्य परीक्षाओं से भी अंग्रेजी की अनिवार्यता खत्म करने की तरफ हम कोशिश कर हैं।

इस वर्ष 14 सितम्बर को बड़े स्तर पर हिन्दी टाइपिंग, टिप्पण आलेखन, व्यवहार एवं डिक्टेशन प्रतियोगिता आदि का आयोजन भी किया गया जिसमें 300 से 400 कर्मचारियों को विभिन्न नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

बल के अधिकांश कार्यालयों को राजभाषा नियम 10 (4) के अंतर्गत हिन्दी में करने के लिए घोषित किया जा चुका है तथा कुछ कार्यालयों की शाखाओं को भी नियम 8 (4) के अंतर्गत संपूर्ण कार्य हिन्दी में काम करने के लिए घोषित किया गया है। यही कारण है कि अब सभी यूनिटें, फोर्स आर्डर, सामान्य आदेश, सर्विस रिकार्ड, साविधि भविष्य निधि, वेतन भत्ता, बैठकों की कार्यसूची व कार्यवृत्त, आदि या तो हिन्दी में या द्विभाषा में जारी कर रही हैं। यह कार्य आगे और बढ़े, अतः हम चाहते हैं कि आप आगे आएँ, हिन्दी में हस्ताक्षर करने से शुरू करें, दूसरों का उत्साह बढ़ाएं, प्रेरणा के स्रोत बनें। फिर भी आज सभी का ध्यान निम्नलिखित की ओर ध्यान दिलाना चाहूंगा कि –

(क) कार्यालय से जारी होने वाले सभी सकुर्लर, आदेश, ज्ञापन, सभी प्रिंटिंग व साइक्लोस्टाइल सामग्री द्विभाषी-अर्थात् हिन्दी और अंग्रेजी में होने चाहिए। यह सभी द्विभाषी जारी होते हैं यह देखने की जिम्मेदारी उन पर हस्ताक्षर करने वालों की है।

(ख) कहीं से भी प्राप्त हिन्दी पत्र तथा हिन्दी में हस्ताक्षरित पत्र का उत्तर हिन्दी में दिया जाना चाहिए।

- (ग) हिन्दी को राजभाषा बनाना भाषा का प्रश्न नहीं, आपेतु देशाभिमान का प्रश्न है।
- (घ) हिन्दी में अभिव्यक्ति सरल है, शब्द सामर्थ्य प्रचुर है, भाषा सौंदर्य अनन्य है, मशीनी सुविधा उपलब्ध है, हिन्दी प्रयोग की पहल तो करें।
- (च) हिन्दी केवल हिन्दी भाषियों की ही नहीं रही व संपूर्ण भारतीय जनता की अभिव्यक्ति बन चुकी है।
- (छ) भारत में अनेक उन्नत और साहित्य समृद्ध भाषाएं हैं किन्तु हिन्दी सबसे अधिक क्षेत्रों सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है।
- (ज) संसार की सब भाषाओं में चीनी और अंग्रेजी के बाद हिन्दी ही विशाल जन समूह की भाषा है।

महात्मागांधी द्वारा गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर को लिखे गये एक पत्र के कुछ अंश उल्लिखित करते हुए आप से हिन्दी में आजादी से काम करने का एक आश्वासन लेना चाहूंगा।

“झूठे घमंड के वश होकर या कही जाने वाली सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए मैं अपने देश के भाई-बहनों पर अंग्रेजी का नाहक बोझ डालने से इंकार करता हूँ।”

—हिन्दी नव जीवन

के.रि.पु. बल में खेल कूद

लेख— ए. एन. शर्मा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में खेलकूद दैनिक दिनचर्या तथा प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण अंग है। के. रि. पु. बल में खेलों तथा खिलाड़ियों को और अधिक प्रोत्साहन देने के लिए भरपूर प्रयास किए जा रहे हैं। बल में खिलाड़ियों की अच्छे पदों पर भर्ती की जाती है, तथा उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर या अखिल भारतीय पुलिस खेलों में पदक हासिल करने पर समय पूर्व पदोन्नति दी जाती है। बल में वर्ष 1991 खिलाड़ियों को आफ सीजन (40 दिन) तथा प्रशिक्षण (80 दिन) के दिनों में जाने वाली खुराक राशि में बढ़ोत्तरी की गई है। यह राशि अब अतिरिक्त रूप में क्रमशः 10 से 15 रूपये तथा 15 से 20 रूपए प्रति व्यक्ति प्रति दिन कर दी गई है। जिन खिलाड़ियों का चयन राष्ट्रीय टीम के लिए किया जाता है, उन्हें 300 दिन तक 20 रूपए प्रतिदिन दिये जाते हैं। उनके जीवन स्तर में और अधिक सुधार लाने के लिए पक्के आवासों की व्यवस्था की गई है। इन सब सुविधाओं के बदले हमारे खिलाड़ी न केवल अखिल भारतीय पुलिस खेलों में ही, अपितु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रतिभा के कमाल दिखा रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्पर्द्धाओं में भाग लेने वाली भारतीय टीमों में बल का योगदान

खासा बड़ा होता है। हमारे खिलाड़ियों ने देश और विशेषकर बल को गारेमा में चार चांद लगाये हैं। हमारे कई खिलाड़ियों के नाम राष्ट्रीय रिकार्ड दर्ज हैं।

एथलेटिक्स के क्षेत्र में के. रि. पु. बल पिछले 19 सालों से लगातार चैम्पियनशिप जीतता रहा है, केवल 1978, 1990 एवं 1991 तथा 1992 में बल यह सम्मान अर्जित करने से वंचित रहा। ओलम्पियन तथा अर्जुन एवार्ड विजेता श्री गुरबचन सिंह रंधावा देश के मूर्धन्य धावकों में से एक हैं।

1969 में टोक्यो ओलंपिक में स्थापित किया गया उनका 110 मीटर बाधा दौड़ का रिकार्ड अभी तक स्थिर है। अर्जुन एवार्ड विजेता हरीचंद द्वारा 1976 में मोंट्रियल ओलंपिक में स्थापित किये गये, 10,000 मीटर के रिकार्ड को अभी तक याद किया जाता है। डिप्टी कमांडेंट रघुबीर सिंह बल हैमर थ्रो में राष्ट्रीय रिकार्ड होल्डर हैं तथा इस क्षेत्र में वह देश का प्रतिनिधित्व कई अंतर्राष्ट्रीय स्पर्द्धाओं में कर चुके हैं। वह अक्टूबर 1989 में इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में चौथे दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग खेलों में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं, इन प्रतियोगिताओं में उन्होंने हैमर थ्रो में एक नया रिकार्ड स्थापित करते हुए स्वर्ण पदक जीता। उन्हें महाराजा रणजीत सिंह एवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। बल के पास सहायक कमांडेंट पी. के डोगरा, समशुद्दीन, गुरमुखसिंह, इन्स्पेक्टर ओमप्रकाश, के. शियोघनन तथा सब इन्स्पेक्टर करतारसिंह जैसे कई अन्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर के एथलीट हैं।



के. रि. पु. बल के पास एक महिला एथलीट टीम भी है जो कि अखिल भारतीय पुलिस खेलों तथा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

जिम्नास्टिक के क्षेत्र में सहायक कमांडेंट एन. बी. भोंसले, बेंगकाक में हुए एशियाई खेलों तथा 1978 में हुए कामन वेल्थ खेलों में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। सहायक कमांडेंट बलराम शील 1980 में मास्को ओलंपिक तथा 1982 में दिल्ली एशियाई खेलों व 1986 के सियोल एशियाई खेलों में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। बलराम शील अपने समय के सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट रहे हैं।

बल के जूडोका सब इंस्पेक्टर सिद्धार्थ सेठ तथा तिलक थापा एशियन जूडो चैम्पियनशिप के लिए भारतीय टीम के चयन हेतु आयोजित किए गए प्रशिक्षण कैंम्प में भाग ले चुके हैं। सब इंस्पेक्टर सिद्धार्थ सेठ नवम्बर 1991 में जापान में हुई एशियन जूडो चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। के. रि. पु. बल को इस बात का गर्व है कि उसने देश को इन्सपेक्टर राधेश्याम, इंस्पेक्टर रामनिवास तथा बन्नूसिंह जैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के जूडोका दिए हैं। इंस्पेक्टर राधेश्याम तथा सब इन्सपेक्टर बन्नूसिंह 1986 में सियोल में हुए 10 वें एशियाई खेलों में भारत का

प्रांतीयोन्मूलक कर चुके हैं। सब इन्स्पेक्टर बन्नासिंह ने इस प्रतियोगिता में ओपन वेट श्रेणी में कांस्य पदक जीता था। इन्स्पेक्टर रामनिवास 1990 ने फिर इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

हाकी में सब इन्स्पेक्टर प्रमोद कुमार 1979 में मास्को ओलंपिक में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। उप कमांडेंट एस. एस. मान इंदिरा गांधी अन्तरराष्ट्रीय स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता में भारतीय टीम के कोच थे।

के. रि. पु. बल की पहलवानों की टीम को तीन रूस्तम-ए-हिंद तथा एक हिन्द केसरी पैदा करने का गर्व हासिल है। द्वितीय कमान अधिकारी सुखवंतसिंह, उप कमांडेंट ईश्वरसिंह, उपकमांडेंट ओ. पी. यादव तथा सुरेशचन्द्र कई राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धाओं में भाग ले चुके हैं। श्री ईश्वरसिंह 1979 के राष्ट्रमंडल, खेलों में भाग लेकर कांस्य पदक जीत चुके हैं।

के. रि. पु. बल के निशानेबाज कई राष्ट्रीय स्पर्धाओं में अपनी प्रतिभा का कमाल दिखा चुके हैं। अब कमांडेंट पद पर पदोन्नत हो चुके टी. एस. ढिल्लन एक प्रमुख निशानेबाज हैं, जो कि 1989 में टोरंटो (इटली) में हुए वर्ल्ड पुलिस खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वह पहले एशियाई नागरिक हैं, जिन्हें कि इन्टरनेशनल शूटिंग कोचेस एसोसिएशन की आजीवन सदस्यता से सम्मानित किया गया है। उन्हें महाराजा रंजीतसिंह एवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।

तैराकी में भी के. रि. पु. बल ने कई राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को पैदा किया है। सहायक कमांडेंट खजानसिंह देश के चोटी के तैराकों में से एक हैं। वह कई राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्पर्धाओं में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। सिओल में हुए 10 वें एशियाई खेलों में वह 200 मीटर बटरफ्लाई प्रतिस्पर्धा में रजत पदक जीत चुके हैं। यह पदक किसी भारतीय ने 35 वर्षों के अन्तराल में जीता था। आज की तारीख तक उनके हिस्से में आठ अविजित राष्ट्रीय रिकार्ड हैं। उन्हें 1984 में अर्जन एवार्ड तथा इन्दिरा गांधी एवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। खजानसिंह के अतिरिक्त टी. जे. जेकब, पी. बी. पिल्लई, इन्स्पेक्टर एस. राधाकृष्णन, इन्स्पेक्टर सोमशेखरन, इन्स्पेक्टर बी. एस. रविशेखरन, इन्स्पेक्टर प्रेमजीतसिंह तथा इन्स्पेक्टर मोहिंदर कुमार एक या इससे अधिक बार देश का प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर की तैराकी प्रतियोगिताओं में कर चुके हैं। तथा उनके नाम पर कई रिकार्ड दर्ज हैं।



बास्केट बाल में के. रि. पु. बल को एम. बी. सिंह, पी. पी. सिंह, वी. एन. कुट्टी तथा जगतजीत सिंह जैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी पैदा करने का गौरव हासिल है। इन्स्पेक्टर जसमिंदर सिंह जोकि अभी भी केन्द्रीय टीम में शामिल है, 1987 में हांगकांग में एशियन बास्केट बाल चैम्पियनशिप, 1987 तथा 1991 में कलकत्ता में हुए एस. ए. एफ. खेलों में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। सहायक कमांडेंट के. एस. चीमा 1987 के एस. ए. एफ. खेलों में भारतीय टीम के कोच थे।

अन्य कई खेलों में भी के. रि. पु. बल के खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

वर्ष 1992 में के. रि. पु. बल की खेल कूद के क्षेत्र में उपलब्धियां

वर्ष 1992 के दौरान खेलकूद के क्षेत्र में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की मुख्य उपलब्धियां इस प्रकार रहीं —

अखिल भारतीय पुलिस खेल-1992

23 फरवरी से 1 मार्च, 92 तक भोपाल में हुए अखिल भारतीय पुलिस खेलों में बल के खिलाड़ियों ने कई पदक जीते। इन खेलों में बल के खिलाड़ियों की मुख्य उपलब्धियां इस प्रकार रहीं—

1. **एथलेटिक्स (पुरुष)** – पुरुषों की एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में बल के धावकों ने दो स्वर्ण, छः रजत तथा सात कांस्य पदक प्राप्त कर तीसरा स्थान हासिल किया।
2. **एथलेटिक्स (महिला)** – महिलाओं की एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में बल की धाविकाओं ने दो कांस्य पदक जीते।
3. **बास्केटबाल**– बास्केटबाल में बल की टीम दूसरे स्थान पर रही।
4. **कबड्डी**– कबड्डी में बल की टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

5. **वालीबाल**– वालीबाल प्रांतीयोंगेता में भी बल की टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।
6. **जूडो**– तीन रजत तथा चार कांस्य पदक हासिल कर बल की टीम ने तीसरा स्थान हासिल किया।
7. **कुश्ती** – एक रजत तथा सात कांस्य पदकों के साथ बल की टीम तीसरे स्थान पर रही।
8. **जिमनास्टिक** – एक स्वर्ण, एक रजत तथा एक कांस्य पदक प्राप्त कर बल की टीम चौथे स्थान पर रही, जबकि इंस्पेक्टर विजय कुमार को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट घोषित किया गया।

अखिल भारतीय पुलिस तैराकी तथा क्रास कंट्री दौड़ प्रतियोगिता

41 वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी तथा क्रास कंट्री दौड़ प्रतियोगिता 16 से 20 अगस्त, 92 तक नई दिल्ली में हुयी। इन प्रतियोगिताओं में बल की टीम ने छः स्वर्ण, आठ रजत तथा आठ कांस्य पदक जीत कर प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया। क्रास कंट्री प्रतियोगिता में भी बल टीम को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ, जब कि नायक रामकरन दौड़ में दूसरे स्थान पर रहे।

अखिल भारतीय पुलिस वेस्टजोन टूर्नामेंट-92

अखिल भारतीय पुलिस वेस्टजोन टूर्नामेंट-92, 6 से 14 नवंबर, 92 तक मध्य प्रदेश ग्वालियर में सम्पन्न हुए। इन प्रतियोगिताओं में शामिल बल की बास्केटबाल, फुटबाल, जिम्नास्टिक, जूडो, कबड्डी, वालीबाल तथा कुश्ती टीम का चयन 1993 के अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भाग लेने के लिए कर लिया गया।

पुलिस भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट-92

29 अक्टूबर से 3 नवंबर 92 तक शिमला में अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुयीं, इन प्रतियोगिताओं की विभिन्न स्पर्धाओं में बल की टीम का प्रदर्शन इस प्रकार रहा।

शूटिंग – शूटिंग प्रतियोगिताओं में बल की टीम को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। जबकि व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं के शूटिंग मुकाबले में एक स्वर्ण पदक, एक कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

मोटर परिवहन प्रतियोगिता – इन प्रतियोगिताओं में बल की टीम को प्रथम स्थान हासिल हुआ। नायक ड्राइवर बुधराम ने मोटर साईकिल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता, जबकि नायक कर्मराज सिंह को भारी वाहन प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्रदान किया गया।

कम्प्यूटर अवेयरनेस काम्पीटीशन – इन प्रतियोगिताओं में बल की टीम दूसरे स्थान पर रही तथा उसे रजत पदक मिला।

वायरलेस प्रांतीयोगेता – बल की टीम स्वर्ण पदक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रही ।

फर्स्टएड – बल की टीम को टीम स्पर्द्धाओं में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ ।

क्रिष्टोग्राफी – व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं में बल की टीम को तीसरा स्थान हासिल हुआ ।

शूटिंग

अजमेर में 20 से 24 जनवरी, 92 तक हुयी सी. एल. बी. स्मारक राइफल शूटिंग प्रतियोगिताओं में बल की टीम ने ओवरआल चैंपियनशिप जीत ली ।

बास्केटबाल

18 से 25 जनवरी, 92 तक त्रिवेंद्रम में हुयी राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल दिल्ली की टीम में बल के पांच खिलाड़ी शामिल थे । इर्न प्रतियोगिताओं में दिल्ली की टीम ने कांस्य पदक जीता । दिल्ली की टीम के कोच भी बल के सहायक कमांडेट श्री के. एस. चीमा थे।

कुश्ती

कलकत्ता में 17 से 19 जनवरी 92 तक हुयी पश्चिम बंगाल कुश्ती प्रतियोगिताओं में बल की टीम ने 10 स्वर्ण, पांच रजत तथा पांच कांस्य पदक प्राप्त कर चैंपियनशिप जीत ली।

ट्राइथलोन

15, 16 फरवरी, 92 को मद्रास में हुयी नेशनल ट्राइथलोन चैंपियनशिप प्रतियोगिताओं में बल के सब इंस्पेक्टर राजाराम ने जूनियर प्रतियोगिताओं में भाग लेकर एक स्वर्ण पदक जीता।

हाकी

बल की हाकी टीम ने रेणु कोट में हुए अखिल भारतीय जालिम सिंह हाकी टूर्नामेंट-92, जम्मू में हुए अखिल भारतीय इंदिरा गांधी स्वर्ण कप हाकी टूर्नामेंट-92 तथा जबलपुर में हुए अखिल भारतीय नगर निगम स्वर्ण कप । हाकी टूर्नामेंट-92 में भाग लिया।



एक इन्टर सेक्टर बालीवाल प्रतियोगिता में संघर्षरत बल की दो टीमों।

तैराकी

कलकत्ता में हुयी दक्षिण एशियाई तैराकी प्रतियोगिताओं में बल के इंसपेक्टर प्रेमजीत सिंह तथा सब इंसपेक्टर राजाराम ने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया।

एथलेटिक्स

दिल्ली में होने वाली चौथी एशियन जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए सब इंसपेक्टर प्रेमजीत, राजिंदर सिंह तथा रामपोस का चयन किया गया।

आगामी एशियाई खेलों के लिए भारतीय टीम के प्रशिक्षकों के लिए बल के डिप्टी कमांडेंट हरीचंद तथा आर. एस. बल का चयन किया गया है।

जूडो

सब इंसपेक्टर तिलक थापा ने चौथी एशियाई जूडो प्रतियोगिता में भाग लेकर एक

स्वर्ण पदक जीता। इसके आतिरेक्त उनका चयन जापान में होने वाली दो जूडो प्रतियोगिताओं के लिए भी किया गया।

सब इंस्पेक्टर सिद्धार्थ सेठ का चयन भी जापान में होने वाली जूडो प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए किया गया।

एक अनूठा राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय

के. एन. गुप्ता, सहायक निदेशक (समन्वय)/केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो

केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जगत के नाना प्रकार के वैविध्यपूर्ण प्रदर्शों वाला एक बेजोड़ राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय जनता के लिए खोल दिया गया है। यह पुरातन काल से आधुनिक युग की अनेक रोचक और विचारोत्तेजक वस्तुओं से परिपूर्ण है जिनका सम्बन्ध पुलिस, अपराध और अपराधियों से रहा है। यह अपराधियों द्वारा किये जाने वाले अपराधों के तौर तरीकों अन्वेषण में वैज्ञानिक सहायता, अपराध की जांच तथा केन्द्रीय और राज्य संबद्ध विज्ञान प्रयोगशालाएं/केन्द्रीय एवं राज्य अगुली छाप ब्यूरो द्वारा अपनाये जाने वाली आधुनिकतम तकनीकों पर भी प्रकाश डालता है। ये प्रदर्श देश और विदेश के विभिन्न राज्यों और केन्द्रीय पुलिस संगठनों से प्राप्त किये गए हैं।

श्री विजय करण, निदेशक केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने 1 जनवरी 1992 को राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय का औपचारिक उद्घाटन किया था। वास्तव में पहले इसे केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो संग्रहालय कहा जाता था। वर्ष 1984 में आयोजित पुलिस महानिदेशकों/पुलिस महानिरीक्षकों के सम्मेलन ने इस संग्रहालय को राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय बनाने का औपचारिक निर्णय लिया। इसे पुनर्जीवित करने और नवीनता प्रदान करने के लिए पूरे भारत वर्ष और विदेशों से विभिन्न प्रदर्श प्राप्त किए गये। यह संग्रहालय केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के ब्लॉक न. 4 सी. जी. ओ. कम्पलेक्स, लोदी रोड़, नई दिल्ली में स्थापित है।

यह राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न प्रदर्शों से भरा हुआ है। जो पुलिस अपराध और अपराधियों से सम्बन्धित हैं पुरातनकाल की बन्दूकें और पिस्तौल से लेकर जाली और असली मुद्रा नोट, खिलौने जो कि वर्जित वस्तुओं की तस्करी के काम में लाये गये हैं, लैसर लैंप, अतिविशिष्ट व्यक्ति के नकली व असली हस्ताक्षर, बहुमूल्य कलात्मक नमूने, अल्ट्रा वायलट लैंप जिससे नकली दस्तखतों बैंकों पर जैसे कटिंग और मिटाये हुए निशानों को दर्शा सकते हैं या उभार सकते हैं। इसके अलावा तस्वीरें, सी.एफ.पी.बी. द्वारा अपनाये गये आधुनिक तरीकों के नमूने जिन्हें अपराधों की रोकथाम के लिए अपनाया गया है।

संग्रहालय कुछ बहुत उप-योगी/उपर्युक्त प्रश्नों के जवाब देने की कोशिश भी

करता है। अपराधी कौन है और कैसे उत्पन्न हुआ ? इन अपराधों को कैसे रोका जा सकता है ? कोई भी बुरा पैदा नहीं हुआ। अपराधी कभी पैदा नहीं होता वह तो बनाये जाते हैं। मनुष्य कुदरत से ही कानून मानने वाला है और शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है और अचानक वह उग्रवादी, आतंकवादी, कार्तिल और लुटेरा बन जाता है। आजकल जेल में पड़े अधिकतर बुद्धिमान जवान लड़के और लड़कियां एक श्रेष्ठ डॉक्टर, इंजीनियर, नर्स और अध्यापक बन सकते थे और अपराध से वर्जित रह सकते थे, जिनको अपराध करने के लिए मजबूर किया गया है। अपराधिक विज्ञान ने आजकल एक विज्ञान का रूप ले लिया है। अगर पुलिस चतुर हो गई है तो अपराधी उससे भी अधिक चालाक हो गये हैं। उनके पास वो आधुनिक हथियार हैं जो एक पुलिस कांस्टेबल के पास हैं। उनके पास अधिक बेहतरीन साजसमान है और अच्छे पैसे हैं। हमें अपराधियों के आचरण और व्यवहार के नमूनों का अध्ययन इस संग्रहालय से मिल जाता है।

राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय विभिन्न विषयों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रदर्श्यों से जुड़ा हुआ है।

इस में विभिन्न राज्यों एवं राष्ट्रों के पुलिस बलों के पुरातनकाल से लेकर आज तक के बैज, तमगे, वर्दियां तथा हथियार आदि प्रदर्शित हैं।

इसी प्रकार अपराधों के अन्वेषण के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले प्राचीनतम एवं आधुनिकतम तौरतरीकों की जानकारी भी यहां उपलब्ध है।

अपराधों के वर्ग में अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों के हस्ताक्षर एवं अपराधियों द्वारा किए गए इनके जाली हस्ताक्षरों के नमूने, जाली नोट, सिक्के तथा ऐसे ही अन्य वस्तुएं प्रदर्शित हैं।

पुरातनकालीन वस्तुएं एवं मूर्तियां भी यहां प्रदर्शित हैं। इन में ईसा की 11-12 वीं शताब्दी की सफेद संगमरमर की मूर्ति से लेकर पुराकालीन महत्त्व की पीतल की मूर्तियां प्रदर्शित हैं, जिन्हें कि तस्करों से बरामद किया गया था।

केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो का यह राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय है। संसार में यह अपने आप में एक अनूठा संग्रहालय है। उम्मीद की जानी चाहिए कि यह संग्रहालय जनता को सोचने पर मजबूर करेगा कि पुलिस वाले वर्दीधारी दैत्य नहीं, बल्कि एक भाई, चाचा और दोस्त भी हैं। आशा है यह संग्रहालय पुलिस और जनता के बीच की दूरी को पाट कर एक अपराधमुक्त समाज बनाने की प्रेरणा का संचार करेगा।

संक्षिप्त समाचार

के. रि. पु. बल ने 55 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह नवंबर, 92 में 55 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान आतंकवादियों के साथ हुयी 45 मुठभेड़ों में कुल 63 आतंकवादी मारे गए। इन में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

मारे गए आतंकवादियों में भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान के सांगा गुट का एरिया कमांडर मलकैत सिंह उर्फ मीता बाबू, खालिस्तान कमांडों फोर्स का रंधीर सिंह उर्फ फौजी, सिरव स्टूडेंट फेडरेशन का ले. जन. सुखचरण सिंह उर्फ चीना उर्फ हरबंस सिंह दुखिया एवं बिटूट गुट का एरिया कमांडर दीदार सिंह उर्फ छाया, खालिस्तान लिबरेशन फ्रंट का एरिया कमांडर कुलदीप सिंह उर्फ काला, अनूप सिंह उर्फ काला तथा ले. जन. कारजसिंह, खालिस्तान लिबरेशन फ्रंट का स्वयंभू ले. जन. राजेंद्र सिंह उर्फ डा. अमलोक सिंह उर्फ बोबी उर्फ पी. सी. माथुर, एरिया कमांडर राजबीर सिंह उर्फ राजू तथा जसवंत सिंह उर्फ साहिब सिंह उर्फ चापानी, खालिस्तान कमांडो फोर्स का एरिया कमांडर काका सिंह, बब्बर खालसा का स्वयंभू एरिया कमांडर निशान सिंह, स्वयंभू ले. जन. जसवंत सिंह उर्फ जज तथा भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान के सांगा गुट का स्वयंभू ले. जन. ओंकार सिंह शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 110 घातक हथियार तथा 9432 सजीव गोली बारूद भी किया। बरामद हथियारों में 49 ए. के. 47 राइफलें, दो. ए. के. 74 राइफलें, आठ ए. के. 56 राइफलें, तीन जी. पी. एम. जी., आठ एस. एल. आर., छः पिस्तौलें, चार .303 राइफलें, एक एम-16 राइफल, दो राकेट लांचर, एक माउजर पिस्तौल, तीन रिवाल्वर तथा 10 राइफलें शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के चार जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 16 गंभीर रूप से घायल हुए।

जोखिम निधि लाभ

माह नवंबर, 92 में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की जोखिम निधि से मृत्यु के 25 मामलों में कुल 8,75, 0000 रूपए देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रत्येक मामला 10,000 रूपए की केंद्रीय कल्याण निधि तथा सी. बी. एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के पांच मामलों में कुल 75,000 रूपए देने स्वीकृत किए गए।

माह नवंबर, 92 में मृत बल के कार्मिक

माह नवंबर, 92 में बल के निम्न कार्मिकों की मृत्यु हुई। सी. आर. पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सब इंस्पेक्टर (मि.) प्रेमसिंह जाट (38 बटा.), लां. नायक कारज सिंह (109 बटा.), नायक एस. शिवदासन (64 बटा.), कांस्टेबल सुखदेव सिंह (64 बटा.), डिप्टी कमांडेंट कासिम खान (105 आर. ए. एफ.), सब इंस्पेक्टर (मि.), शिव कुमार सिंह (68 बटा.),

सब इंस्पेक्टर जगमाल सिंह (109 बटा.), कां. आर. चिरंजीवी (16 बटा.), कां. मोहन सिंह (120 बटा.), रंगरूट राजेन्द्र सिंह (26 बटा.), कां. वी. वी. रेड्डी (115 बटा.), हैड कांस्टेबल ड्राइवर श्याम सिंह थापा (86 बटा.), रंगरूट मनोज कुमार रजक (124 बटा.), कां. साधु सिंह (10 बटा.), कां. मोहन सिंह (67 बटा.) कां. सुधीर सिंह (एस. पी. जी.), कां. गंगाराम (24 बटा.), कां. अंगोराम (25 बटा.), लां. नायक बहादुर राम (83 बटा.) तथा ड्राइवर कमर अहमद (42 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार अक्टूबर, 92 माह में 123 बटा. के हैड कांस्टेबल मोहिन्दर सिंह की भी मृत्यु हुई।

14 अधिकारियों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह ने बल के 14 अधिकारियों को वर्ष 1992 में उत्कृष्ट कार्यों के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया है। ज्ञातव्य है कि परिचालन, खेल, प्रशासन या अन्य किसी कार्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए महानिदेशक द्वारा संबंधित कार्मिक को यह सम्मान प्रदान किया जाता है। ये सम्मान प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं—

उपनिदेशक (परिचालन) आर. सी. अग्रवाल, उपमहानिरीक्षक (स्पेशल रेंज) डी. के. सूरी, उप महानिरीक्षक (इलाहाबाद) ओ. पी. एस. मलिक, अपर उप महानिरीक्षक (ग्रुप केन्द्र रामपुर) ए. के. कथूरिया, अपर उप महानिरीक्षक (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर) पी. एन. रामकृष्णन, अपर उप महानिरीक्षक (स्पेशल सेक्टर) आई. जे. सिंह, अपर उप महानिरीक्षक (उत्तरी सेक्टर) सुखचरण सिंह, कमांडेंट (3 सिगनल) के. एस. वी. सुब्रह्मण्यम, सहायक निदेशक (केन्द्रीय सेक्टर) एस. सी. शर्मा, कमांडेंट (76 बटा.) जे. एस. बिष्ट, कमांडेंट (48 बटा.), मुख्तियार सिंह, सहायक कमांडेंट (3 सिग.) के. एस. नेगी, सहायक कमांडेंट (88 महिला बटा.) अनीता चड्ढा शर्मा तथा द्वितीय कमान अधिकारी (108 आर. ए. एफ.) वी. वी. सिंह।

मनोरंजन

गायें सब बल का गुणगान

आज चतुर्दिक गूँज रहा है,
केरिपु बल का नाम,
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण
गायें सब बल का गुणगान ।

वीर-बाकूरे, धीर सिपाही,

इस बल को पहचान,
नीला ध्वज नित अम्बर फहरे,
विजयी विश्व महान ।
दिव्य प्रेम है इनके दिल में,
“सेवा-भक्ति” महान,
निर्बल जन का, कातर मन का,
प्रतिपल रखते ध्यान ।
प्रहरी केरिप बल के करते,
जन-जन का कल्याण,
सत्य अहिंसा पथ चलते,
मन में नहीं अभिमान ।
भारत माता के सपूत हैं,
इनका उत्तम नियम महान,
राष्ट्रसुरक्षा के हित लड़ते,
जाये भले ही प्राण ।
रण-वेदी पर मर मिट करके,
करते हैं नित नव निर्माण,
आन के रक्षक, मान के रक्षक
सबका रखते पल-पल ध्यान ।
करें न्यौछावर अपने तन को रखते भारत का अभिमान ।
सौम्य-सभ्यता के प्रतीक,
भारत की ये अनुपम संतान ।
निर्वासित है जीवन इनका,
अतुल शक्ति बल से बलवान,
सुख समृद्धि दिलाते सबको,
प्रहरी “प्रभात” का यही अभियान ।

रचयिता : हंसराज ओझा “प्रभात”
49 बटालियन, केरिपु बल
-55 ए.पी.ओ.

हम हैं के.रि.पु. बल के जवान

हम वीर हैं, यारों के यार हैं
भारत के पहरदार हैं
शान हैं इस देश की
हम के.रि.पु. बल के जवान हैं।
दूर-दराज के इलाकों में
माया, ममता का मोह छोड़कर
दे रहे हैं बलिदान
हम हैं के.रि.पु. बल के जवान ।
दे रहे हैं शांति का पैगाम
हम सब एक हैं, एक हमारी जान
क्या हिन्दू, मुस्लिम, क्या सिक्ख ईसाई
हम सब भाई के.रि.पु. बल के जवान ।
हम चारों धर्मों के जवान
मानवता है हमारा मजहब
संदेश प्यार का देते हैं
हम के.रि.पु. बल के जवान ।

कैलाश पंत
हिन्दी अनुभाग
महानिदेशालय

सूत्र वाक्य

यदि मनुष्य में गुण हों तो वे अपने आप प्रकट हो जाते हैं, क्योंकि कस्तूरी की सुगंधि को शपथ से सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती।

—संकलित

के.रि.पु. बल के जवान

केरिपु बल के वीर जवान,
कभी न खोना अपनी शान,
धूमिल न होवे छवि तुम्हारी,
इसका रखना प्रतिपल ध्यान ।

धरा देश कौ तुझे पुकारे,
आओ हे नयनों के तारे,
नूतन नई दिशा दो जग को,
गाएं सब तेरा जयगान ।

आतंकित भयत्रस्त-जनों से,
भरा देश का कोना-कोना,
करना होगा तुमको अपने,
प्राणों का बलिदान ।

नित कर्मवाद के पथगामी,
अलगाववाद तुम दूर करो,
अलगाववाद के प्रलय-ज्वार को,
भस्म करो, होवे कल्याण ।

जनमानस के भीरू भाव को,
तुम्हीं मिटा सकते हो भ्राता,
देश-द्रोही फिर जन्म ने लेवे,
जारी रखना है अभिमान ।

दृढ़ निश्चय से विजय प्राप्त हो,
यह इतिहास बताता है,
प्रहरी “प्रभात” निज निष्ठाबल को,
सदा चढ़ाना उच्च सोपान ।

हंसराज ओझा
रचयिता : हंसराज ओझा “प्रभात”
49 बटालियन केरिपु बल
55 ए.पी.ओ.



श्री पी.के. दवे, उप राज्यपाल दिल्ली के कर कमलों द्वारा दक्षिणी क्षेत्र, अन्तर क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिता की ट्रॉफी प्राप्त करते हुए



सेवानिवृत्त होने पर श्री सी.एस. द्विवेदी अपर महानिदेशक को भावभीनी विदाई देते हुए
श्री आर.सी. झा महानिरीक्षक (मुख्यालय)